# द्वारका

श्री किसण कथा माला री तीजो मणियौ

प्रकाशक

महावीर प्रसाद जोशी
विवेक प्रकाशन
पो. बा. नं० ११
सादुलपुर-३३१०२३

मुद्रक :
अविनाश प्रिंटर्स, जयपुर

मोल : तीस रिपिया

पैलो फाल : नवम्बर १९८५

# द्वारका

सुरगवासी

परम पूजनीक चाचा जी

श्री नागरमल जी जोसी

( पुण्य तिथि-आषाढ वदी १० सं. १६७६ )

एवं

चाची जी श्री कमला देवी जोसी

( पुण्यतिथि-मगसिर वदी ४ स १६७६ )

री

याद में

## समरपण

माईतां, वाळै-पण घणो सनेह करचौ थे
मो-माया-ममता सूं मन में मोद भरचौ थे
लाड लडाया भांत-भांत सूं थे अणधारचा
पण अचाणचक सुरगापत नै आप सिधारचा
किणी भांतरी आस नहीं थे राखी चित में
पण म्हैं भी क्यूं करणं सकचो न थांरै हित में
अब तांणी भी जद-जद थांरी ओळयूं आवै
हिवड़ो ऊझळतो सो लागै, कंठ भरयावै
पण परेम रै पलटै कुण सो काम करूं म्हैं
समझ न आवै कूण अमोलक भेंट धरूं म्हैं
छेवट आंसूं-री बूंदां सूं कर-कर तरपण
आज 'द्वारका' करू आप रै नांव समरपण

चरणां रो चाकर

## विगत

# भूमिका

भारतीय विद्वानां मिनख रै चारित्रिक विकास रै मानदंड नै "कळा" री संज्ञा दीनी है। जिण मिनख रै चरित्र रो जितणो विकास हुवै, उण नै उतणी ही कळावां रो अवतार मान्यो जावै है। मानदंड री ई कळावां री कुल संख्या सोळा है। भगवान श्रीकृष्ण सोळा कळावां रा पूर्णावतार हा। जद उणां रै सम्पूरण चरित्र रो अध्ययन करयो जावै है तो उणां में इसा अनेक गुण दृष्टिगोचर हुवै, जिणां रो दूजी ठौर कठै भी इसो समन्वित स्वरूप निजर नीं आवै।

श्रीकृष्ण अनेक लौकिक कळावां मांय सिद्धहस्त हा तो साथै ही वै उच्चकोटि रा राजनीतिज्ञ भी हा। वै मोत वडा शास्त्रवेत्ता हुवण साथै महान योगी भी हा। इणी भांत वै असाधारण रूप सूं व्यवस्था-पटु भी हा। शक्ति अर शौर्य मांय तो वै अनुपम ही हा पण उणां रै समस्त जीवण पर ध्यान दियो जावै तो उणां रै सम्पूरण क्रिया-कलाप में लोकहित री भावना ही सर्वोपरि निजर आवै है। वै आप रै जीवण में विविध परिस्थितियां मांय सूं गुजरयां अर नाना प्रकार रा काम सम्पन्न करया पण सगळै उणां री भावना लोकोपकार री ही रैई। वै खुद आप रै खातर कदे क्यूं भी नीं करयो। जो कुछ भी वै करयो, सदा जन-कल्याण रै उद्देश्य सूं ही करयो

संसार मांय उण व्यक्तियां रै गौरव री कोई सीमा नीं है, जिणां रै चरित्र-गान री तो बात ही न्यारी, मात्र नाम-स्मरण ही अपार पुन्न रो हेतु मान्यो जावै है। इसै ही महा मानवां मांय भगवान वासुदेव श्रीकृष्ण है। उणां नै "कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्" रै रूप में याद करया जावै है अर उणां रै जलम-दिवस पर भक्तजन "व्रत" राख र अपार पुन्न रा भागी बणै है।[1]

श्रीकृष्ण प्रजा-पालक भगवान विष्णु रै अवतार-रूप में लोक-

---

(1.) ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, धर्मस्य यशस: श्रिय:
ज्ञान-वैराग्ययोश्चैव, षण्णां भग इतीरणा

पूजित है। अवतारवाद रो सिद्धान्त भारतीय चिन्तन रो एक महत्त्वपूर्ण अंग है।[2] जद परजा पीड़ित हुवै अर जन-समाज मांय अव्यवस्था फैलै तो भगवान अवतरित हुयर दुष्टां रो दमन अथवा विनाश करै अर लोक में सुरक्षा, शान्ति तथा सम्पन्नता रो वातावरण बणावै।

इणी स्थिति नैं "धर्म-संस्थापना" कैई गई है। धर्म-संस्थापना मांय दुष्टां रो विनाश तथा सज्जनां री सुरक्षा अर शान्ति आदि सगळी विकासोन्मुखी प्रवृत्तियां शामिल है।

श्रीकृष्णावतार रै बखत भारत री भोत बुरी हालत ही। समस्त प्रजा अभिमानी, उत्पीड़क अर स्वत्वापहारी शासकां सूं संत्रस्त ही। प्रजा रो आर्तनाद सुणवा-वाळो कोई भी मिनख नीं हो। इसी विकट परिस्थिति मांय भगवान श्रीकृष्ण रो भारत-भूमि पर अवतरण हुयो अर भगवान एक-एक कर कंस, जरासन्ध, शिशुपाल, भौम तथा दुर्योधन आदि प्रजा-पीड़क शासकां नैं समाप्त करया अर जनता में सुरक्षा तथा शान्ति रो नयो जुग परगट करयो। भारतीय इतिहास मांय आ राजनैतिक क्रांति भगवान श्रीकृष्ण री अपूर्व अर अनुपम देन है, जिण रै कारण उणां रो मात्र नाम-स्मरण ही पुन्न अर प्रेरणा रो स्रोत बण्यो।

भारत मांय स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत अर काव्य सम्बन्धी कळावां री जितणी घणी सामग्री श्रीकृष्ण रै बाबत बणी, उतणी शायद किणी दूजै व्यक्ति रै बाबत नीं बणी। श्रीकृष्ण संबन्धी साहित्य सामग्री रो तो लेखो-जोखो हुवणो भी संभव कोनी। उणां रै प्रवचन (गीता) रो तो मात्र भारतीय भाषावां मांय ही नीं, संसार भर री प्राय: सगळी ही प्रमुख भाषावां मांय अनुवाद हुय चुक्यो है। भारतीय विद्वान तो "श्रीमद् भगवद्गीता" रा आप-आप रै चिन्तन रै अनुसार न्यारा-न्यारा भाष्य लिख र गौरवान्वित हुया है अर ओ क्रम आज भी चालू है।

---

(2.) यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य,तदात्मानं सृजाम्यहम्

श्रीकृष्ण-साहित्य रै नये निर्माण री प्रक्रिया भी चालू है। अर सगळी ही भारतीय भाषावां मांय आ रस-धारा प्रवाहित हुय रैई है।

राजस्थान रा कवि-कोविद भी श्रीकृष्ण सबन्धी साहित्य रै निर्माण मांय सदा सूं संलग्न रैया है। राजस्थानी रा अनेक कवि कृष्ण काव्य री रचना सूं आपरी मातृभाषा रै साहित्य नै समृद्ध करयो है। पण ध्यान राखणो चाहिजै कै पूर्व-कालिक राजस्थानी कवियां नै श्रीकृष्ण रो "रुक्मिणी-उद्धारक" रूप जितणो आकर्षित करयो, उतणो "गोपीवल्लभ" रूप नीं कर सक्यो। आ प्रवृत्ति राजस्थान रै सुभाव अर रुचि रै अनुकूल है। अठै रुक्मिणी-मंगळ पर आधारित अनेक काव्य रच्या गया है अर वै घणां लोकप्रिय तथा चर्चित भी रैया है। ईं विषय मांय "वेलिक्रिसण रुकमणी री" (पृथ्वीराज राठोड़), "रुकमणी हरण" (सांयोझूलो) तथा "बिवाहलो" (पदम भगत) आदि रा नांव उल्लेख जोग है। इणांरै अलावा श्रीकृष्ण-चरित रै दूजै शौर्य-पूर्ण प्रसंगां पर भी राजस्थानी कवियां रो ध्यान कम नीं रैयो है। अर ईं दिशा में "नाग-दमण" (सांयो झूलो) तथा "गोवर्धन लीला" (कृपा-राम) आदि रा नांव उदाहरण सरूप सहजां ही लिया जा सकै है।

वर्तमान में कवि श्रीमहावीर प्रसाद जोशी श्री कृष्ण काव्य रै निर्माण रो काम एक "साहित्यिक-यज्ञ" रै रूप में आयोजित कर राख्यो है। आप सम्पूरण कृष्ण-चरित्र नै आप रै काव्य रो विषय निर्धारित कर एक अनूठो अनुष्ठान चालू करयो है। प्रस्तुत महाकाव्य "द्वारका" सूं पैलां ईं विषय पर आपरा दूजा दो महाकाव्य "बिंद्रावन"[3] अर "मथरा" प्रकाशित हुय चुक्या है अर उणां नै खासा लोकप्रियता मिली है। "द्वारका" महाकाव्य सूं आगै री कथावस्तु पर भी आप रै काव्य-निर्माण रो काम चालू है, आ घणै आणंद री बात है।

श्री महावीर प्रसाद जोशी राजस्थान रा मानीता वैद्य अर

(3.) "बिंद्रावन" महाकाव्य पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार सूं सम्मानित हुयो है, "मथरा" भी राजस्थान रत्नाकर दिल्ली सूं पुरस्कृत हुई है। आ गौरव री बात है।

बहुश्रुत विद्वान हैं। आप कवि प्रतिभा सूं सम्पन्न उच्चकोटि रा साहित्य-साधक है अर संस्कृत, हिन्दी, तथा राजस्थानी तीनूं भाषावां मांय घणै बरसां सूं सतत लिख रैया है। आपरी ई तपस्या रो सुफळ साहित्य जगत में अनेक रूपा में सुलभ हुयो है। मातृ भाषा राजस्थानी नै आप विशेष रूप सूं गौरवान्वित करी है, ई खातर आप अभिनंदनीय हैं।

"विंद्राबन" अर "मथरा" महाकाव्यां रै समान प्रस्तुत महाकाव्य 'द्वारका' रै प्रत्येक सर्ग रो प्रारंभ भी प्राय: प्रकृति-चित्रण सूं हुयो है। औ कवि-प्रतिभा रो घणो सुहावणो प्रकार है। ई दिसा में कवि प्रकृति रा सौम्य तथा कठोर दोनूं ही रूप परगट करया है। पैलां प्रकृति रै कठोर रूप रो चित्रण देखो–

ऊनाळै री करड़ी रुत में, बाळू जाणो बाळै
लूवां रा लपकां मिस जाणी, आभो आग उछाळै
तावड़िया रो धणी, धरा में, आय र लाय लगावै
बूंद-बूंद पाणी रै सारू, सगळां नै तरसावै
जीव-जंत जंगल रा जळ बिन भटभेड़ा सा मारै
फिरै हांडता च्यारूं-कांनी, मिरग तीस रै लारै
धरती तपै, तपै अम्बर भी, तप-तप सिलगण लाग्या
घर-दुवार, गोखा-आंगण तज, लोग बारणै भाग्या

सातवों सरग मणी री हेर, पृ० ५७

इणी क्रम मांय आगै प्रकृति रो सौम्य सरूप भी देखो-

बाग-बगीचां, बीच चमेली-कळियां झूलै
बन में हरसिंगार री डाळी-डाळी फूलै
मैंकै फुलवाड़्या रै मांय रात री राणी
तारां री झिलमिल सूं रातां घणी सुहांणी
निरमळ नभ रै मांय चनरमा दूणो दीपै
रात च्यानणी सगलां रै इमरत सो लीपै
सोरम भरी माळ सीळी मधरी सी चालै
हरी-भरी पत्यां भी होळै-होळै हालै

आठवों सरग सतभांमा रो ब्यावपृ० ६६

"द्वारका" री एक बड़ी विशेषता लौकिक अर अलौकिक तत्वां रो सम्मेलन है। आ खूबी सम्पूरण महाकाव्य मांय आदि सूं अंत तांई आपरी छटा दिखाय रैई है। पैलां लौकिक चित्रण री एक बानगी देखो, जिण मांय श्रीकृष्ण रै ब्याव रो प्रसंग वर्णित है।

मन-मोवन मोवणी सोवणी छिब जद धारी
निछरावळ सैं करी, मोकळी म्होरां वारी
मां प्रणाम करता नै, आंचळ धार दिखाई
सदा दूध-मरजादा पाळण री समझाई

चोथो सरग, ब्यांव, पृ० ३२

इणी क्रम मांय भगवान रो एक अलौकिक सरूप भी देखो

आप सरव समरथ हो, सो क्यूं करण सको हो
कीं नै भी क्यूं देण सको हो, हरण सको हो
थे छिण मांय जगत नै सिरजो, पालो, मारो
थांरै सांमीं बाणासुर के चीज बिचारो

सोलवों सरग, ऊसा-अनिरूद्ध पृ० १४६

सोधी अर सुबोध भाषा-शैली ई काव्य नै आदि सूं अंत तांई प्रसाद-गुण-सम्पन्न बणाय राख्यो है। अलंकारां री ऊपरी सजावट करणै री भी कोई चेष्टा कवि नीं करी है। भासा री सानुप्रासिकता स्वाभाविकता साथै परगट हुई है। आ चीज ऊपर दियोड़ै उद्धरणां मांय सहजां ही देखी जा सकै है।

अंत मैं इतरो कैवणो ही पर्याप्त लागै कै जिण भांत आ काव्य कृति साहित्य रसिकां सारू रंजक है। उणी भांत भक्त-जनां खातर भी परम उपयोगी है। आशा है, कवि री दूजी रचनावां रै समान ई कृति रो भी स्वागत अर सनमांन हुसी

महावीर कविवर करयो, कृष्ण-काव्य विस्तार
मरुवाणी में भागवत-रस रो नव-संचार

हिन्दी विश्वभारती, बीकानेर — मनोहर शर्मा
दिनांक २१ जुलाई, १९८५ — सम्पादक-"विश्वंभरा"

## दो सबद

द्वापर में श्रीक्रिसण पुरण अवतार धर्‌यौ हो
दुष्टां सूं डरती धरती रो भार हर्‌यौ हो
समरथ हा गोबिंद वीर, रणनीति-निपुण हा
बुद्धिमांन, बलवांन, साहसी, अतुलित-गुण हा

पण सत्ता रो मोह नहीं हो वांरै मन में
नहीं कदै आसकती उपजी उण रैं धन में
दुष्ट नृपां नै मार राज भो जीत्या बोळा
पण सासन में कदै कठं न मचाया रोळा

उण रैं मोबी बेटां नै श्री राज दिवायौ
पण पिरजा नै पाळण रो भी पाठ पढायौ
दुनी द्वारका-नाथ क'यौ, वै राज न कीन्यौ
उग्रसेन जी नै श्री सदा समरथन दीन्यौ

यूं दुवारका री पिरजा परेम सूं पाळी
च्यारूं-कांनी सूं श्री वीरी करी रुखाळी
पण वै अधिकारां री इंछया धरी न चित में
सेवा नित निष्काम करी जनता रैं हित में

कदै बिघन-बाधा आयी तो आगै लाध्या
परम पराक्रम साथ कांम सगळा श्री साध्या
बडै विपुल-वैभव में वै अनुरक्त न होया
घणी राणियां राख'र भी आसक्त न होया

जळ में कंवळ-समांन सदावै र'यां जगत में
गाळ, कळंक'र निंदा, अपजस स'या वखत में
जस, कीरति सुण कर भी वै न कदै हरखाया
चोरी, हत्या रै कळंक सूं नीं कुमळाया

अतुलित वैभव सूं न कदै मन में मद आयो
नहीं किणी पर सुपनै में भी द्वेष दिखायो
जुद्ध-भोम में भी नीं कदै किरोध करयो वै
उचित बात पर वैरी रो न विरोध करयो वै

दुष्टां नै भी दंड देवतां दया दिखायी
सरणागत अपराधी नै भी छिमां दिवायी
पतितां रो अबलां रो भी उद्धार करयो वै
दीन, दलित, दुवळां रो बेड़ो पार करयो वै

उण केसव रा नांकुछ जण गुण गाणो चावै
नभ नांपण नै मांछर जियां पंख फैलावै
बाळो जियां चांद पकड़ण नै हाथ बढावै
समद रितावण टींटौड़ी जळ चूंच भरावै

मातर है अवलंब एक श्रीक्रिसण कृपा रो
कठ पुतळी नै नांचण में तागै रो सा'रो
इण रै बळ पर आपूं-आप लेखनी चालै
जियां पूंन रै बळ पीपळ री पत्ती हालै

जोबन रै बळ फूड़ नार आपै फुटरावै
बिरखा-बळ कालर धरती हरियाळी पावै
है श्रीक्रिसण-चरित अथाह, ऊंडो रतनाकर
रतन ढूंढ पावैं ग्यांनी जण गोता खाकर

ह्यां सिरसी अणगांण न तळ में पैठण पावै
तट पर बैठ संख-सीपी भेळी कर ल्यावै
पैली रा मणिया श्रीक्रिसण-कथा-माळा रा
'विंद्रावन' अर 'मथरा' नांमी न्यारा-न्यारा

घणै हरख सनमांन आप री निजर करयाहा
आगै भी दो त्यार करण रा वचण भरयाहा
करी बाल-लीला दामोदर विंद्रावन में
एक अणूंतो भाव भरयो गोप्यां रै मन में

मथरा में किसोर-पण रा सै चरित दिखाया
अनायास रण सूं भाज'र रण-छोड़ कुवाया
पुरी द्वारका सुंदर घणी सरूप वणाई
जठै आप सगळी ऐश्वर्य-विभूति दिखाई

आज 'द्वारका' तीजो मणियो भेट करूं हूं
राजस्थांनी रसिक कसोटी मांय धरूं हूं
थे इण नै चुचकारो चाये ठोकर मारो
थांरै बिना नहीं है पण इण रो निसतारो

किरपा घणीं मनोहर शर्मा डाक्टर कींनी
तुरत 'द्वारका' तणी भूमिका लिख कर दीनी
डाक्टर शर्मा जी रो हूं किरतग्य घणो म्हैं
नहीं उतार सकूं बदळो इण हेत तणो म्हैं

॥ श्री ॥

## द्वारका

तावड़िया सूं तपी द्वारका री धरती उकळायी
नूवां रा लपकां सूं सूकी सगळी श्री वणरायी
नितकी श्रो घनस्यांम सलूणां रो वा बाट उडीकै
ताल-तळायां सूकी, पाणी गयो पताळां नीकै

लता - बेलड़ी, फूल - पानड़ा सगळा श्री कुमळाया
बडा बडा बिरछां रा पत्ता पीळा पड़ अळसाया
पलटण लागी प्रकृति पुराणी धरती ली अंगड़ायी
परवा पूंन चली मस्तांनी हथणी सी भरमायी

बोलण लाग्या मोर, पपैया "पीव" पुकारण लाग्या
चातकियां रा बाळकिया भी धीरज धारण लाग्या
सूका - सूका रूंखां रा भी रूंगटिया करणाया
मीठै सुरां भींभरी बोली भंवरा भी भरणाया

धरती रौ संताप मिटचौ अब रुत बिरखा री आयी
आस - उमंग, हरख - चावां रौ नुंवौ सनेसौ ल्यायी
स्यांम - सुनरसा सरस सांवळा बादळ आभै छाया
तीस मिटावण नै पिरथी री नीर मोकळौ ल्याया

पीतांबर ज्यूं बिच-बिच बीजळ पळ-पळ पळका मारै
बगलां री पंगत बैजती माळा री छिब धारै
घनस्यांम रै लैरां - लैरां आयी बिरखा रांणी
पूंन हिंडोळै बैठी हीडै होळै - होळै जांणी

पीन पयोधर तणै भार सूं झुक-झुक झोटा खावै
चपळा रै मिस कंठहार रै हीरां नैं चिमकावै
काळी-काळी घटा मुहाणी ज्यूं चोटी लटकावै
वाळ-वाळ पोयोड़ा मोती ओगणियै बिखरावै

आभै री लाली सूं जांणी माथै मांग भरावै
निछरावळ में तीजा रै मिस माणक प्रकृति लुटावै
मोर – पपैया मीठा-मीठा बोल बधावा गावै
मधरी – मधरी गरजै आभो मगळ-धुनी बजावै

लता-वेलड़यां फूल-फूल कर हरख घणो दरसावै
मीठी कूक लगा कोयलडी स्वागत-गान सुणावै
बिरछ हलाकर पांन पताका - धजा मतै फररावै
मीठी – मीठी बोल भीभरी बाजा भोत बजावै

मोटी-मोटी छाटा जांणी मोतीडा सा बरसै
धरती हरी-भरी मी होय'र दूणी-दूणी सरसै
सगळा पंख फलाय मौरियो घणै चाव सूं नांचै
ताळ-तळायां बीच मीडका सिया-राखडी बाचै

मंदी-मदी सीळी-सीळी भाळ भलेरी लागै
मांटी री मैं'कार मतै ओ हो री वीरै सागै
नंदी-नाळा निसकी पाणी सूं ऊझळता लागै
पण समदरियौ नहीं कदै भी मरजादा नै त्यागै

घनस्याम रै साथ साथ ओ घनस्याम जद आया
तो दुवारका गळी-गळी में सूंणां साज सजाया
मारग चौरावा सगळा ओ धो-धो साफ कराया
च्यारूं ओ कांनी गुलाब-जळ अतर भी छिड़काया

कोट-कांगरा, म्हैल-माळिया भोत सुरंग बणाया
धजा-पताका, तोरण सगळै बारणियां लटकाया
मोत्यां री झालर, हीरां री बंनरवाळ लगायी
भींतां पर चितरामां चोखी च्यारू-मेर मंडायी

मोड़-मोड़ पर चोकचोक में असमांना तणवाया
च्यारू-कांनी च्यार बारणां पिचरंगा बणवाया
हरचा-हरचा केळा रा मोटा-मोटा थांम लगाया
पुसप, दूब, नारेळ मेल कर मंगळ-कळस सजाया

रंग – बिरंगै फुलड़ां रै हारां सू सोरम छूटै
चंनण केसर किसतूरी अंबर रौ डंबर फूटै
अतर तेल फुलेल लगाय'र मजा लोगड़ा लूटै
अगर धूप री मैं'कारां री मरजादा नी टूटै

कूणै-कूणै खड़ी कामण्यां मंगळ-गीत सुणावै
ऊंचै आसण बैठ्या पिंडत पाठ बेद रा गावै
जगा-जगां पर स्याम-मुनर रौ करै सुवागत सारा
दो – दो बातां करणी चावै सगळा न्यारा-न्यारा

जद बळराम क्रिसण ने देख्यौ भाज'र गळै लगायौ
भोत ओळमो दीन्यौ "भाया, घणा दिनां सूं आयौ"
समंचार सगळा ई दोनूं पूछ्या और बताया
काळयवन री बातां सुणकर मुळक्या अर मुळकाया

उगरसेन, बसदेव, देवकी नै परणामां कीनी
वै भी मस्तक सूंघ-सूंघ कर घणी असीसां दीनी
भोत दिनां सूं देख लाल नै मां री जी उमड़ायो
वडै लाड सूं वठा गोद में हिवड़ै मांय लगायौ

सिरीक्रिसण मथरा री सगळी चरचा मर्तै सुणायी
मां भी हंसकर बलदेवा रै ब्या'री वात वतायी
"लाला, थानै घणां उडीक्या पण थे आया कोनी
समंचार थांरै आवण रा क्यूं भी पाया कोनी

रेवत-पुत्र ककुद्मी नृप आनरत देस रा आया
लाडकवर रेवती वायली नैं भी साथै ल्याया
बलदेवा नै देख-भाळ कर वड़ी विनै सूं वोल्या
बेटी रौ वर नी पावण रा भेद मोकळा खोल्या

"विरमाजी आदेश दियौ है पुरी द्वारका जावौ
बठै वीर बलदेवा सूं बाई रौ व्याव रचावौ
वी रै सिवा न कोई जग में बाई रौ वर दूजौ
मगळा जतन छोड थे जादू कुळ रा अी पग पूजौ

अीं सारू ई म्है आयौ हूं म्हांरी लिज्या राखौ
झट देणी सी व्याव रचावौ "नाही" कदै न भाखौ"
म्है जद क'यो "व्याव-सादी में जलदी काम न आवै
भला हथेळी में अी सिरस्यूं कोयी कियां उगावै"

हाथ जोड़ बोल्या वै फेरूं "म्हारौ कारज साधौ
सध्या-सधाया कामां में मत गेरौ क्यूं भी बांधौ"
बां नैं खातां देख ल्हेलरी सैं रौ मन भरमायौ
थां रै आयां विना अठै भाई रौ व्याव रचायौ

पीळा हाथ करया बेटी रा राजाजी तो भाग्या
बदरी-नारायण आस्रम में जा तप करणैं लाग्या
सिरी-क्रिसण सुण सगळी बातां भाई कांनी मुळक्या
मिला नैण सूं नैण क दोनूं बीर बठै सूं टुळक्या

एकांत रै बैठ भाभ्री नै यूं बळराम बतायी
"उरण वेलां तो म्हारै स्यांमी बडी समस्या श्रायी
वेगो व्याव करण मारू श्री जणां रेवती श्रड़गी
मां वापां रै श्रागै श्री म्हारै चरणां में पड़गी

क्'यो "रामजी, थां विन जग में कोश्री मेरो कोनी
कद सूं थांसूं विछड़चोड़ी हूं क्यूं भी बेरो कोनी
मतै जुगां-जुग बीत्या श्रापै जलमां-जलम गंवाया
तुणका बणी कदै जद लोगां लातां-तळै दवाया

लकड़ी बण बळती श्रगनी में, कीड़ी बण कर लड़ती
कदेक मछळी बण समदर री झालां में जा पड़ती
ढांढा-ढोर बणी लोगां री कदेक डांगां खाती
पंछी बणती जद गुलेल री कांकर सूं मर ज्याती

कदै सुरग में जाती तो म्है भोगां में फंस ज्याती
नाथ, नहीं तो पड़ी नरक में कस्ट मोकळा पाती
श्रातुर होय'र नो जाणै कुण कुण री हाहा खाती
-कुण कुण नै पुकारती रात्यूं मन श्री मन पिसताती

पण भूली-चूकी भी थांनै कदै न हेलो मारचो
कदै न सुमरचो नांव श्रापरो रूप न मन मे धारचो
नारी बणंकर जणा जणा री बणी भोग री पातर
नर बण कर भी जिनगांनी भर करी खुसामद,-खातर

कदै न सांचा मन सूं थां रै चरणा सांमी श्रायी
दीन-भाव सूं कदै दुवारै नहीं पुकार लगायी
तपता लौ'नै इमरत जाण'र म्है पीवण नै भागी
वी सूं बळती म्है गळतै सोना रै लैरां लागी

कूद पड़ी खारै समदर में वारै मांय उवळती
र'यी भाजती च्यारू'-कानी फेरू' वळती-वळती
पण न एक वर भी म्हैं थांनै कदेक छिन भर सुमरयौ
मनै विगडती गयी जमारौ नही जरा भी सुधरयौ

म्है तो भूली थांनै पण थे म्हनै नही विसरायी
हिवडै में बैठ्या बैठ्या श्रो ग्रिसी मती उपजायी
मन मे सांची स्यांति मिलै जद म्है सगळा सुख पावूं
सरव लावण्या मिटै जगत री वो मारग ग्रपणावूं

म्है वावळती जांण न पायी कुण ग्रा वात सुझायी
की कारण सूं मन में सांचा सुख री इंछ्या ग्रायी
म्है भोळी ग्रणजांणी मूरख ऊंळै गैलै भागी
विसयां रै भोगां में सांचै सुख नै ढूंढण लागी

मनै चालती र'यी वरोवर म्है तो कठै न ग्रटकी
मारवाड रै टीवां जांणी पांणी सारू भटकी
सूकी मुरधर री गोदी में कंवळ कदै जे खिलतौ
तो संसारी भोगां मे भी सुख कोयी नै मिलतौ

घणां दिनां हांडण सूं ग्रव ग्रा वात समझ मे ग्रावै
थांरै चरणां सिवा कठै भी कोयी सुख नीं पावै
ग्रव छेवट म्है थारै चरणां री सरणा मे ग्रायी
लाल-लाल कूंळा-कूंळा पगल्यां री छिव मन भायी

म्हारै वळतां काळजिया पर एक'र चरण लगावौ
म्हां रै सिलगतै हिवडै री सगळी वळत मिटावौ'
यूं कैंता कैंतांज रेवती झर-झर रोवण लागी
ग्रासूंडां री धारा सूं श्री पगल्या धोवण लागी

मांजी जद उठकर वेगा सा वी नै गळै लगायौ
वातां ई वातां में करदी ब्या'री तुरत पकायी"
सिरीत्रिसण बोल्या यूं सुणकर "दाऊ, थे समरथ हो
जो भी थे अपणायौ वो श्री सांचौ ऊंचौ पथ हो"

इतणैं में श्री बठै रेवती भी मुळकंती आयी
"अरे लालजी थे कद आया" बोल पडी भोजायी
अधरां मीठी मुळक अणूंती नैणां माय लुणायी
मुखड़ै पर उतरयायी जांणी ऊमा री अरुणायी

होळी री झळरी ज्यूं उजळी कूंळी कंवळ कळी सी
बाळापण री भोळी सूरत सांचै वीच ढळी सी
एक उजाळै री आभा सी च्यारूं - कांनी छायी
आंख्यां में दिढ़ इंछ्या सकती री परतीती पायी

सहज सरल सालीन भाव नै मधरी चाल बतावै
सरद च्यांनणी सो आकरसण सगळां पर फैलावै
सिरीक्रिसण जद देख'र वारै पांवां पडणैं लाग्या
हाथूं-हाथ उठाय'र बोली-"भाग म्हारला जाग्या

लाला, लाडलड़ी ल्यावण में अब नी होय ढिलायी
भोळै देवर रै मन री तो जांण सकै भोजायी"
सिरीक्रिसण पर भी वांरौ परभाव मोकळौ छायौ
एक अणूंतौ ओज ओर अपणेस सांमने आयौ

तेज-पुंज पिघळाय विधाता ज्यूं सांचै ढळवायौ
इमरत रौ मिठास गंगारौ पावन भाव मिलायौ
मुळक-मुळक बोल्या-"भाभी, अब थे कर दीनी बूंणी
लाडलड़ांरी गिणती होती रै'सी दिन-दिन दूंणी

इतरां में वेगा वेगा डंग भरता ऊधौ आया
सिरीक्रिसण झट आगै आय'र वां नै कंठ लगाया
घणां दिनां सू बिछड़योड़ा हा बौळी बातां कीनी
मतै एक दूजा अणजांणी सकळ सूचना दीनी

अब तीनूं श्री चाल पड्या यै समदरिया रै घाटा
जठै नित्त बळराम सिखावै गदा-जुद्ध रा आटा
जादू जोधा बठै होय रचा हा सगळा श्री भेळा
घणी खुसी सूं उठ उठ कीन्या सिरीक्रिसण सूं मेळा

चैकितांन युयुधांन सात्यकी भाज्या-भाज्या आया
सिरीक्रिसण भी वडै चाव सूं वानै गळै लगाया
कोयी बठै धनस वांणा री अभ्यास करै हा
कोयी तरवारयां रै चिलकां सूं परकास करै हा

होय रथां री दोड़ कठै, हाथी भी कठै लड़ै हा
राजहंस सा उजळा घोड़ा आपै कठै अड़ै हा
कठै करै व्यायाम मोकळा कुस्ती कठै लड़ै हा
कोयी पट्टा खैलै, कोयी बातां में झगड़ै हा

मुरपत सा जादू जवांन यूं न्यारू-मेर फिरै हा
समदरियां मे कूद कूद कर खैलै ओर तिरै हा
सगळी नगरी हरख-हुलास, विनोद-विलास भरी ही
हीरा-मोती-माणक सूं जगमग जगमग कर री ही

नी कोयी निबळो दीखै हो नी कोयी हो रोगी
कठै उदास न लागै कोयी, कोयी दुखी न सोगी
संझ्यारी किरणां पाणी में अठखेळी सी खेलै
सोना री भन्डार अणूंतो समदरियां में मेल्है

च्यारूंकांनी अेक अनोखी सुसमा भरी पड़ी ही
जियां नगर-लिछमी सोळू सिणगारां सजी खड़ी ही
सिरीक्रिसण आ सोभा देख'र मन ई मन हरसाया
पुरी द्वारका नै अजेय यूं जांण घणां सुख पाया

## दूजो सरग

## सनेसौ रुकमण री

एक दिवस परभात-काल जद आयी आभै लाली
तारां री पंगत फीकी हो मतै छिपणनै चाली
सूरज री सरजीवण किरण अगूणै उगणै लागी
जीया-जूंण जगत री जाग'र आपै उठ-उठ भागी

समदरियै री पाळ लुगायां न्हाती हरजस गावै
पिंडत मिल ऊंचै सुर सूं बेदां री धुनी सुणावै
लोगां-भरया देवरा-मिंदर घणां अणूंता साजै
संख, घंट, घड़ियाल, मजीरा, झांझ, नगारा बाजै

सिरीक्रिसण भी वेळयां उठकर नित्त-करम निपटाया
चोटी-दार चूंटियौ चाट'र भवन माय जद आया
द्वारपाल तद एक बिरामण बूढा सा नै ल्याया
हाथ जोड बोल्या-"पिंडत जी कुंडिनपुर सूं आया"

ऊंचौ सो लिलाड़ हो वांरो नैणा ओज भरया हा
रंग ऊजळौ गोरौ, वस्तर रेसम रा पहरया हा
दूधां-धोळा दांत, नाक तीखी, हंसतौ मुख-मंडळ
ओजस्वी मुद्रा सूं आपै तेज बरस रयौ निरमळ

सिरीक्रिसण परणांम करी झट घणैं मांन-आदर सूं
हाथां धोय'र पगल्या पूंछया कांधै री चादर सूं
मळ-मळ कर असनांन कराया ऊंचासा बैठाया
मन-चाया छत्तीसूं बिंजन भोजन मांय जिमाया

सोनेरे पिलंग पोढ़ाय'र पगल्या चांपण लाग्या
साथ-साथ श्री मीठै सुर सूं यूं बतळावण लाग्या
"पिंडत जी, थे राजी तो हो दुवधा तो नी मन में
क्यूं बाधा तो कोनी आयी धरम-करम-साधन में

वडकांरी मरजादा पाळण मांय कमी तो कोनी
असंतोस री आग कदै मन मांय उठी तो कोनी
जीवन में क्यूं बीज असंयम रो तो बोयो कोनी
जथा-लाभ संतोस भाव नै मन सूं खोयो कोनी

कोयी बड़ो मनोरथ तो अब मन मे आयो कोनी
पूरण नहीं होण सूं चित में छोभ वढायो कोनी"
सांत चित्त सूं क'यो विरामण-"मन मे लोभ नहीं है
मनस्या पूरण नही होण रो भी चित छोभ नही है

होय विरामण विरती में सतोस बडो श्री धन है
जे संतोस नही होवै तो विरथ होय जीवन है
संतोसी तो लोभ-लालसा छोड सरव सुख पावै
असंतोस में इंदर पद मिलियां भी स्यांति न आवै

यूं संतोस एक मातर श्री सुख रो कारण होवै
श्री रै विना नही कोयी भी मन री चिन्ता खोवै
करै धरम री रिछ्या जो, हो वांरो [illegible] रुखाळी
सांचै मारग नै पावै है धरम [illegible] ह्वाळो
जो न परायी आसा [illegible] [illegible] सुख सूं खावै
दीन-हीन दुबळा लोगां [illegible] [illegible] दया दिखावै
छोटां नै सनेह सूं [illegible] [illegible] सूग न [illegible]
वां मानुसां नै [illegible] [illegible] सगळा [illegible] [illegible]

मिरोकिसन भी घणै मांन सूं फेरूं कैवण लाग्या
"देव, आपरा दरसण पाय'र भाग हमीणा जाग्या
के सेवा म्हे करूं आपरी मनरा भाव बतावौ
किणी वात रौ थे क्यूं भी संकोच न मन में ल्यावौ"

पिंडत जी भी राजी मन सूं बैठया होय'र बोल्या
जाणी हिवडै रै दुवार रा सगळा ताळा खोल्या
"थे ब्रह्मण्य-देव हो मांचा घणौ सुवागत कीन्यौ
सहज अंकिचन ब्रामण नै जो इतणौ आदर दीन्यौ

थारी सरधा देख'र म्हारै मन मे मौद न मावै
पण न कामना कोयी इसडी, जी पर मन ललचावै
बिदरभ देश माय कुंडिनपुर सुंदर एक नगर है
भूपत भीष्मक रै सासन में कर रयौ जगर-मगर है

राजा रै परतापां सूं है बाधा नही धरम में
असतोस भी नही जरा जो पीडा करै मरम में"
मिरीकिसण ओजूं बतळाया-"मन रौ भेद बतावौ
अब दुवारका में आवण रौ कारण भी समझावौ"

तद पिंडतजी कहयौ - "रावळै रौ भेज्यौ म्है आयौ
बाईजी रौ अेक सनेसौ थारै सारू ल्यायौ
राजा भीष्मक री बेटी है नाव रुकमणी बायी
चान चोर कर जांणी बी नै बेमाता'र बणायी

नख-सिख सूं सरवग-सोवणी सुंदर सुघड सलूंणी
चंद्र-कळा-सी वधै चोगणी रातां, दिन-दिन दूंणी
पांच वीर बीरां री है वा घणी लाडली बायी
मोत्यां बिचली लाल सोवणी सगळां रै मन भायी

मात-पिता, राजा-राणी नै वा पिराण सूं प्यारी
सुगणी, सरव सुलखणी किन्या केसर री सी क्यारी
वठै अेक दिन फिरता-घिरता नारदजी जद आया
सुता साथ परणांम करी नृप ऊंचै स्थांन बठाया

घणै मांन सूं पूजा कर बेटी रो हाथ दिखायो
नारदजी भी देख भाळ कर ओ समचार सुणायो
"बेटी थांरी घणी सुलखणी सोळां कळां-उजागर
साकसात लिछमीजी आया जांणी सांग वणाकर

गुण-धरमां रै वरणन में तो समरथ कोनी सारद
क्रिसण सिवा कोयी न वर सकै क'वै सांचली नारद"
नारदजी तो यूं सिलगाय'र वींओ समै पधारचा
पण वाओ सा वीं दिन सूं ओ नेम बरत अै धारचा

"जे वरस्यूं तो सिरीक्रिसण नै नीतर र'वूं कुंवारी
सोगन खाय'र कवूं जलम ओ क्रिसण नांव पर हारी"
राजाजी तो राजी होया छिन में बात बिचारी
थांरै साथ ब्याव करणै री सांची मन में धारी

पण ओ सगळी वात बिगाड़ी राजकंवर रुकमैयो
रुकमण वाओ री नखराळो सागे वडगर भैयो
वोल्यो-"ओ गुवाळियै नै म्है अपणी भाण न ब्यावूं
म्है तो कोयी राजमुकट धारणियै वर नै चावूं

वैर-ब्याव जग मांय बराबरिया रै साथै साजै
होणै माणस नै अपणायां नांव वडां रो लाजै
के राजां री राण्यां अब बेटा जांमै ओ कोनी
के बाओ सा कोयी जोधां नै ग्यांमै ओ कोनी

चेदि देश रो राजकंवर सिसपाल घणो श्री चोखो
जरासंध भी सूं प्यां जीनै सगळो लेखो-जोखो"
राजाजी दबकर मांदो बेटा री बातां मांनी
सिसपालै रै साथ सुता री व्याव करण री ठांनी

पण रुकमण बाग्री तो सुणकर भाग्री री आ बांणी
रात-दिनां रयूं तड़फण लागी ज्यूं मछली विन पांणी
चैन नहीं दिन-रैन पड़ी है मत्तै मांड्यो मरणो
जद दूजी उपाव नी दीसी लियो आपरो सरणो

आपणै हाथां सूं लिखकर श्रो कागद म्हनै थमायो
श्रोर सनेसो देती-विरियां बोल न मूंडै आयो"
यूं कैंता पिंडतजी पाती सिरीकिसण नै दीनी
सिरीकिसण भी हाथ वढाय'र वडै चाव सूं लीनी

उतावळा सा पाती खोल'र मन में बांचण लाग्या
श्रांसूड़ां सूं भुजण्या आखर धीरै जांचण लाग्या
"स्यामसुनर, नारद जी सूं थांरो गुण-गाथा सुणकर
तिरपत करदी काया कांनां ये इमरत सो घुळकर

जिण री निजरां में थांरी मनमोवन मूरत श्रावै
उण वडभागयां रै पुण री कुण वरोवरी कर पावै
जग मे कुण कुळवती किन्या नी चोखौ वर चावै
पण तिरलोकी मे था सिरमौ दूजौ कठै न पावै

श्री सूं लिज्या छोड आय आपड़ी आपरै चरणां
दूजौ नी श्रवलंब मिल्यौ जद आयी थांरी सरणां
किसण, आप तो काया नैं भीतर सूं भीच रया हौ
हिवड़ै नैं, पिराण न, मन नै आपै खींच रया हौ

बिन मांगे श्री सूंप दियो है म्है तो थांनै सरबस
फेरूं भी बढतो जावै थांरो आकरसण वरबस
पण म्है नी आणं में समरथ, जी सूं आप पधारो
बेड़ो डूब र'यो मंझधारां बेगा आय उबारो

सिसपालो तो फिरै बीनणी खातर घणो उमायो
बांध सेवरा जान बणाय'र है आयो को आयो
जरासंध भी बण्या जनेती कमर बांधकर आवै
हाथी-घोड़ा, रथ-प्यादां री सेना बोळी ल्यावै

रुकमंयो अब अठै ब्याव री त्यारी घणी करै है
पण थारै चरणां री चाकर झुर-झुर आप मरै है
देखो सेरां री सिकार पर गादड़ चित ललचावै
नारायण री परसादी पर कूकर जी भटकावै

हंसां हंदो मान सिरोवर बुगलां रै मन भावै
अगनिदेव रै भाग मांय अब भाग कागला चावै
अब के ना'रां री नारयां पर स्याळां रौ हक होसी
के हथणी रा हाव-भाव पर भूंडा मूंडो धोसी

सोनचिडी रै जोबन पर के उल्लू पतिया पोसी
के समदरियो भी अब अपणी मरजादा नै खोसी
जे म्है क्यूं भी कदे जलम में चोखो काम करयो है
किणी देवता नै पूज्यो है क्यूं भी नेम धरयो है

जे म्हांरो क्यूं भी पुन बाकी तो वीरो फळ चावूं
सिरीकिसण रै सिवा नही दूजा रै हाथ लगावूं
अब तो आ थांपर निरभर है आवो के नी आवो
मरजी हो तो गरजी री अरजी पर निजर फिरावो

जे बरस्यूं तो थानै बरस्यूं नीतर पट दे मरस्यूं
पण दूजा री हाथ लगाणो मुपनै सहण न करस्यूं
जे आवो तो थानै मिलणै री भी जुगत बतावूं
फेरां सूं पैली म्है माताजी पूजण नै जावूं

मिंदरताणी पाये-पांव सहेल्यां माथै आस्यूं
पूठी आवंती म्है थानै नीम तळै मिल ज्यास्यूं
म्हांरो मोल वीरता-मातर जे मन हो तो आवो
वैरघां मांथै मेल-मेल पगल्या म्हांनै ले ज्यावो

और घणी बातां में के है जे न समै पर आस्यो
तो थांरे चरणांरी चाकर नही जीवती पास्यो"
सिरीकिसण भी पाती बाच'र देर न छिन भर कीनी
दारुक नै बेगासा रथ ल्यावण री अग्या दीनी

पिंडतजी नै चोढ'र रथ में आप साथ चढ लीन्या
दारुक भी रथ रै च्यारूं घोड़ां नै सरपट कीन्या
सिरीकिसण नै देख जावतां बलभद्दर जद आया
द्वारपाल नै खोद-खोद कर पूछ्या, खोज लगाया

"कुंडिनपुर जे गया किसण तो निसचै कुवद कमासी
जरासंध सिसपाल आप रै साथै राड़ मचासी"
यूं विचार बळराम जोर सूं आपै संख बजायो
तुरत पाण बड़ो सेनापति आप भाजकर आयो

मिल्यो अठै आदेस "जायकर सेना त्यार करावो
कुंडिनपुर जलदी पूगण री जतन अवार करावो"
माता पिता महीपत नै बळराम मूचना दीनी
सेना माथ आपरै जावण री भी अग्या लीनी

अस्तर सस्तर सजी बड़ी चतुरंग सेन रै सागै
चाल पड़्या बळराम तुरत श्री हो सगळां सूं आगै
जादू जोधा जुध पर जाता घणी जोरसूं गाज्या
रथ री लीकां-लीकां सगळा बेगा-बेगा भाज्या

-※—※-

## तीजौ सरग

### रुकमण-हरण

सहस-करां रा धणी सुरज री किरणां छिपण नै चाली
समदर री झिलमिल करतो झालां में आय गयी लाली
कठै दूरतांणी जांणी पांणी में श्री लागी आगी
तट पर री सगळी श्री चीजां सोनैरी लागण लागी

नदी नीर श्रर गळियारौ अब आपै श्री निरमळ होयौ
सरद-बादळां मैलौ अम्बर चिलक च्यानणीं सूं धोयौ
पाकण लाग्या नाज, सकळ कुस, कांस, कंवळ फूलण लाग्या
फुलड़ा री पांखड़ियां ऊपर भंवरा भी झूलण लाग्या

उगरसेन वसदेव देवकी सै बैठ्या हा उपवन में
कुंडिनपुर रा समंचार री चिंत्या होरी ही मन में
इतणैं में श्री कोयी चीज चिलकती नभ में दीख पड़ी
च्यारूं-मेर काटती चक्कर चाले ही वा खड़ी खडी

धीरैं-धीरैं सिरक-सिरक कर वा नीचैं नै आवै ही
नुंवौ अचंभौ देखणिया रैं मन में वा उपजावै ही
सनै-सनै आकार मिनख रा वी में श्री दीखण लाग्या
पळ मातर में तो नारद जी उतर सामनै श्री आग्या

सगळा उठकर नारदजी रौ करयौ मांन सूं अभिनंदन
पाद्य अरघ दीन्या आदर सूं कर कर वांरा पदबंदन
खेम कुसळ पूछ'र वै बोल्या "कुंडिनपुर सूं आयौ हूं
वठै रुकमणी हरण करण रा समंचार सैं ल्यायौ हूं

हाथ जोड़ वसदेव कह्यो-"म्हे उतपातां सूं डर रया हा
सिरीक्रिसण बलदेवा री ओ बैठ्या चित्या कर रया हा"
नारदजी बोल्या हंसकर-"डर झूठो है थांरै मन री
सिरीक्रिसण चित्या री विसय नहीं, वो तो है चितन री

चित्या में क्यूं लाभ नहीं है समै बिरथ ओ जावै है
सिरीक्रिसण रै चितन सूं तो मिनख परम पद पावै है"
क'यो देवकी-"नारदजी, थे तो वेदांत बखाणो हो
कुंडिनपुर री बात बतावो जे थे क्यूं भी जाणो हो"

नारद बोल्या "फेरां हाळै दिन जद सुरज देव ऊग्या
सिरीक्रिसण बळराम साथ सेना रै कुंडिनपुर पूग्या
राजाजी गांव रै गोरवै समंचार मिलतां आया
करयो सुवागत घणां मांन सूं लाड मोकळा दरसाया

नगर देखवा चाल्या रथ में बैठ'र जद दोनूं भायी
च्यारूं-कानी गळी-गळी नै सुंदर सजी घजी पायी
झाड-पूंछ कर, धो-धोकर भी सगळै करी सफायी ही
रंग-बिरंगी झिंडो बांधर धजा घणी फररायी ही

घर-घर में ज्यूं ब्याव मंडयो हो सगळा ओ सजवाया हा
बंनरवारां बांध बारणा सुवरण कळस सजाया हा
भांत-भांत रै फुलड़ां हाळा हार घणां लटकाया हा
जगां-जगां पर बण्या दरूजा तोरण भांत लगाया हा

वैं तो पुर देखण नै चाल्या पुर वानै देखण चाल्यो
भेळी होगी भीड़ मोकळी कोयी नी तिलभर हाल्यो
मोवन री मन मोवन छिब सूं सगळा सैंग-बैंग होग्या
कोयी नै क्यूं याद र'यो नी आपै ओ सुध-बुध खोग्या

छातां ऊपर खड़ी गोरड़्यां अपलक आंनै निरखै ही
खा'र गैलड़्यांरा धक्का भी नहीं जरा सी सिरकै ही
एक अणूंतो आकरसण हो अेक अणूंती माया ही
घणी अेक-टक निरखतां भी तिरपत होय न काया ही

आपसरी में लोग अेक दूजा सूं जंद बतळावै हा
स्यांमसुंनर री सहज सलूंणी छिब रा भी गुण गावै हा
"बाई री जोड़ी रो बर तो सांवळती सूरत हाळो
भी सिरसो कोयी नी दूजो है मोवनं मूरत हाळो

निसचै भी राजाजी री तो सांठी बुंध नाठी होगी
पण सगळी भी राजकुंवारां री भी अकल कठै खोगी
जे क्यूं भी म्हे धरम करयो है जे क्यूं पुंन कदै कीन्यो
तो सगळो भी राजकंवर बाई नै आज अठै दीन्यो

राम करै तो बाई नै ओ भी सुंदर बर मिल ज्यावै
माताजी री किरपा सूं भी मैं क्यूं विघन नहीं आवै"
यूं वातां बतळातां पुरवासी जण अपणै घर आया
रांम-किसन नै नगर दिखाय'र वांरै डेरै पूगाया

बठै राज म्हैलां मे बाई देख देख ब्या'री त्यारी
पिंडत जी रै नी पूगण सूं बणी दुख्यारी ही भारी
मन में भी तड़फै कोयी नै क्यूं भी कैंण न पावै ही
चितरी चिंत्या भांत-भांत री हिवड़ै नै भरमावै ही

"कै पिंडतजी पूग सक्या नी के न स्यांम सूं मिल पाया
के नी स्यांमसुनर भी वांनै सरधा सांथै बतळाया
अब भी जे वै नी आया तो आगै के करणो पड़सी
स्यांमसुनर जे ना करदी तो निसचै भी मरणो पड़सी

सिरीक्रिसण नै के मेरै में कोयी खोट निजर आयी
के मेरौ सरबस रौ अरपण वां रै चितनै नी भायौ
ओ म्हारौ साहस झूठौ औ बिरथा औ मनरी आसा
असफळ र'यौ मनोरथ म्हांरौ बिफळ बीनती री भासा

सांच्याणी म्हैं रूप-गुणां में वांरी जोड़ी री कोनी
वै तो सरब ओपमा लायक म्हैं क्यां लायक भी कोनी
कठै फूड़ म्हां सिरसी छोरी वां सिरसा गुणवांन कठै
म्हांरै जिसी कठै अग्यांनी वां सिरसा भगवांन कठै

म्है ना-कुछ सी नारी स्यांमसुनर नै वरणौ चावै ही
विना पांख चिड़कोली नभ रै बीच बिचरणौ चावै ही
ओछै मन री ओछा हाथां चांन पकड़णौ चावै ही
लूली-पांगी डूंगर री चोटी पर चढ़णौ चावै ही

पण म्हां जिसी मंद-भागण रा इसड़ा चोखा भाग कठै
सिरीक्रिसण रै मन में म्हां सिरसा री क्यूं अनुराग कठै
देओ-देव घणां पूज्या म्हैं नेम बरत बोळा धारचा
पण कोयी आया नी आडा कोयी काज नही सारचा

महादेव, थे देवां में भी वड़ा देव हो त्रिपुरारी
घणी करी थारी भी सेवा पूजा म्हैं अबळा नारी
आ जो डर-भौ-अन्यायां री आंधी आरी है भारी
आ के थांरी औ करणी है थांरी औ माया सारी

सिसपालो के थांरै पांण परायौ भख खावण आयौ
जरासंध के थांरै औ वळ पर अितणी सेनां ल्यायौ
थांरै औ सा'रै सूं के आ मारकाट जग में मांचै
थांरी औ सैनां सूं के आ रणचंडी खुलकर नांचै

के किरपा रौ वडौ खजांनौ थांरौ अब खाली होग्यौ
अनुकंपा रौ भाव अकारण अब कै आपै श्री सोग्यो
के करुणां रौ सागर थांरौ छिन मातर में अब सूक्यौ
के दरियाव दया रौ दारुण दावानल में थे फूक्यौ

भाई तो दांनां सूं मिलकर खोटा कामां में लाग्यौ
कायरता रौ भाव बापजी सा में अणचूक्यो जाग्यौ
दोनां री गलती मारग दोनूं ज डंडरा पातर है
न्याय-ताखड़ी पर तोलण में दोनूं थोक बरोबर है

म्हे न दयारी भिच्छया मांगूं न्याय आपसूं चावूं हूं
मनचायौ जोड़ी रौ वर म्हैं कीं कारण नी पावूं हूं
पुरब जलम रा पाप म्हारला क्यां सूं आज उदै होया
पुंन करम के म्हारा सगळा एकै साथ विलै होया

मात भवानी, सिव-संकर तो बस भोळा भंडारी है
पण तूं भी क्यूं भूल र'यी अब, तूं तो जग-महतारी है
बेटा-बेटी लाख बुरा हो मायड़ कदै न भूलै है
मायड री छत्तर-छाया में टाबर फळै र फूलै है

के फेरूं भी सिसपालौ म्हारै तन हाथ लगावैगो
के म्हांरी सगळी श्री आसा पर पाणी फिर ज्यावैगो
सिरीक्रिसण भोळां रौ भीड़ो के म्हारी सुध नी लेसी
सरणागत-वत्सल गिरधारी के अब सरण नही देसी

सिरीक्रिसण घनस्यांम सांवरौ म्हानै के अब नी बरसी
गोवरधन-धारी के म्हारो हाथ हाथ पर नी धरसी
इन्द्र-मदन-मद-हरण न के अब सिसपालै रौ मद हरसी

अब किरपा रो घणी क्रिसण नो म्हांरो विनती सुणसी के
पतितां री पावन पदम-नैण पतिता पर ध्यान न धरसी के"
बाई री बांयी आंख फरूकी यूं विचार करतां-करतां
पिंडतजी सामीं आ ऊभ्या मां-तणो ध्यान धरतां-धरतां

रूकमण झट बूझ्यो -"पिंडतजी, के स्यांमसुनर अब आया है"
पिंडतजी बोल्या-"रांमकिसन सेना भी साथै ल्याया है"
रूकमण रो सुणतां पाण वठै हिव घणै हरख सूं उमड़ायो
आंख्यां में आंसू भरियाया मुखड़ै सूं बोल नहीं आयो

राजी होय'र पिंडतजी रो घणो मांन सतकार कर्‌यो
वांरी झोळी हीरा-मोती-पन्नां सूं पळ मांय भर्‌यो
फेर क'यो -"म्हैं थांरै रिण सूं उरिण न होणैवाळू हूं"
दे असीस पिंडतजी बोल्या-"बाई, म्हैं अब जावूं हूं"

माजी आ बोल्या-"बाई, थे अब मंगल असनांन करो
फेरूं मिंदर में जावो अर माताजी रो ध्यांन धरो"
रूकमण बाई राजी मन सूं माजी रो सनमांन कर्‌यो
तेल उबटणां लगा लगाय'र घणी देर असनांन कर्‌यो

चेरी-बांनी सगळी रळ-मिल बाई रो सिणगार कर्‌यो
बाळ-बाळ में मोती पोया चोटी फुलड़ां हार धर्‌यो
केसर तिलक लगाया माथै, नंस बेसर पै'रायी ही
नैणां तीखी सुरमो सार्‌यो, उर माळा लटकायी ही

कानां जळीदार झूमका, गळै गळसरी बंधवायी
भुजां अणत, हाथां में कंगण, पूंचा चूड़ियां पै'रायी
कड़यां तागड़ी, पगल्यां में नेवर रुणझुण रुणझुण बाजै
जरीदार सै पाट-पटंबर देख'र रति-राणी लाजै

रुकमण बाम्री यूं सज-धजकर गोरी धोकण नै चाली
लजवंती निजरां नीची कर मझलां-मझलां श्री हाली
मीठी धुन में बोळा बाजा बाजै हा आगै-आगै
गीत गावती घणी सुहेल्यां चालै ही सागै-सागै

सेना रा जुवान ऊभा हा दोनूं-कांनी ले सस्तर
तणरी ही बांकड़ली मूंछ्यां पैं'रयां हा सुंदर वस्तर
चेदि-मगध रा वीर मोकळा देखै हा निजरां भर-भर
जादू सूरवीर भी बोळा खड़्या भीड़-में रळमिळ कर

गौरां रै मिदर में बाम्री आंगणियै ऊभा होया
बांनी निरमळ नीर मंगाय'र हाथ और पगल्या धोया
सरधा-भगती सूं बाम्री-सा माम्री री पूजा कीनी
पिंडताणीजी धोक दिवाय'र आसिरवाद घणी दीनी

मुरती सामी बड़ी बिनै सूं हाथ जोड़ बोली बाम्री
"भोत दिनां सूं धूप-ध्यावणा करूं आपरी हूं माम्री
वड़ै मांन सूं घणी गरज़ सूं इतणी अरज करूं थांनै
पीतांम्बर-धारी बनवारी सिरीकिसण वर दयो म्हांनै"

यूं कैती कैती श्री रुकमण मां रै पगल्यां जाय पड़ी
मुरली री गळ-माळ तिसळ कर बाम्री रै सिरमांय पड़ी
गौरां रै चरणां सूं रुकमण हरख मगन होय'र ऊठी
राजी मन सूं सीस नवाय'र मिंदर सूं चाली पूठी

नीम तळै पूगी जद श्री रथ रुण-झुण करतो आयो हो
स्यांमसुनर नै देख स्यांमनै रुकमण हाथ बढ़ायो हो
सिरीकिसण भी हाथ पकड़ कर ऊपर उठा बठा लीनी
आंख फरूकै जितणै में तो घोड़ा दोड़ लगा दीनी

सिरीकिसरा तद हाथ उठाय'र बोल्यां "अब म्हे जावूं हूं
राजकंवर रुकमण देवी नें साथै ई ले ज्यावूं हूं
जे कोयी री मां अजवायण खायी हौ तो आज्यावौ
मन में कोयी भरम हौय तो हाथूं-हाथ मिटा ज्यावौ"

चेदि-मगध रा सूरवीर सगळा चकरी-गुम सा होग्या
सुपनै री सी बात समझ कर आपै ई सुध-बुध खोग्या
देखणियां में धीरै-धीरै थोड़ी सुलभळाट मांच्यौ
पिरजा में सूं कोयी धाकड़ बड़ै जोर सूं जद नांच्यौ

"जोधां रै देखतां-देखतां कान्हौ रुकमण हर लेग्यौ
बडै-बडै सूरां बीरां नै छिन में ई गोता देग्यौ
नाक कटी सिसपाल री होयी व्या-बीच घड़ींचौ अब
जरासंध जी बैठ्या-बैठ्या मूंछ्यां नै ई खींचौ अब"

इतणी बातां सुणकर जनता हड़-हड़ कर हंसणै लागी
जरासंध रै साथ्यां रै मन में पण सिलग उठी आगी
जरासंध अब गरज उठ्यौ-"ई चोर छोरटा नै पकड़ो
ज्यादा जोर दिखावै तो जलदी जंजीरां सूं जकड़ो"

सेना सुणता पाण तुरत रथ रै लारै धावौ कीन्यौ
पण सगळा ढीला पडग्या, बळराम मोरचौ जद लीन्यौ
मारकाट भारी मांची लोथां पर लोथ पड़ण लागी
जादू सेना रै हाथां में साच्योई रणचंडी जागी

लड़तां-पड़तां मूंडां सूं निकलै ही लांबी सिसकारी
घायल होय'र हाथी-घोड़ा मारै ठाडी किलकारी
जोधां सूं जोधां भिड़र्या कायर लैरां नै भाजै हा
सगळां री निजरां मे मां-बापां नै, कुळ नै लाजै हा

तीखै सूं तीखा सस्तर री भी नोट सूरमां ओटै हा
कुंडल-मुकट जड़्या जोधांरा मांथा धरती लोटै हा
कठै कगणां साथ कटचोड़ै हाथां रा ढिग लागै हा
कठै कटेड़ा पग श्री पग धड़ श्री धड़ श्रावै श्रागै हा

रण-रंग चढ़ण लाग्यौ दूंणौ जादू जोधा जद गाज उठ्या
तो जरासंध सिसपालै री सेना रा सूरा भाज उठ्या
सिसपालौ भोत निरास भयौ आंख्यां रौ तेज विलीन हुयौ
गळ सूक्यौ, जीभ नहीं हाली, मुखडौ कांती सूं हीन हुयौ

जद जरासंध रै गळै बांथ घाल'र ढाढां रोवण लाग्यौ
सुबकी पर सुबकी चढ़री ही वेमुध सो भी होवण लाग्यौ
समझायौ जरासंघ बोळौ - "यूं के छोरां ज्यूं रोवै है
छोटी-छोटी सी वातां पर क्यूं मनरौ धीरज खोवै है

हरख-सोग री हार-जीत री दुख-सुख री तो जोड़ी है
सगळा श्री देखै बार-बार जीवण में बोळी थोडी है"
सिसपालौ बोल्यौ-"घरां जाय म्हे मूंडौ कयां दिखावूंगौ
लोगां री श्राडी-टेढी वांता बठै कयां सुण पावूंगौ"

जरासंघ हिमळास दियौ-"श्रव टावर पणौ न श्रगणावौ
'दो लडै जकां में अेक पड़ै' श्रा सोच'र मन नै समझावौ
म्हे भी तो जुध में सतरा बर श्री ग्वाळै सूं श्री हारयौ हो
पण श्रठारवी बर श्रापै श्री बडौ मोरचौ मारयौ हो"

अे सगळा रण मे फंस रया हा रुकमैयौ सेना ले भाज्यौ
दूजै मारग सूं सिरीक्रिसण रै नेडै जाय'र यूं गाज्यौ
"रै गुवाळिया चोर मदा रा कठै जायसी श्रव श्रागै
चोरी करतां जे नहीं डरयौ तो वेगौ-वेगौ क्यूं भागै"

सिरीकिसण सुणतां ई मुळकया, झट दे रथ नै रुकवायौ
चोड़े सै लिलाड़ रै ऊपर क्यूं थोड़ो सो बळ आयौ
राज-कंवर रुकमण री आंख्यां में जद देख्यौ भै छायौ
तो सैनां श्री सैना मे भुजबळ रौ मतबल समझायौ
रुकमैयौ भमूळियां री ज्यूं सट देसी नेड़ै आयौ
रथ री च्यारूं-मेर मोकळै बाणां रौ मे' बरसायौ
सिरीकिसण भी छिण-मातर में सगळा श्रौ सर काट दिया
रुकमैया रा साथ्यां नै तीखै बाणां सूं पाट दिया
झाळ-भरया जोधा रुकमीरा तरवारयां ले हुया खड़या
सिरीकिसण भी खांडो लेय'र झट-पट रथ सूं कूद पड़या
जोवन सूं छकिया जोधां में जोरां सूं जद जुद्ध ठण्यौ
सिरीकिसण रै रण-कोसल सूं एक अणुंतौ सांग बण्यौ
वां रौ खांडौ बीजळ री ज्यूं चिमक-चिमक कर चालै हो
अेक चिलकतै चक्कर री ज्यूं च्यारूं कांनी हालै हो
नुंवौ दिरस श्रो देखणियां रा म्हारा चित भी चकराया
हरख-भरया आंसूड़ा टपक्या श्रोर रूगटा करणाया
नी कोयी रै चोटा लागी नी कोयी मरणं पायौ
पण आतंक अणूंतौ श्री सगळी सेना मे हो छायौ
बूंद रकत री एक पड़ी नी पण रण में वमछळ वाजी
भय रौ भूत वणाय'र सगळी सेना में भाजड़ भाजी
कोयी पूठा भाज र'या हा हाथ जोड़ कोयी ऊवा
मन-मोवन नै निरखण रा हा घणा दिनां सूं मनसूबा
घातक वार करै रुकमैयौ सिरीकिसण पण बच ज्यावै
रुकमण री आंख्यां में देख'र वीरै चोट न पूगावै

छेवट वो जद भाज पड़यौ तो सिरीक्रिसण हाथां पकड़यौ
दारुक नीड़ैसो आय'र वी नै जजीरा सूं जकड़यौ
लारै सूं बळराम आयग्या वीनै बंध्यौ देख बोल्या
"ओ के करयौ क्रिसण", अर वो रा हाथां सूं बंधन खोल्या

कह्यौ-"सगा हो थे तो मोटा छोटी बात न ध्यान
जे कोयी क्यूं भूल हुयी तो टाबर जाण'र छिमा क
नीची नाड़ करधा रुकमैयो पूठौ गयौ बोल-बा
सिरीक्रिसण बळराम साथ री लसकर भी आगे चा

उगरसेन बसदेव देवकी अै बाता सुण हरख-भरया
घण मांन सूं पूजा कर-कर नारदजी नै विदा करया
मोद-भरी देवकी बधायी बडै चाव बांटण लागी
पुरस्कार री चीजां सगळी जथा-जोग छांटण लागी

-꧁—꧁-

## ब्याव

उगै-आथणै भारी ठ्यारी पड़न [illegible]
पैनी-पैनी पून काळजे वड़वा [illegible]
सुरजी हंदौ तेज-तावड़ौ मंदौ पड़ग्यौ
गरमीरौ परभाव, ताव सो ठंडौ पड़ग्यौ

दिन कपूत रै धन री ज्यूं नित घटतौ आवै
रात ब्याज री भांत मतै औ वढती जाव
सुरजी सरदी रै डर घर सूं वार न आवै
जी सूं दिन घट ज्याय रात वढतौ औ जावै

पण दुवारका में सरदी नै गिणै न कोयी
सगळां रै मन मांय हरख री बिरखा होयी
सिरीकिसण रै ब्यारौ चित में चाव चढ्यौ है
अेक अणूंतै उच्छब रौ ज उछाव वढ्यो है

होठां में मुळकाव, मोद भरियौ नैणां में,
अेक मिठास अपूरव आज बण्यौ वैणां में
सगळा औ है घणां जरूरी कामां लाग्या
फिरै अेक दूजा रै आगै भाग्या-भाग्या

नगरी मे भी सजी सजावट आज घणी ही
जग-मग दिवलां नुंवी दिवाळी आज बणी ही
धजा – पताका ऊंची-ऊंची फररावै ही
धुंसां रै धमकां सूं धरती धररावै ही

मारग-मारग लूमँ ही पुसपां री माळा
जिण में रंग-बिरंगा फुलड़ा सोरम-हाळा
साल-दुसालां री श्री बंनर-वाळ वणायी
सात भांत रँ रंगा री जिण मांय सजायी

चंनण अंबर गूगळ भरिया धूप वळँ ही
केसर-किसतूरी री भी मँ'कार तळँ ही
बड़ा दरूजां काचा केळां थांम खड़्या हा
आला-गीला वास अकासां बीच अड़्या हा

कर सोळा सिणगार कामण्यां मंगल गावँ
छनन-छनन छन-छन छन करती पथ में जावँ
गळी-गळी में भांत-भांत रा बाजा बाजे
जद दुवारकापुरी अमर नगरी नँ लाजे

जगां-जगां रा राजा राजकंवर भी आया
भीष्मक नृप परवार मोकळौ सागँ ल्याया
वांरै म्हैलां मांय ब्याव री होरी त्यारी
नवल-बनी कुळ-रीत निभावँ न्यारी-न्यारी

रिध-सिध रौ दातार बिनायक प्रथम मनायौ
फेरूं सगळै मंगल काजां हाथ लगायौ
तेल-बांन, हळदात नेग-दस्तूर सधाया
केसर री पीठी सूं नित असनांन कराया

इत बसुदेव भवन भी होरयौ जग-मग, जग-मग
कांम करणियां री लौ नांचण लागी रग-रग
गुल-बनड़ँ रा लाड-चाव भी हुया घणेरा
साथीड़ा हुड़दंग मचावे घालँ घेरा

बांन-बनोरा बड़े ठाठ सूं होवण लाग्या
लोग बानग्यां सारू बाटां जोवण लाग्या
करी घणी वसदेव-देवकी भी मिजमांनी
सातूं पूंण जियायी कर-कर सत-पकवांनी

सात सुहेल्यां साथ बधावा-मंगल गावै
घोड़ी-बनड़ा मुळक-मुळक कर घणां सुणावैं
बाजां रै बिच-बिच सहनायी वाजण लागी
नवल-बनारै मन में घणी उमंगां जागी

बनड़ी रै भी चाव-चाव में हरख्यो डोलै
भोजायां रै आगै मनरी घूंडी खोलै
तेल-बांन भोजायां आंख नचाय उतारया
गुलबनड़ै रै गालां पर गुलच्या भी मारया

असी मार पण देवरियां नै मीठी लागै
वो भी पाणै सकै, भाग यूं जीरा जागै
भावज में मातृत्व-नेहरो मिश्रण अनुपम
जग रो कोयी जीव नहीं होवै भी रै सम

भोजायी देवर-नणदां नै लाड लड़ावै
साथी ज्यूं वां नै रहस्य रो भेद बतावै
मनडै री बातां बूझै वां नै समझावै
हसी-मजाकां मांय प्रीत री रीत सिखावै

नुवा-धुवा कर बनड़ै नै चौकी बैठायौ
मोती-माणक जड़ियौ मंगळ-वेस प'रायौ
ऊंचै सै लिलाड़ केसर रा तिलक लगाया
मोर-मुकट अर सिरै-पेच माथै सजवाया

नासां मोती, कानां में मकराक्रित बाळा
गळ हीरां री हार और माणक री माळा
सगळा साज सजाय भावजां काजळ सारचौ
सोनैं-थाळ आरतौ छोटी भैण उतारचौ

मन-मोवन मोवणी सोवणी छिब जद धारी
निछरावळ सैं करी मोकळी म्होरां वारी
मां प्रणाम करतां नैं आंचळ-धार दिखायी
सदा दूध-मरजादा-पाळण री समझायी

उगरसेनजी बडैं लाड सूं जांन बणायी
भांत-भांत सूं घणैं चाव बळराम सजायी
घोड़ी-घोड़ां सोनैं रा गहणा पैराया
हाथ्यां री सूंडा पर मांडणिया मंडवाया

कर गणेश-पूजा देई-देवता मनाया
पिंडत भेळा होय वेद रा पाठ सुणाया
गाजै-बजै रै साथै गज-ध्वज कर जांनी
अकड-अकड़ कर चाल्या सगळा मांडै-कानी

सिरीक्रिमण हाथी रै होदै तोरण मारचौ
राजा भीष्मक री राणी आरतौ उतारचौ
लजवंती रुकमण भी होळैं-होळैं आयी
मन आतम-बिसवास भरी गरिमा ही छायी

आख्यां में ही अेक अणूंतौ ओज समायौ
ऊंचै कुळ री भी परभाव न छिपै छिपायौ
नीचै नैणां, ऊंचै हाथां-बीच उठायी
वरमाळा झट सिरीक्रिमण रै गळै प'रायी

कर सोळा सिणगार कामण्यां कामण गावैं
निरखे छल्ला मार, सीठणां घणां सुणावैं
राजा भीष्मक आव-भगत मनचायी कीनी
भांत-भांत री वानगियां आगै धर दीनी

काढ-काढ कर न्हौरा भोत करी मिजमांनी
खा पी तिरपत होग्या घणां बिनांणी जांनी
नवल-बनां नै फेर रावळै मांय बुलाया
मांनै री चोकी पर आसण बिछा, बठाया

सगळा सुंदर सिणगारां सूं सजी सजायी
बनड़ी नै ल्या बनड़ा रै नेड़ै बैठायी
बठै पिंडतां बाळू री बेदी बणवायी
पूजा री सामगरी सगळी कनै जचायी

विधि-विधांन सूं सै देवांरा पूजन कीन्यां
फेरूं पाद्य, अरघ, मधु-परक वतां नै दीन्या
करयौ अगनि री स्थापन जद गोदांन करायौ
लेय संकळप राजा किन्या-दांन दिरायौ

हथलैवौ देय'र गंठजोड़ौ भी बंधवायौ
अनुज रुक्मणाली उठ लाजां-होम करायौ
विधि सूं कर अगनी-परकंमा फेरा लीन्या
मांग भरी सिंदूर, वचन भी सातूं दीन्यां

हुयौ ब्याव री उच्छब यूं सास्तर-विधांन सूं
दियौ दायजौ अणगिणती नृप घणै मांन सूं
सलट्या सगळा काम विदा री वेळा आयी
मां-बापां रै मन पर घणी उदासी छायी

चिड़कोली चूंचाट मचा गूंजाती सो घर
भीर होय री आज अठै सूं साथी, पाय'र
खेली, कूदी, धूम मचायी जी आंगण में
वीनै छोड़'र आज जाय री नुंवै भवन में

बण्या पराया अपणा, अपणा बण्या पराया
जांणीतां नै छोडचा, अणजांण्या अपणाया
होय ब्याव सूं घणौ अणूंतौ ओ परिवर्तन
प्रकृति-नटी रौ ओ अदभुत अण्जाण्यौ नर्तन

जलमी जद सूं वावळ जी'रौ लाड लडायौ
पाळी-पौसी सिखा-पढाय'र मांन बढायौ
जीनैं जलम देवतां मायड़ अति दुख पायौ
घणैं नेह सूं निज आंचळ रौ दूध्यौ प्यायौ

भाओ जी रै साथ बाळ-पण मजै वितायौ
नांच्या-कूदया साथ-साथ ओ पीयौ - खायौ
आं सगळां रै आज वेदना भारी मन में
हियौ ऊझळचौ जावै घणी उदासी तन में

गद-गद होरचौ गळौ, वैण नी मूंडै आवै
घणैं अमंगळ रै डर आंसूं ढुळक न पावै
राज भीष्मक दो'रा-सौ'रा सा यूं बोल्या
धी नैं कंठ लगाय भेद मनड़ै रा खोल्या

"सासरियै अब बेटी, राजी-राजी जावौ
म्हांरौ माया-मोह नहीं क्यूं मन में ल्यावौ
सासरियै नै बडौ देवरौ मिंदर जांणी
सासू-सुसरा पती-देव नैं देव पिछांणौ

घणै मांन सूं इणारी सेवा करता रीज्यौ
अग्या-पालण कर इणारौ मन भरता रीज्यौ
पीवरिया में बडो मांन आदर थे पायौ
करचौ नहीं कोग्री रै भी चित रौ अणचायौ

पण थे सासरियै में भी जद आदर पावौ
तद थे मां-वापां रौ हिवड़ौ घणौ सिळावौ
रतन साण में चढकर ग्री सोभ्या पावै है
सोनौ अगनी में पड़ घणौ चिमक ज्यावै है

सासू-सुसरां नै ग्री मायड-बावा जांणौ
देवर-नणंदा नै ग्री भाग्री-भैण पिछांणौ
घणै सनेहां सगळां सूं रळमिल कर रैंज्यौ
छोटी-बातां नही कदै कीनै भी कैंज्यौ

जे कोग्री क्यूं कदै कठै ग्रोछो भी बोले
तो भी वी रै सामी चतर न मूंडो खले
वाद-विवादां सूं ग्री सगळी राड़ बढै है
तरक-मरक सूं ग्री मांथै सैतान चढै है

जांण समय री मोल बिरथ नी पळ भी खोणौ
ग्रायु बढ़ावै सदा, काम में ततपर होणौ
समै मिलै तो पति री सेवा में लग ज्याणौ
पाय परेम पती री जीवण सफळ बणांणौ

पति-पतनी में नीं परेम होवै जी घर में
नहीं स्यांति संतोप कदै ग्रावै वी घर में
नहीं परेमी करण सकै जो ग्रावै मन मे
रैंणौ पड़ै एक नै दूजां रै बंधन में

सदा परेमी तो देणी श्री देणी चावै
नहीं कणां भी किणीं भांत सूं लेणी चावै
चंनण री ज्यूं घिसकर भी सोरम पुगावै
दाखां री ज्यूं पिस कर घणी सुवाद वढावै

है सनेह रौ स्थांन बड़ौ घरणी-जीवन में
बिन सनेह दिवला री हालत आवै तन में
नेह-भरयौ ब्यौहार मतै श्री मनड़ौ हर ले
सहज सरळता सूं सगळां नै बस मैं कर ले

नारी रौ ब्यौहार सार घर रै जीवण रौ
सारौ सुख-सतोस इणी पर निरभर जण रौ
नारी रौ ब्यौहार नरक नै सुरग बणा दे
कांटां रै मारग में कूंळा फूल बिछा दे

विपदा नैं संपदा, भैर नै इमरत कर दे
जंगल में भी नंदन बण री सोभ्या भर दे
कालर धरती में आमां रा बिरछ लगा दे
मुरधर में भी सुर-सरिता री धार भुवा दे

सेवा-भाव नहीं होवै है जी रै मन में
नी सनेह ब्यौहार निभै वी रै जीवन मे
सिक्ष्या, ग्यांन, विचार भाव रौ कुण सौ फळ है
जे क्यूं हाथ लग्यौ न सहज सेवा रौ बळ है

ऊंच-नीच रौ भेद मिटै मन सेवा रै बळ
जण-जण नै श्री गिणै जनार्दन सेवा रै बळ
नर श्री नारायण बण ज्यावै सेवा रै बळ
नारी मां री ममता पावै सेवा रै बळ

बाळापण सूं सेवा-मय है नारी-जीवन
सरधा-ममता दया - भाव सूं भरयौ र'वै मन
दूजां री दुख देख तुरत विचळित हो ज्यावै
करै उपाव अनेक बठै, जो क्यूं कर पावै.

सहणसीलता बिना नहीं सध पावै सेवा
सगळां रा गुण-दोस सह्यां श्री पावै मेवा
भली-बुरी सुण कर जो राजी रै'णै पावै
पूरौ श्री घर-भर वी रै वस में हो ज्यावै

घरणी रौ इधकार सदा श्री होवै घर पर
पण निभाव तो वी रौ चतराई पर निरभर
पिरजा पर इधकार भूप रौ हो तद तांणी
रिछ्या करणे में समरथ, वो हो जद तांणी

घर री सार-संभाळ ग्रोर रिछ्या जो करसी
कर घर पर ग्रिधकार मतै "घरणी" पद धरसी
मिलै मांगणै सूं न कदै ग्रिधकार किणी नै
नहीं राड़ सूं मिल पावै है प्यार किणी नै

जो सगळा करतव्य जतन रै साथ निभावै
वो पूरा ग्रिधकार मतै ग्रादर सूं पावै
थे जीवण में ग्रिधकारां रो मोह न करज्यौ
इण सारू कोग्री रै साथ दरोह न करज्यौ

धणी कहूं के बेटी, ग्रव सासरियै जावौ
जीवण-धण रै साथ बठै नव-जीवण पावौ
बणौ महाराणी सासरियै में कौसळ सूं
सैं रै मन पर राज करो सनेह रै बळ सूं

थां दोन्यां री आ सुंदर जोड़ी अवचळ हो
सातूं सुख मिल ज्यावै जीवण सरळ सफळ हो
दिन सोनै रा रात रजत री मन निरमळ हो
मंगळ मय री घणी दया सूं मुद मंगळ हो"

यूं कैतां-कैतां राजा रौ हियौ भरयायौ
चित में हो चंचळता, पण उतसाह दिखायौ
नैणां में दीनता मिटाय'र खुसी बसायौ
अधरां में मुळकान भरी, सिसकार दबायौ

सिरीक्रिसण जद विदा कराय'र भवन पधारया
तद मैया आरतौ उतारयौ मोती वारया
वाड़ रुकाओ नेग सुभदरा नै जद दीन्यौ
बीन-बीनणी तद परवेस म्हैल में कीन्यौ

म्हैलां मंगल-चार मोकळा होवण लाग्या
चाकर बान्यां मिल्या पदारथ मूंडै-मांग्या
देंओ-देव धुकाया सगळा कारज सारया
सिरीक्रिसण रुकमणी रंग-म्हैलां पग धारया

—❀—❀—

## पांचवौं सरग

### सुत–जलम

फळ होय विद्या रो विनय, ज्यूं विनय रो फळ मांन है
ज्यूं गरव रो फळ है पतन, फळ होय तप रो ग्यांन है
ज्यूं ग्यांन रो फळ बिरमपद, फळ सुमति रो संपत्ति है
ज्यूं होय जिगरो फळ सुरग, फळ कुमन रो आपत्ति है

ज्यूं त्याग रो फळ सुजस है, फळ लोभ रो ज्यूं पाप है
ज्यूं पुंन रो फळ हरख मन रो, पाप रो संताप है
ज्यूं नेम रो फळ खेम है, ज्यूं बीज रो फळ धांन है
ज्यूं भोग रो फळ रोग है, त्यूं ब्याव रो संतान है

संसार में सै ब्याव होता औ करै सुत–कामना
जीवण सफळ करणै सकै विन पूत दूजो कांम ना
धण पूत जण कर औ बणै जणणी हरख मन में भरै
आपै लुगायी मां कुवावै, नांव कुळ ऊंचो करै

पितरां–वडेरा रो मिनख रिण-भार जो मांथै धरै
जग मांय बेटा रै जलम सूं वो मतै औ ऊतरै
बेटो, असल में बाप री औ आतमा रो अंस है
बेटो उजागर नांव कर आगै बढावै बंस है

जी सूं जलम नै पूत रै जाणै बडो औ भाग है
सगळा जणा औ पूत पर राखै घणो अनुराग है
हींडै नही है पालणै में पूत जिण रै आंगणै
वी रै घरां जावै नहीं मुंगता कदे भी मांगणै

घर सुत-जलम में व्याव सूं भी तो घणी आणंद हो
कुळ-दीप देख'र पितर भी नांचै मतै सुच्छंद हो
सुत घर-गिरस्थी रो करै जग मांय पूरण कांमना
जद पूत खेलै पाळणै बाकी बचै क्यूं कांम ना

भगवान सत-संकळप अतुलित तेज वळरा धांम है
संसार रा मां-बाप है सो जगत वांरो जांम है
इछ्या न वांरै ऊपजै मन में न होवै कांमना
वै सरब समरथ होय कर क्यूं भी करै हैं कांम ना

पण लोक हित सारू जगत में ले जणां औतार वै
तो नित करै संसार में लोगां जिसो व्यौहार वै
श्रीक्रिसण मथरा मे जणां औतार धारण कर लियौ
तो रुकमणी रै रूप में औतार लिछमी जी लियौ

जो चीज जीरी होय वा वी नै मतै मिल ज्यायसी
वी री न हो तो जतन पर भी दूर भाजो जावसी
जद रुकमणी र सिरीक्रिसण रै ब्याव बीत्या दिन घणा
करणै लग्या तद चाव गीगा री वठै मगळा जणा

जिण कांम रै बस में हुवै छिन में सकळ संसार है
भगवांन रै वो अस रौ भी अंस मात्र विकार है
वी'री घणो श्री सोवणी सुंदर सलूणी रूप है
वी'रा सुमन सोरम भरया श्री पांच बाण अनूप है

वी'रै जगत नै जीतणै री भोत गरब गुमान है
जित-इंद्रिया री जीत री चित में बडो अरमांन है
जद तक विनय मन में र'वै माणस मतै ऊंचो चढै
आवै गुमांन गरब जणां तो आप नीचै नै बढै

यूं काम भी मारचौ गरव रौ जा भिड़चो म्हादेव सूं
जळ मांय ठैरे ठांव के मांटी लगाया लेव सूं
पळ मांय वळकर राख होयौ, रोपड़ी राणी रती
"हे नाथ, क्यूं मारी गयी ही गरव सूं थारी मती"

जद जाय सगळा देवता म्हादेव सूं विनती करी
छिन मांय राजी होय भोळानाथ यूं किरपा करी
"काया वळी जो कांम री वा नांय सरजीवण हुवै
पण कांम बिन श्री सिस्ट रौ किण भात संचालण हुवै

तन रै बिना श्री श्राज श्री में सकति सगळी श्रायसी
परभाव दूणौ पाय कर मनमथ श्रनग कुवायसी
श्रो सोग सगळो भूलकर रति भी जरा गम खायसी
श्रीक्रिसण रै श्रौतार में श्री देह दूजी पायसी"

सिव रै वचन सूं कांम में बळ तेज दूणौ श्रा गयौ
मन मांय श्राय र जीव नै जजाळ में भरमा रयौ
सगळौ जगत बस मे हुयौ जद श्राप श्री ऊंचौ चढचौ
जीसूं बरोबर मदन रै मन मोकळौ श्री मद वढचौ

श्रब देख बिन्द्रावन तणी श्रीक्रिसण री लीला घणी
वीं रै गरब री भावना सूं भरम री बिरती बणी
"जग में गुंवार गुवाळियौ श्रो मोकळा कोतक करै
श्रो छोरियां में खेलकर भी क्यूं न मेरे सूं डरै

ततकाल श्रीं रै चित्त में परवेश करणौ चायजै
श्रो कोतकी नै भी जरा कोतक दिखाणौ चायजै"
यूं सोच चेस्टा कान्ह रै मन बसण री कीनी वड़ी
वो जोर भी मारचौ घणौ पण पार तो कोनी पड़ी

श्रो हाल देख सिरीक्रिसण जद रास री लीला रची
मन में मनोज विचारियौ के "लाज अब कै तो बचो"
श्रो वार भी पण वार वीं रो तो अकारथ ही गयो
देख्यौ घणेरी गोपिया में अेकलो कान्हो र'यो

पण लेस मातर भी विकार न चित में आयौ कठै
मन-मोवन्यां रो साथ भी मन नै न भरमायौ कठै
कदरप यूं खो दरप कान्हां रै पगां में जा पड्यौ
"करियौ छिमां अखिलेस, म्हे जो आप सूं आय'र अड्यौ

करुणा करौ जे आप तो म्हैं कांम क्यूं भी कर सकूं
थांरी दया रै पाण श्री म्है देह दूजी धर सकूं
गळती करूं चाये घणी, चाये वडो निरसस हूं
किरपा करौ किरपा-निधी, म्है आपरो श्री अस हूं"

बोल्या मुळक कर कानजी "डरपै घणो अब काम, ना
थोड़ै दिनां रै बाद पूरण होय थांरी कांमना"
यूं मदन-मोवन रा बचन सुण मदन भी हरसायगो
वो चल दियौ राजी-खुसी, बातावरण सरसायगो

अब कांम री अभिलास पूरण रो समै ही आयगो
आणंद श्री आणंद च्यारूं-मेर सगळै छायगो
जद रुकमणी रै दिन टळया, पग भी सजळ भारी पड़्या
तन कांति चिमकी चोगणी, हा रूंगटा होया खड़्या

प्रतिबिंब आप सिरीक्रिसण रो काच ज्यूं धारण करयौ
पाणी अमणिया री तळायी चांन ज्यूं भीतर धरयौ
चालण लगी जद नाड़ राणी रुकमणी री दौलड़ी
पीली पड़ी, अळ सायगी पाळै बळी सी बेलड़ी

पण तेज धारण कर अणी वा आप दूणी सोवणी
ढक कर सुरज नै वादळी ज्यूं हो घणी मन-मोवणी
विरखा-वधू री ज्यूं पयोधर आप श्री काळा वण्या
भारी पड़्या पग पेट, आपै कोल-पसवाड़ा तंण्यां

ज्यूं पान-पत्ता मूंज लागै फूटरी तो वेलड़ी
सोभ्या अणूंती होय पण जद फूलणै री हो घड़ी
लागै सदा सुंदर, सलूणी, सोवणी त्यूं कामणी
जणणी वणै जद पण निराळी स्यांन आवै है घणी

धरती सुहावै सांवळी ज्यूं नाज-वीज-हरी-भरी
ज्यूं घन घटा काळी लुभावै बीज पाणी सूं भरी
ज्यूं सीप मन भावै मतै हिय मांय मोती धार कर
त्यूं कामणी भी कांति पावै गरभ अरभक भार धर

रुकमण चुग्योड़ी चीज चोखी चाव सूं चावण लगी
मन में अनोखी भोत सारी भावना आवण लगी
अव फूल भावै फूटरा सोरम भरया, मन-भावणा
दिन-रात सुपना आण लाग्या सोवणा'र सुहावणा

जाणी उडै आकास में, अणगिणत तारा तोड़ ले
जाणी पछाड'र सिंघणी रा कान आप मरोड़ ले
जाणी चढै गजराज घोळा पर कंवळ ले हाथ में
गळहार हीरा रौ सजावै मोतिया रै साथ मे

ज्यूं दूध-समदर मांय घोळी हंसणी मोती चुगै
जाणीक च्यारूं-मेर वेला, मोतिया, चंपा उगै
जाणी चनरमा रो किरण सूं आप श्री अमिरत झरै
जाणी हिंवाळै री सिखर पर पूगणै रौ, जी करै

थोड़े दिनां रै बाद जायौ गीगलौ जद रुकमणी
नगरी-सरेष्ठ दुवारका में तद ख़ुमी छायी घणी
चर-अचर सगळा श्री धरा में मुदित, पुळकित होर'या
तरु-बिरछ भी बेला लदया, मद-भरित, मुकुळित होर'या

बाजा बजाया अर सजाया साज सगळा चाव सूं
सै पिंडतां सूं सुस्ति-बाचण सुण्यौ सरधा-भाव सूं
नाचै नटी-नट ढोल, ढफ, पायल बजाय-बजाय कर
सूंणां दिखावै सांग रगां सू सरीर सजाय कर

बसदेवजी अर देवकी बांटी बधाई मोकळी
परजा दिखाया हरख-चाव सजा-सजाय गळी-गळी
बिखरया पड़या सगळी जगा कुंकुम, अबीर, गुलाल है
जळ-थळ, दिसा-बिदिसा, गिगन-मंडल जिणां सूं लाल है

दीन्यौ अणूंतौ दांन ब्रामण-पिंडतां नैं मांन सूं
मुंगता बण्या दांनी बठै बसदेवजी रै दांन सूं
हळदी-गुलालां, माणकां, मोत्यां पुरायौ चोक है
कर जोड़, देई-देवतां नैं सैं लगावैं धोक है

बाळौ घणौ श्री सोवणौ है, चाभ सौ मन-भावणौ
आंख्या बडी-मोटी रसीली, रूप सरब सुहावणौ
तीखी, नुंकीली नाक अर कूंळा, गुलाबी गाल है
मूं-फाड़ छोटी, मोवणी, मांथौ सुढाळ, बिसाल है

रुकमण पियावै आप अमिरत आंचळां रौ चाव सूं
निज लाल अपळक लोयणां निरखै निराळै भाव सूं
मन देवकी रै देवतां श्री लाड आपै जागियौ
चित रै अणूंतै चाव में बैराग सगळौ भागियौ

वा गीगला रै हरख में फूली समावै ही नहीं
वाळौ निरखणै वाद दूजी वात भावै ही नहीं
ग्रव अेक ग्री ही कामना वाळौ वडौ कद होयसी
कद ठुमक-ठुमक'र चालसी, कद मायरौ मन मोयसी

पण दूसरे दिन रुकमणी जद ग्राय कर रोवण लगी
"गीगौ नही है सेज पर" मुख ग्रांमुवा धोवण लगी
सुण देवकी घवरायगी "ग्रो कूण नागौ नांचग्यौ
मंगळ-हरख रै काम में ग्रो के वखेड़ौ मांचग्यौ"

रोळौ मंच्यौ वेथाक म्हेलां मांय च्यारूं-मेर हो
थ्यावस न कोयी मांय, गीगौ ढूंढणै में देर हो
माणस ग्रनेक ग्रठी-उठी नै ग्राप ग्री भाज्या फिरै
कोयी कठीनै वीच में ग्री पूछवाळां सूं घिरै

पण के हुयौ, कुण लेयग्यौ, क्यूं ध्यान में ग्रायौ नही
सै गुपतचर भेळा हुया पण भेद क्यूं पायौ नही
वेचेत होयी रुकमणी ही देवकी नै सुघ नहीं
वाकी किणी में सोचणै री ही जरा भी वुध नही

संतपत सो परवार हो, हा मोह-बस बसदेवजी
ग्रणजांण ऊधौजी रह्या, ग्रण-वोल हा वलदेवजी
सै वोल-वाल्या वैठगा ऊंची चढी जद तावडी
तद गरग मुनि पुग्या वठै तो ज्यान सैरी बावड़ी

परणांम, ग्रासण, ग्ररघ सूं सनमांन पायौ गरग जी
ग्रा वात सुण, उपदेस सगळां नै सुणायौ गरग जी
"मरणौ-जलमणौ, रात-दिन, दुख-मुख, अंधेरौ-च्यानणौ
छिपणौ रै उगणौ, तपत-विरखा, रोवणौ ग्रर गावणौ

बेजोड़ जोड़ी है वणी रैं'वै बरोबर साथ हैं
ग्राया करै ग्रे एक ऊपर एक हाथूं-हाथ हैं
जन्मै जका मरणो न चावै, पण बचे कोयी नही
ऊगै जका छिपणो न चावैं, पण बचे कोयी नही

फूलै-फळै जद वेलड़ी फूली समावै है नहीं
सूकै-गळै जद पातड़ा कोयी बचावै है नहीं
यूं ग्री मिनख जद हरख हो क्यूं देख पावै है नहीं
ग्रर सोग मे छिन ग्रेक भी धीरज दिखावै है नहीं

है फूल विरछां-वेलड़यां में मोकळा फूलै खिलै
पण देवता पर चढण रो सनमान थोड़ां नै मिलै
क्यूं कांमण्या रै सीस केसां माय गूंथ्या जाय हैं
क्यूं बावळै हाथां पड़चा छिन मांय चूंथ्या जाय है

क्यूं सेजरा सिणगार वणकर ग्राप मसळचा जाय हैं
क्यूं हार-गजरां में जड़चा साजन गळै लिपटाय हैं
यूं ग्री मिनख भी मोकळा जग मांय सुख-दुख पाय हैं
कोयी घणां खुरड़ा घसैं, कोयी तुरत मर ज्याय हैं

कोयी चढै है डूंगरां, खाडै घणां पड़ ज्याय है
कोयी करौड़-पती बणैं, कोयी कंगाली पाय है
तरसै घणा ग्री टूक नै, बोळा मळायी खाय है
कोयी सुधारै काम नै, कोयी लगावै लाय है

कोयी जगत नै कस्ट दे, कोयी भलेरा होय हैं
कोयी हंसै है रात-दिन, दिन-रात कोयी रोय हैं
कोयी सलूणां, सोवणा, सुंदर, सुजाण, सरूप है
काळा, कळूटा, कोयला कोयी कुजीव, करूप हैं

पण अंत में सगळा जगत में अेकसी गत पाय है
जद अेक दिन सैं अेक सिरसो धूळ में मिल ज्याय है
यूं सोचकर संपत-विपत में अेक रै'णो, चायजै
सुख-दुःख जो भी आ पड़ै बेबोल सै'णो चायजै

संसार में सै लोग जीवै आपणै श्री अरथ है
जीवै पराये हेत जो वांरो दिखावो व्यरथ है
जो आपरै परवार रै ऊपर भुकाव-खिचाव है
वीं नै बतावै लोग-बाग परेम रो परभाव है

पण वो सुवारथ, मोह है, न परेम रो परसग है
तरु-जड़ बठीनै जा जठी नै सीलरो क्यूं ढ़ंग है
सगळां जणां नै आपरो श्री पूत लागै सोवणो
दस टाबरां में आपरो लागै घणो मन-मोवणो

जे दूसरां री टांग टूटै तो न क्यूं भी सोच है
मरणो ज मांडै आपणै रै आय जे पग मोच है
आंख्या पसार'र देखल्यो सो आपणै रो मोह है
सै आपणै सारू दुनी सूं करै आप दरोह है

श्री भांत सगलै जगत में मतबल तणो ब्योहार है
जिण सूं जितो मतबल सधै उणरो उतो श्री सा'र है
मतबल सरया सुख ऊपजै नीतर मिलै दुख आप श्री
सुख री समाई सै करै दुख मूं बढ़ै संताप श्री

सुख-दुःख, मरणो-जीवणो, होवै न की रै हाथ है
पण मौत रो तो जलम होवै जलम रै श्री साथ है
जो जलम ले वीनै समै पर श्री अठै मरणो पड़ै
जद तक समै आवै नहीं जीवण मतै धरणो पड़ै

यूं सांस कोयी अेक भी ज्यादा नही लेणै सकै
पळ अेक भी पैली पिराण कदै नही देणै सकै
श्री वाळकै रा गिरह-गोचर भी घणां श्री ठीक है
कोयी न मार सकै कठै श्रा बात लो'री लीक है

कोयी विगाड़ न हो सकै सगळा जणां धीरज धरौ
रिछ्या करै भगवान है मत विरथ री चिंत्या करौ
सोळा वरस रै बाद में श्रो आप श्री आज्यायसी
सुगणी, सुलखणी बीनणी नैं साथ लेकर श्रायसी"

आया श्रबार सिरीक्रिसण तो स्याति सगळै छायगी
जादूगणां रै सैनिकां रै कांति मुखड़ै आयगी
उपदेस सुण मुनिराज रौ सतोम सगळा पाइयौ
बसदेवजी रै चित्त मे थ्यावस बरोबर श्राइयौ

चेतौ करयौ हो रुकमणी, ही देवकी राजी हुई
यूं राज-म्हैलां मांय बावड़ती जरा बाजी हुई
निज सीस श्रब सगळा जणां मुनि गरग रै चरणां धरया
परणांम कर पूजा करी, सनमांन साथ विदा करया

## सिमंतक मणी

लजवण उसा-बीनणी आयी हळवैं सी घूंघटियौ खोल
सूरज-मुखड़ै री परभा सूं बरसावै सोम्या अणमोल
सोनैरी किरणां सुहावणी सगळै चिमकै घणी सरूप
समदर री सतरंगी झालां ऊपर तिरती बणै अनूप

हरचा-भरचा है रूंख मोकळा वड़-पीपळ सा घेर घुमेर
हारचा-थक्या बटावूडां नै आप बुलावै झाला दे'र
धोळा-धप बगलां री पंगत री पंगत डोलै अणबोल
अठी-उठी नै उड़ता सूवटिया बोलै मीठा सा बोल

कोयलड़चां आलणियां बैठी पंचम सुर में साधै कूक
गुटर-गुटर-गूं क'वै कबूतर "ओसर कदै न जाज्यौ चूक"
कुट-कुट बोल पंख फैलाय'र घणां सोवणां नांचै मोर
भेळा होय'र बीड़-बणी कांनी चाल्या सै ढांढा-ढोर

रथ-पहियां री जियां काळ रौ चक्कर चालै है दिन-रात
साथ-साथ रितुवां भी चालै सरदी, गरमी अर बरसात
जलम-मरण, मुख-दुख, जस-अपजस, हरख-सोग अर भाव-अभाव
साथ समै रै फिरकी री ज्यूं फिरणौ इणरौ वण्यौ सुभाव

सगळा काम होय ऊंधा जद काळ वळी होवै प्रतिकूल
पासा सूंळा पड़ै आप श्री जणां समै होवै अनुकूल
आप समै पर आंधी चालै, मेव समै-सारू आज्याय
रात समै पर होय अंधेरी, समै पड़यां च्यानणी सुहाय

सुरजी उगै समै-सारू श्री, मतै समै पर श्री छिप ज्याय
बीज समै पर बीजण सूं श्री फसल समै ऊपर पक ज्याय
बिना समै न बेलडी फूलै, खिलै कळयां भी समै बिना न
बिना समै नी बिरछ बडा हो, फळसी डाळयां समै बिना न

नही समै बिन वरणै लुगायां, समै बिना न जर्णे संतान
कोनी मरै समै बिन कोयी, तारा चिमकै समै बिना न
बिना समै नी कोयल कूकै, समै बिना नी नाचै मोर
समै बिना नी उगै चनरमा, बिना समै नी होवै भोर

जंतर-मंतर, जड़ी, श्रोसधी सगळा फलै समै परमाण
समै बिना कोयी न कर सकै किणी चीज रौ भी निरमाण
बिना समै वाळौ नी बोलै, समै बिना सीखै नी चाल
समै बिना आवै न जुवानी, सुत भी करै समै पर न्हाल

समदरिया री झालां में भी समै बिना नी आवै बाण
राजा रंक, रंक हो राजा पळ रै माय समै रै पाण
*समै बिगाडै बणी बात नै, समै सुधारै बिगड़्यौ काम*
समै उजागर करै बंस नै, समै उबारै कुळ रौ नाम

समै पाण श्री हरीचंद सो राजा बिक्यौ वजारां बीच
बस्यौ मसाणां मांय, करचौ कफनी-खोसण रौ कारज नीच
परतापी राजा नळ सूं भी समै कराया ऊंधा काम
गाबा लेय'र तीतर उडग्या, दर-दर हाड्यौ छोड़'र गाम

राजतिलक बदळै देसूंटो पायो राम समै परमाण
भूखा-तीसा बन-बन भटक्या, राजा दसरथ तज्या पिराण
सीता सी सतवंती रै भी समै लगायो वडो कळंक
जीं रै खातर कदै रामजी जोर लगा लूंटी ही लंक



द्वारका

सिरीक्रिसणचन्दर रे भी अब आपै समै लगायौ डंक
बिना बात श्री आरै मांथै लाग्यौ पळ रै मांय कलंक
एक दिनां जद राज-सभा में सज्या हुया हा सगळा साज
आय विराज्या ऊंचं सै सिंहासण उगरसेन म्हाराज

सिरीक्रिसण वळराम कनै श्री बैठ्या वठै पलाथी मार
बीर, सूरमां, सामतां सूं भरचौ पड़चौ हो सो दरबार
वठै भाजकर आया भितर्ण में दुवार रा पैरादार
हाथ जोड़ता वड़ी विनै सूं बोल्या कर-कर जै-जैकार

"घणी खमा, श्रो तेज अणूंतो देख'र होवै है उनमांन
जाणी मिलणै नै आरचा है आपूं-आप सुरज भगवांन
सगळा चकराया, चिलकौ सौ चाल्यौ आवै सांमी-सांम
पळ-पळाट में नही ओर कोयी भी दीख सकै चितरांम

सिरीक्रिसण पळ मांय पिछाण्यौ, सतराजित है जादूराय
कंठा मणी अणूती चिमकै, जीसूं आंख्यां चिलकौ खाय
सतराजित बैठ्यौ निज आसण म्हाराजा सूं कर'र जुहार
सिरीक्रिसण नै कैवण लाग्यौ मणि रौ चिलकौ दिखा दिखा'र

"समदर तट पर भोत दिनां सूं कर रचौ हो म्हे जप-तप, ध्यांन
काल तपस्या पूरण होयी, राजी हुया सुरज भगवांन
साप्रत दरसण दिया आज वै ओर मोकळा श्री वरदांन
आ अणमोल मणी देयर वै म्हांरो करचौ घणौ सनमांन

ओ'रो नांव सिमतक मणि है घणी अणूंती ओरी बात
परतिष्ठा, पूजा सूं दे आ आठ भार सोनौ परभात
चीज अपूरब है थे भी तो निरखौ जरा लगाय'र ध्यांन
चिम-चिम चिमकै है बीजळ सी, पळकौ मारै सुरज समांन"

बोल्या" सतराजित जी, आ मणि घणी सौवणी छटा दिखाय
भोत म्हैरवानी कर थांनै दीनी आप सुरज भगवान
आ सूं सगळै जादूगण री वढची मतै जग में सनमांन

पण अै चीजां राजा-म्हाराजां रै होवै सोभ्या जोग
इण री झड़ नै झेल सकै नी अपणासा साधारण लोग
म्हांरी तो है अरज आप सूं दची म्हाराजा नै उपहार
सोनौ उगळण हाळी चीजां आपै भोत चढावै भार

थांरै खरचै मांय र'वैगो दांन-पुन सूं जो सनबंध
वीं में जितणौ चावै, वीं रौ आपै राज करै परबंध
राजकोस में मणि री होगी चोखी तरियां सार-संभाळ
थांरै जोखम नहीं र'वै जद मिट ज्यावै जी रौ जजाळ"

सिरीकिसण री वातां सुणकर सतराजीत होयग्यो मूंन
मणि देवण री चरचा सूं आ च्यारूं-मेर छायगी मूंन
धीरै-धीरै कह्यौ-"आपरी वातां मन नै घणी सुहाय
पण न परिश्रम सूं पायोड़ी चीजां कोयी सूं दी जाय

छोटो भाआी है प्रसेन जो मांनै नी देवण री राय
छिमां करोगा, थांरी वातां मांनण रौ है नही उपाय
अितणौ वोल वोल-वाल्या आी उठचा वठैसूं सतराजीत
राज-सभा सूं भीर होयग्या मन में क्यूं होय'र भै-भीत

वीनै जातां देख'र बोल्या सिरीकिसण नै यूं वळराम
"आी गरबीलै मूंजी नै थे क्यूं नाराज कर्यौ बेकांम
सीख साथियां देणी चायै पण मांगै मन सूं जद कांय
मांगे बिना धिगाणै देयी सगळी सीख अकारथ होय"

सिरीक्रिसण मीठा सा मुळक्या, जद भाग्री सूं ग्रांख मिलाय
वलभद्दर भी करचो समरथन तद धीरै सी नाड़ हिलाय
राज-सभा भी उठगी बेगी वीं दिन री कर-कर, सो काज
पांच-सात दिन वाद सभा री ग्रोजूं सगळो जुड़्यो समाज

सिहांसण पर जणां बिराज्यां उगरसेन सगळां रै वाद
सतराजीत घणां रै सागै ग्राय बठै कीनी फरियाद
"न्याव करो म्हाराज ग्राज है घर में मांच्यो हाहाकार
सिरीक्रिसण मणि खोस'र ल्यायो है म्हांरै भाग्री नै मार"

सुणकर हक्का-वक्का रै'ग्या सगळा ग्री जादू-सिरदार
ग्रण-धारचो सूंना-पण छायो राज-सभा में थोड़ी वार
फेरूं ऊधोजी क्यूं संभळचा वोल्या मीठा वचन विचार
"सतराजित जी गम खावो थे वात वतावो धीरज धार

सगळां में ग्रपणेस ग्रापसूं साथ ग्राप रै सगळो गांव
बिना बिचारे नही लगायो चाये पण कोग्री रो नांव"
ग्रोजूं घणां ग्राकरा होय'र वोलण लाग्या सतराजीत
"पूरी तरियां सांचो वातां नै बिसरावण री के रीत

दो दिन पै'ली ग्री प्रसेनजित होय'र घोड़ै पर ग्रसवार
मणी गळै में बांध चाव सूं वन में खेलण गयो सिकार
जद वो पूठो ग्रायो कोनी, ढूंढण गया मिनख दो च्यार
"वो जंगल में मरचो पड्यो है, ग्राय वतायो म्हनै ग्रबार"

ऊधोजी पूछ्यो-"फेरूं थे सिरीक्रिसण रो क्यूं ल्यो नांव"
वै वोल्या-"ग्रीं ग्रलवाडै बिन क्यूं नी हो, जाणै सो गांव
पांच-सात दिन पैली म्है ग्रायो हो राजसभा रै मांय
सिरीक्रिसण मांगी ही म्हां सूं मणि पण म्है जद दीनी नाय

तद श्री श्री नाराज होयकर म्हांरै भाभ्री नै मरवाय
निसचै कठै दाव राखो है आप सिमतक मणी मंगाय
ठाढो मारै रोवण दे नीं जग में साची है आ बात
खाट खोसले सोवण दे नी चाये हो ज्यावै परभात"

वडै जोर सूं उत्तेजित हो जद बोलण लाग्या वळरांम
तद वां नै समझा सैनां में आप खड़चा होया घनस्यांम
बोल्या "मेरी भी अरजी है होणूं चाये इण री न्याव
मणि सिमतक ढूंढण रौ भी होणूं चाये तुरत उपाव

हित्यारा नै मिलणों चायै करड़ै सूं करड़ौ श्री डंड
सगळौ अठै खोलणौ चायै मणी-चोरटां रौ पाखड
सतराजित जी नैं पैली म्हें बात वतायी ही सुधभाव
राजकोस में मणी धरण रौ दीन्यौ हो बस अेक सुझाव

नही मणी पर म्हांरौ मन हो, नही मणी री है दरकार
"मणी महाराजां रैं सोंवै," यूं दीन्यौ हो अेक विचार
फेरूं भी अै बडा माणसां म्हां रै मांथै मंढ्चौ कळक
म्हां रौ खोट नहीं है क्यूं भी डंकै-चोट कहूं नी-सक

मणी ढूंढकर ल्यावूं म्हैं जद म्हारै साथ चलै दसपांच
सगळां रौ परमाण होयसी नही सांच नै आवै आंच"
सिरीक्रिसण री बात मानकर जलदी श्री विसरचौ दरबार
मणी ढूंढणै साथ जाण नै घणा सूरमां होया त्यार

जिसड़ौ होय सुभाव मिनख रौ उसड़ा वी रा होय विचार
दूजां लोगां नैं भी वो,, जाणैं समझै वी रै अनुसार
चोखां नै सै चोखा दीखै, बुरा बुरां नै सगळा लोग
सूर सूरमां नै सै लागै, सारा चोर चोरटा-जोग

जियां पीळिया रै रोगी नै सो वस्तू श्री पीळी दिख पाय
वियां निजर खोटा लोगां री च्यारूं-मेर खोट पर जाय
बडा परायी चोट पपोळै, छोटा करैं चोट पर चोट
गुणिया दूजां रा गुण देखै, खोटा निरी खोट श्री खोट

कांन तळै कर दे मारै हैं दूजां री परसंसा लोग
घणी चाव उतसाह दिखावै मतै परायी निंदा जोग
दूजां रै चोखैं कामां नै सुणै लोगड़ा होय उदास
सापुरसां री भी खोटी बातां पर कर ले बिसवास

जीवात्मा परमात्मा री श्री सांच्याणी होवै है अंस
पण माया-जंजाल फस्यौ वो मतै वढातो जावै वंस
काम लोभ मद मो' किरोध री पैड़ी श्रापै चढती जाय
जी सूं जीव श्रोर परमेसर मांय श्रांतरो वढतो जाय

ग्यांन श्रलप श्री होय जीव में परमेसर में पूरो ग्यांन
सीमित सगळा काम जीव रा पण श्रसीव होवै भगवांन
विफळ सकळप होय जीव रा सत्त संकळप है परमेस
जीव बध्यौ माया रैं फदै ईस मुतंतर होय विसेस

जीव छुद्र सूं छुद्र होय, ईस्वर महान सूं होय महान
जीव होंय दोसां री भांडो, ईस्वर होवै दया निधान
श्रागै-पाछै री बातां पर जीव करै कोरा उनमांन
करामलक ज्यूं भूत-भविस्यत सगळा श्री देखै भगवांन

मरजादा री रिछ्या सारू परमेसर जद ले श्रौतार
सांगोपांग सांग सलटावै धरती पर नर-रूपक धार
मिनखां री तरियां श्री जोड़ै मिनखां सूं सगळा सनबध
वैर, मितायी, प्यार, लड़ायी री भी करै सरब परबंध

जस-अपजस, कळंक-स्याबासी सगळा सैणा पड़ै समांन
मिनखां री ज्यूं इण वातां पर देणो पड़ै अणूंतो ध्यांन
सिरीकिसण पर भी कळंक औ दरसायो पूरो परभाव
अंत दूध रो दूध और पाणी रो पाणी होसी न्याव

द्वारका

## मणी री हेर

ऊंनाळे री करड़ी रुत में बाळू जाणी बाळे
लूवां रा लपकां मिस जाणी आभो आग उछाळे
तावड़िया रो धणी धरा में आय'र लाय लुगावै
बूंद-बूंद पाणी रै सारू सगळां नै तरसावै

जीव-जंत जंगळ रा जळ बिन भटभेड़ा सा मारै
फिरै हाड़ता च्यारूं-कांनी मिरग तीस रै लारै
धरती तपै, तपै अंबर भी तप-तप सिलगण लाग्या
घर-दुवार, गोखा-आंगण तज लोग बारणै भाग्या

सिरीक्रिसण इसड़ी रुत में भी कोनो बैठ्या ठाला
मणी ढूंढणै जावण री बातां री घाली साला
साथीड़ा जद देवण लाग्या दूर जाण सूं टाळा
तद सगळां सूं आगै-आगै होग्या आप उपाळा

सिरीक्रिसण रै नैणा जांणी जोत जुवांनी जागै
मुखड़ै पर सोभ्या बसत री सांवरती सी लागै
गोळ-गोळ गालां पर जांणी फूल गुलाब खिल्या है
बैणां में जांणी कोरा इमरत रा घूंट मिल्या है

बळती लूवां रा लपका जद आवें मूंडै आगै
तो तपतै सुबरण री तरियां घणी सोवणी लागै
तीखै तावड़िये रै सामों नैण मतै मिच ज्यावै
आयण-बेळा रै कूंळा कंवळा री सोभ्या पावै

काळा-काळा बाळ भाळ में होळै-होळै हालै
मोर-मुकट रै नीचै जांणी नाग-नागणी चालै
ऊंचौ सो लिलाड़ गरिमा सूं घणो ऊजळौ लागै
पगल्यां रै ज्यूं पंख लग्या हो बेगा-बेगा भागै

कह्यौ-"आज रौ कांम काल पर जिको छोडणौ चावै
के वैरौ वो आप काल रौ सुरजी देख न पावै
छिण-भंगुर है मिनख जमारौ पळ रौ नहीं ठिकांणौ
कद जम रौ आ ज्याय बुलावौ जांणै कुणसौ स्यांणौ

औं सूं जो पळ होय हाथ में वो सोनै रो पळ है
वीं नै बिरथ नहीं खोवणियौ पावै मीठौ फळ है
छिण औ छिण रै मांय बुढापौ नेड़ै-नेड़ै आवै
जीवण नाटक रौ नीरस सौ दिरस दिखाळी द्यावै

जो चातर सुरग्यांन समै रा मोल ठीक सूं जांणै
वो ततकाल कांम करणै रौ परण हिया में ठांणै
ओसर पर बायौड़ा बीजां में औ कूंपळ आवै
ओसर बीत्यां बावणिया तो क्यूं भी फळ नी पावै"

वां री बातां सुण सगळा औ बेगा-बेगा भाग्या
च्यारूं-कानी निजर पसार'र सूतर ढूंढण लाग्या
आगै-सी क प्रसेनजीत रौ घोड़ो मारयौ पायौ
वी'नै तो हो गीध-कांवळा जगां-जगां सूं खायौ

बठै किणी माणस नै मारण रा अैनाण पड़्या हा
आपसरी में लड़णै रा भी सै सैनांण पड़्या हा
च्यारूं-मेर ढूंढणै सूं जद खोज ना'र रा पाया
ना'र प्रसेनजीत नै मारयौ अै परमांण जचाया

ना'र मरघोड़ी लाध्यो थोड़ी दूर गया जद आगै
तद सै सोची ना'र लड़यो हो अठै रींछ रै सागै
खोज रीछ रा चलतां-चलतां एक गुफा में बड़ग्या
गुफा भयानक देख'र सगळा घणै सोच में पड़ग्या

बोल्या-"आपां नै आगै सूं श्रो तो बेरो पटग्यो
सिरीक्रिसण पर आयो झूठो संकट सगळो कटग्यो
ना'र प्रसेनजीत नै मारयो रींछ ना'र नै मारयो
अब आगै नै चाल्यां कोयी कस्ट मिलै अण-धारयो"

सिरीक्रिसण जद कयो -"कांम अब नहीं बीच में छोडौ
विघनां रै डर भै सूं मतना मूंडो मत्तै मोड़ौ
औ कळंक मिट ज्याय गुफा रै मांय एकलो जास्यूं
जठै-कठै मूं जियां-कियां भी मणी ढूंढकर ल्यास्यूं"

सिरीक्रिसण औ गया अेकला साथ्यां नै समझाय'र
लारै-लारै गयो सात्यकी छांनै-सी सुसताय'र
थोड़ा दिन में होय आखता बाकी सै घबराया
सिरीक्रिसण नै नहीं आवता देख'र पूठा आया

वां री बातां सुण दुवारका बासी भी भरमाया
कुसळ-खेम मंगळ सारू सै देश्री देव मनाया
माताजी रै मिंदर मे जा करी देवकी पूजा
संकट में माश्री बिन कोयी कांम न आवै दूजा

एक मास में सिरीक्रिसण जद सात्यकि सागै आया
साथ सोवणी राजकंवर भी अेक ब्याव कर ल्याया
राज-सभा री एक जरूरी बैठक तद बुलवायी
जीं में सिरदारां रै सागै सगळी पिरजा आयी

मणि रै खातर जण-जण रै मन घणी अजकै सी हांरी
संकड़-भीड़ में आखी जनता बैठी दो'री-सा'री
बडै भवन में तिल-मातर भी जगां न खाली दीखै
भेद बोल-वाल्या बैठण री कोयी इण सूं सीखै

महाराज री अग्या पाय'र सात्यकि होयौ ऊबौ
जोर जोर सूं बोल्यौ जांण'र जनता रौ मनसूबौ
"सिरीक्रिसण रै लारै जद म्है चाल्यौ छांनै-छांनै
घोर अंधारै मांय नहीं क्यूं भी दीखै हो म्हांनै

घणी देर रै मांय सांमनै जद उजास सौ लाग्यौ
तद मेरै मन में जीवण रौ क्यूं जुगाड़ सौ जाग्यौ
आगै अेक बडी पोळी में सुरजी सौ चिलकै हो
कनै पालणै मांय सोवणौ बाळकियौ किलकै हो

थोडी दूर खड़ी टाबर री धाय सरीसी नारी
सिरीक्रिसण नै देख जोर सूं वा किलकारी मारी
हड़बड़ाय कर बाळकियो भी आपै रोवण लाग्यो
परै सोवतौ कोयी ठाढौ देव मतै ई जाग्यो

बडी जोर सूं गरज्यौ पळ में रूप रीछ रौ धारयौ
सिरीक्रिसण रै कांनी आय'र कांधै हत्थौ मारयौ
अै भी मारयौ डुक्क कोल में वी रौ दाव उकाय'र
दूर परैसी पड़यौ बेग सूं गिरणा फोरी खाय'र

रीस-भरयौ वो उठ बेगो सो सिरीक्रिसण सूं भिड़ग्यो
दोनूं जोध-जुवांना में जद जुद्ध जोर सूं छिड़ग्यो
लुक छिपकर म्है भी देखै हो वांरी सगळी वातां
कदै अेक दूजा रै मारै जमा जमाकर लातां

कदे करै वै हाथा-पायी, कदे क मारैं मुक्का
कदे थाप मारैं मांथै पर, कदेक मारैं डुक्का
रीछ पछाड़ण नै वैरी नैं पूरौ जोर लगावै
उछळ-उछळ कर सिरीकिसण पण तावै कोनी आवै

दोनूं जोधा वड़ा सूरमां धन-धन है दोन्यां नै
दोनूं लड़ता र'वै रात दिन हार न कोई मांनै
भांत-भांत सूं चोट लगावैं दाव नुवा अजमावै
बार-बार कर-कर हुंकारा दूणौ दरप दिखावै
गिगन बिमानां वढया देवता देख-देख हरसावैं
जुद्ध अणूंतो देख मोकळा फूल तळै बरसावैं
लडतां होयां जणां घणां दिन रीछ अटकणै लाग्यो
वीर मन में अेक अपूरब भगति-भाव सो जाग्यो

❀ ❀ ❀

हाथ जोड़ कर सरधा सारू सिरीकिसण रै पगां पड़्यो
वीं'रै मोटै वळ-विकरम री सगळो गरब गुमांन झड़्यो
बोल्यो-"आप कूण हो मालक, जो यूं कुमत हरी मेरी
मुक्का मार-मार कर सगळी नस-नस ढीली कर-गेरी
जोड़-जोड़ तोड़्यां सैं मेरा चूंळ-चूंळिया चर्राया
नाड़-नाड़ सैं भड़कण लागी रूंग-रूंगटा थर्राया
मेरै पिरभूं सिवा न कोई दसा कदे आ करण सकै
मेरै मन में वढयो अणूंतो गरब-गुमांन न हरण सकै"
सिरीकिसण भी क'यो मुळक कर "ओजूं ऊवा होय लड़ो
जे लड़णै री मनस्या नीं हो क्यूं वैरी रै पगां पड़ो
मरणै सूं डर विनती करणी सा-पुरसां री नीत नहीं
रण-रातां मद-मातां सूरां-वीरां री आ रीत नहीं"

घणौ मांन बोल्यौ फेरूं वो-"मालक अब मत भरमावौ
सरणागत सेवग पर पिरभू दीठ दया री करवावौ
निसचै थे हो सिरीराम रघुवंसी म्हांरा श्री ठाकर
म्हे हूं जामवान बूढळियौ थांरे चरणां रौ चाकर

खाली म्हांरा नही आप हो तिरलोकी रा भी स्वामी
मुसटंडा नै डंड देणिया गरब गुमावणिया नामी
गरब-गुमांन-भरयौ म्हैं पिरभू, नहीं आपनै जांण सक्यौ
भेस बदळ कर आया हो जीसूं म्हे नही पिछाण सक्यौ"

जांमवांन आ बात बोलतौ चरणां पड्यौ सनेह-भरयौ
सिरीक्रिसण भी राजी होय'र वी रै मांथै हाथ धरयौ
सरधा-भगती, विनय भाव सूं खड्यौ होय ओजूं बोल्यौ
"नाथ, हाथ माथै पर धरता अंतर रौ कुंवाड़ खोल्यौ

तन री सगळी पीड़ा मिटगी मन रौ संकट दूर हुयौ
चौतरफी चिंत्या रौ चक्कर आपै चकनाचूर हुयौ
कुमती रौ पड़दौ भी फाटयौ, चेतै ग्यांनणियौ आयौ
जांणी एक अंणूतै आणद-समदर में गोतौ खायौ

भगत भरम सूं भूल ज्याय है पण भगवांन नही भूलै
मिनख गरब सूं पूल ज्याय है पण भगवान नही पूलै
रावण नै मारयौ हो जद थे सगळां नै सनमांन दियौ
रीछ बानरा नै भी आपै मनचायौ वरदांन दियौ

वारी आयी जद म्है बोल्यौ-"रण सूं म्है धाप्यौ कोनी
म्हांरै बळ नै बिकरम नै तो कोयी भी नाप्यौ कोनी"
आप क'यी "थे चावो तो म्है थारी भूख मिटा देवूं
मीठै सूं अखतायोड़ै नै कड़वी घूंट गिटा देवूं"

हाथ जोड़ म्है अरज करी हो "थांरै साथ न लड़ पावूं
चाकर होय'र मालक रै सागै ही कैयां भिड़ ज्यावूं"
आप मुळक कर कह्यो–"ठीक है थां सूं जुद्ध मचावूंगो
थांनै वेरो नहीं पटैगो इसड़ो खेल रचावूंगो"

म्हैं मूरख तो भूल गयो हो आप नहीं भूलण पाया
म्हैं न रीस में समझण पायो इसड़ो सांग वणा आया
म्हैं कुजीव हूं, अग्यांनी हूं पण हो आप सरब ग्यांनी
फेरूं भी क्यूं सही मोकळी म्हांरी चोटां मनमांनी"

सिरीकिसण भी क'यो –"थांरलो झांपड़ मीठो लागै हो
ज्यूं-ज्यूं थे मारै हा त्यूं-त्यूं प्यार अणूंतो जागै हो
जामवंत जी, म्हैं तो थांरै कनै कांम सूं आयो हो
एक मणी-चोरण में लोगां म्हांरो नांव लगायो हो

मणी हिंडोळे जड़ी अठै है, ना'र मार थे ल्याया हा
औं नै ढूंढण खातर थांरै खोजां श्री म्हे आया हा
अब जे मणी सूंप दयो म्हांनै जाय कळंक मिटा देवां
झूठो नांव लगावणियां नै पाछो थूक गिटा देवां"

जांमवांन कर जोड़'र बोल्यो–"नाथ, दया रो पातर हूं
धणी आप हो, मणी आपरो, म्हे तो चाकर मातर हूं
औ भाठा रो टुकड़ो मांग'र क्यूं सेवग नै सरमावो
भांत-भांत रा सांग दिखाय'र मतां भगत नै भरमावो

एक बिनती मेरी भी है, वीं पर जरा विचार करो
लाडण बेटी जांमवती है वीं रो थे उद्धार करो
म्हां री सरब सुलखणी किन्या थां पर जीवन हारी है
श्रीनै थे अपणावो पिरभू, आ सदीव सूं थारी है।

थां रै विना न आ कोयी सूं जग में ब्याव रचावैगो
अठै आप जे नट ज्यावौगा, पट दे श्री मर ज्यावैगी"
सिरीक्रिसण जद कह्यौ मुळक कर –"किणविध बात वणावोगा
म्हां रौ ब्यांव होयगौ पैली के दूजी परणावोगा"

जांमवांन बोल्या –"करुणामय कीज्यो म्हां पर रोस नहीं
सामरथा नै सो क्यूं साजै, कोयी देवै दोस नही
सरणागत सेवग रौ अब थे औ मोटौ उपगार करौ
हे भगवांन, भगत रौ औ टूटयोड़ौ बेडौ पार करौ"

सिरीक्रिसण नै बेवस होय'र हांमळ भरणी पड़ी जणां
म्है भी औसर देख'र वां रै नेड़ै हायौ खड़चौ तणां
सिरीक्रिसण क्यूं करड़ा-देख्या पण म्हैं पूठौ गयौ नहीं
मंगळ रौ मोकौ पिछांण अैं फेरूं क्यूं भी कयौ नही

जांमवांन बेटी रै साथै दश्री दायजै चीज घणी
अणगिणती धन-दरब, मोकळां रतनां सागै दश्री मणी
नुवीं, बीनणी साथ लेय म्हे तुरत पाण आया पूठा
झूठा नांव लगावणिया अब सगळा श्री पड़ग्या झूठा"

अितणी वात बताय सात्यकी वैठ्या अपणै आसण पर
झट देसी बळराम बोलणो चावै हा रीसां भर कर
सिरीक्रिसण पण सैनां श्री सैनां में वां नै समझाया
वां रै उगर विचारा नै भी धीरै-धीरै हिमळाया

जद ऊधौजी उठकर बोल्या -"सतराजित जी, आ ज्यावौ
मणी सिमंतक चोखी तरियां देख-भाळ कर ले ज्यावौ
आगै सूं थे सोच्यां समझ्यां विना न क्यूं फरमावोगा
विना बात श्री नही किणी रौ झूठौ नांव लगावोगा"

सतराजीत नाड़ नीची कर बठै बोल-बाल्या आया
छांनै-छांनै चाल पड़्या वै मणी उठाय'र सरमाया
बातां सुण जादू-बीरां नै मोद-हरख होयो भारी
सिरीकिसण री जै-जै करती पिरजा घरां गयी सारी

—*—*—

## सतभांमा रो व्याव

बाग-बगीचां बीच चमेली कळियां झूलै
बन में हरसिंगार री डाळी-डाळी फूलै
मैं'कै फुलवाड़्यां रै मांय रात की राणी
तारां री झिलमिल सूं रातां घणी सुहाणी

निरमळ नभ रै मांय चनरमां दूणो दीपै
रात च्यांनणी सगळां रै इमरत सी लीपै
सोरभ भरी भाळ सीळी मधरो सी चालै
हरी-भरी पत्यां भी होळै-होळै हालै

सगळी जीया-जूण नींद में सुख सूं सोवै
सतराजित रै चित में नित-नित चिंत्या होवै
सिरीक्रिसण रै डरसूं वीं रो तन-मन कांपै
नैणांपलक-पलक भर पूरी रैण न झांपै

भूख-तीस सैं मिटी, नहीं क्यूं खावै-पीवै
तन तूजें, मन मूजें जद, यूं मरै न जीवै
डूब्या रै' वै आठूं पै'रां सोच-फिकर में
कनक उगळणी मणी कसूंणी आयी घर में

धन-धरती-धण तीनूं होय राड़ री जड़ हैं
इण रै कारण भला-भला चालै ऊजड़ हैं
धन रै लालच मणी न म्हैं राजा नै दीनी
सिरीक्रिसण री उचित सला पर बात न कीनी

मणि-चोरण री वां री झूठो नांव लगायो
भांत-भांत री बातां री तोफान उठायो
पण इण री परणांम भुगतणो होगो वेगो
अब बळरांम न सोरा सांसां जीवण देगो

श्रीं चित्या में चित चिनेक भी चैन न पावै
नही किणी री कोयी बातां कदै सुहावै
जीं सूं सगळा घरहाळां री आफत आयी
कोयी नै क्यूं भी उपाव नी पड़ो दिखायी

छेवट बडकुंवार बेटी सतभांमा-बाश्री,
बोली - "बावोसा, थांरै के चित्या छाश्री
मदा जादवांमांय ना'र री जियां घड़क्या
आज आप किण भात चाल चतरायी चूक्या

आडा मूंछ्यां बाळ, पड्या खाडा नैणां में
खासी घणी उदासी बापर री बैणां में
किणी चीज री चाव नहीं थांरै चित आवै
नही पदारथ कोयी भी थां रै मन भावै

सांमी मूंडै नहीं किणी सूं बात करो थे
बैठ्या-बैठ्या रातां नै परभात करो थे
तन-मन नै अब आप अकारण मतां सतावो
थांरै चितरो म्हांनै सांचो भेद बतावो

घणी वार सतराजित टाळा-टूळी कीनी
पण जद दरमें भी सतभांमा ढील न दीनी
तो बोल्या -"डर सिरीक्रिसण रो है म्हांरै मन
के बेरो के देसी म्हांनै डंड जनार्दन

पेली। जद म्है राज-सभा में मणी दिखायी
सिरीक्रिसण वीं वखत राय ही एक वतायी
अै चीजां तो राजकोस में सोभ्या पावै
नहीं ग्रोर कोयी नै भी अै सुख पूगावै

म्हैं लालच रै वस हो वां री बात न मांनी
वां नै नीचौ दिखवाणै री मन में ठांनी
मणि खोयी जद वां री झूठौ नांव लगायौ
राजसभा में जाय घणौ उतपात मचायौ

वै झूठै कळंक नैं भी सिरमाथै लीन्यौ
जतन मणी ढूंढण रौ वडी लगन सूं कीन्यौ
मणी ल्याय कर सगळां सामी म्हांनै दीनी
राजसभा में जनता री स्यावासी लीनी

वां नै जो म्है इतणी वार कस्ट पूगाया
वदळौ के लेगा न कदे वै मोकौ ग्राया
इण बातां री चिंत्या है म्हांरै मन छायी
मोत दीख री है म्हांनै सिर पर मंडरायी"

बाबळ री अै वातां सुण सतभामा वोली-
"भली करी थे जो अव मन री घूंडी खोली
सिरीक्रिसण तो इतणा खोटा मिनख न लागै
जां रै डर यूं थारी भूख-तीस सैं भागै

सगळी चिंत्या छोड राय थे मांनौ म्हा री
जड़ामूळ श्री आफत री आ मणि है था री
थे अव लालच लोभ मता राखौ श्री धन में
सिरीक्रिसण नै सूंप स्यांति-सुख पावौ मन में"

सतराजित यूं बोल्या सतभांमा नैं हसंकर-
"दो'री घणी निकळणी किणी जाळ में फंसकर
सिरीक्रिसण कुण सैं लालच सूं मणि लेवैगा
कुण सैं कारण म्हां नैं अभैदांन देवैगा।

सतभांमा बोली - "चतरायी करणी चाये
सफळ होणरी हीमत मन में भरणी चाये
झूठै झोंझट-जंजाळा सूं मूंडौ मोड़ौ
सिरीक्रिसण सूं इसड़ौ कोयो सगपण जोड़ौ

जो सूं थांरी भेंट आप लेवैं आदर सूं
थां रौ भी पीडौ छुट ज्यावै झूठै डर सू"
यूं समझाय गयी सतभांमा जद घर भीतर
राजी होयौ सतराजित तद सोच-समझ कर

"सतभांमा री सिरीक्रिसण सूं ब्या जे होवै
तो सगळा औ पाप पुरबला म्हां रा धोवै
पण सतधन्वा सूं जद औ री हुयी सगायी
तो किण भांत बात आ आगै बणै बणायी

के ओ सगपण आपै-आप छोडणौ पड़सी
क्रितवरमा अक्रूर नही के औं में अड़सी
अब यूं कोल-करार छोडणौ होवै खोटौ
बात बदळणै सूं न मिनख के होवै छोटौ

मापुरसां रै बात बाप ज्यूं एक ज होवै
एक बात रै लार मोकळा सरबस खोवै
पण औं रौ दूजो उपाव अब निजर न आवै
सिरीक्रिसण सूं सगपण बिन मन चैन न पावै"

उठता र'या विचार घणां यूं वां रै मन में
छेवट सुरता लागी सांची मन-मोवन में
संका सगळी मिटी दूर दुवधा सा होयी
मति में थिरता ग्रायी चितरी चिंत्या खोयी

सांच न सतराजित नै घणो सरूप बताणो
पण है कोरी झूठ कुडोळ करूप बताणो
मूंडो लंबांतरो, ग्रांख है वडी न छोटी
दांत लड़ी मोती री, नाक सुढाळू मोटी

नाड़ मूंतवा, गाल उठावू, रंग सांवळो
मोटा होठ, मूंछ वाकडली, बोल तावळो
करड़ा ठोस हाथ-पग, काया घणो लोच है
मुखड़े गरव-गुमान, ग्रांख में पण सँकोच है

त्यार होय जद सिरीक्रिसण रै म्हैलां पूग्या
तद वै बूझयो-"ग्राज कठीनै सूरज ऊग्या"
हाथ जोड़ सतराजित बोल्या"-अेक ग्ररज है
म्हांनै थांरी मरजी री ग्रब घणी गरज है

म्हां री वडगर बेटी है सतभांमा बाग्री
बी नै म्है थांरै सागै चावां परणाग्री
थे ग्रब हांमळ भरल्यो तो संकट कट ज्यावै
म्हारै मन रौ भार घणो ग्रारै हट ज्यावै"

सिरीक्रिसण मुळक्या -"ग्रो के फैताल करो हो
क्यूं किन्या ब्यायोड़ै वर रै साथ वरो हो
म्हांनै तो पैल्यां ग्री परणाया है दो वर
ग्रब म्है यूं के करता रैस्या ब्याव बरोबर



द्वारका

ओं कारण सूं म्हानै तो अब छिमां करावो-
कोयी दूजै जोड़ी रै वर नै परणावो"
सतराजित भी बोल्या-"बात क'यी थे लाखी
पण सतभामा तो आटी-पाटी ले राखी

जे बरस्यूं तो सिरीक्रिसण नै ओ म्है बरस्यूं
नीतर अपणा देह-पिराण बिसरजन करस्यूं
अब थे श्री म्हांरी लिज्या राखो तो राखो
किणी तरां मूंडै सूं एकरसां "हां" भाखो"

सिरीक्रिसण तद कह्यो-"बात आ सारथ कोनी
म्हैं इसड़ी हांमळ भरणै में समरथ कोनी
सगपण सिरसी बात मायतां सारू सो'वै
वां में हां ना करणै री ज सामरथ होवै"

सतराजित जी नही घणा दिन बिरथ गंवाया
उगरसेन बसदेव-देवकी नै बतळाया
भांत भांत सूं ऊंची नीची बात बणायी
सगपण करणै री सगळी जुगती समझायी

उगरसेन सै सूं बतळाय'र बातां मांनी
ओ लूंठो सगपण करणै री मन में ठांनी
एक'र ओजूं सिरीक्रिसण रो ब्याव रचायो
घणै उच्छवां सूं साथ्यां रमझोळ मचायो

त्यारी होवण लगी ब्याव री दोनूं कांनी
भांत भांत रा साज सजावण लाग्या जांनी
सखी सहेल्यां सतभांमा नै छेड़ण लागी
"कद परेम री जोत भायली रै मन जागी"

सतभांमा रै रूप कनक-किरणां सो फूटै
ज्यूं केसरिया रंगां भरया फुंवारा छूटै
ऊंचै सै लिलाड़ पर मोटी काळी आंख्या
कांम-कवाण भुंवारा, लांबी-लांबी पांख्या

सुरजमुखी रै खिल्या फूल सौ मुखड़ो सोवै
गालां तणी गुलाबी रंगत मनड़ो मोवै
मद उझळै नैणां, वैणां मिसरी घुळ ज्यावै
मुळकै मीठा अधर च्यानणी सी खिल ज्यावै

कूंळै सै पगल्यां री चलगत लागै प्यारी
लूंठी सी पतळी कड़री मरोड़ श्री न्यारी
रेशमिया चीकणा र काळा केस सुहावै
निरखतां नैणां में धाप न दर मे आवै

सतराजित बेटी रौ ब्याव चाव सूं कीन्यौ
घणै मांन सनमांन दायजौ दूणौ दीन्यौ
मणी सिमंतक सिरीक्रिसण री भेंट करी जद
बोल्या चिमक'र तुरत मणी पूठां देतां तद

"थे चावै सौ देवौ म्हैं सिरमाथे धरस्यूं
किणी चीज रै खातर अठै विरोध न करस्यूं
पण आ मणी देखतां पाण हियो भटकै है
मगळौ श्री अतियास मतै मन मे खटकै है

नही लेण पावूं आ म्है सो छिमा करोगा
कदै न दूजौ भाव आप मन मांय धरोगा"
सतराजित फेरूं भी काढया न्हौरा बोळा
सिरीक्रिसण पण साफ मुकरग्या वणकर भोळा

सतराजित जो यूं बेटी नैं विदा करी जद
बोली होगी बंद आंसुवां आंख भरी तद
ज्यूं वेलड़ी उपाड़'र दूजी जगां लगावै
ज्यूं अकास रा तारा टूट धरा पर आवै

त्यूं पाळी-पोसी बेटी जद परै खिनावै
तद आपै औ मां-वापां री हियो भरआवै
कण्व-सरीसा रिसि-मुनि भी जद रोवण लाग्या
टळक-टळक आंसूड़ां सूं मूं धोवण लाग्या

तद गिरस्थ मिनखां री तो के कैंबत होवै
जे बेटी री बिदा समैं मन धीरज खोवै
सिरीक्रिसण सतभांमा बिदा होय घर आया
भांत-भांत सूं मोद - मंगळाचार मनाया

## नौवों सरग

# मणी रौ मोह

जाडो जुलम जोरां पड़यौ, बोझा मतै मुरझायग्या
नाळां जिम्यौ पाळौ, पलासां पानड़ा कुमलायग्या
वड़, खेजड़ा, पीपळ, सिरस अर नीमड़ा पीळा पड़या
जग रा जिनावर जीव जद सूँ धूज धरती में वड़या

तारा वरफ रै मांय धुप-धुप धप्प धर धोळा पड़या
चिलकै घणां जांणी निसा री चूनड़ी में हो जड़या
परभात वरसै धूंर, धूंवा री वंध्यौ ज्यूं गोट सौ
असराळ सीळी माळ मारै काळजै में सोट सौ

दिन-रात सतधन्वा हियै पण रोसरी अगनी वळै
जो मांन सतराजीत मारयौ वो नहीं मन सूं टळै
अपमांन री वदळौ न जद तांणी मिनख लेणै सकै
संतोस तद तांणी कदै मन नै नहीं देणै सकै

अखताय सतधन्वा घणौ अक्रूरजी कांनी गयौ
इण वात री बिरतांत सरब वताय कर फेरूं क'यौ
"म्हाराज, सतराजीत रै सिर सीग अब बोळा वढ्या
सनबंध जोड़ सिरीक्रिसण सूं भोत श्री ऊंचा चढ्या

अब आप लोगां नै उपाव जरूर करणौ चायजै
इसड़ै कुर्मांणस रौ गुमांन-गरूर हरणौ चायजै
म्हारै न मन ही स्यांति श्री मर ज्याय जद तांणी नहीं
श्री नै निरख कर जीवतौ लेवै पितर पांणी नहीं"

अक्रूर बोल्या –"सान्त सतधन्वा, न होय उतावळौ
तूं तो उफणरचौ है घणौ कोयी हुवै ज्यूं बावळौ
अब मोच मन रै मांय सतराजीत के अनरथ करचौ
बेटी न थांनै दो जणां तूं देखणौ चावै मरचौ

वाम्री जणां न सिरीक्रिसण नैं छोड़ दूजा नैं बरै
तद बापड़ौ लाचार सतराजीत भी तो के करै
चीतै बुरौ जो दूसरां रौ वो मतै दुख पायसी
घर घोसियां रा वाळ कर के ऊंनरा सुख पायसी

मर ज्याय सतराजीत तो के हाथ तेरै आयसी
हित्या करण रै पाप सूं बेमौत तूं मर ज्यायसी
इण भांत सोच विचार अपणौ कांम करणौ चायजै
यूं सुख पराये दूवळौ होय'र न मरणौ चायजै"

गरमाय सतधन्वा क'यौ –"मेरै न वसरी बात है
ब्यौहार सतराजीत रौ दिन घाल रचौ दिन-रात है
मन मांय सतराजीत नै मारचां बिना जक नी पड़ै
सोचूं विचारूं भोत हूं पण भाव बदळै रौ अड़ै

अब सीख क्यूं लागै नही मांथौ घणौ भरमायगौ"
यूं बोल सतधन्वा पगां पूठां बठै सूं आयगौ
अब जाय क्रितवरमा कंनै बोल्यौ -"परण धारचां बिना
भो जीवणौ धिरकार सतराजीत नै मारचां बिना

पण परण पाळण में बरोबर साथ थांरौ चायजै
है काम करड़ौ भोत सिरपर हाथ थांरौ चायजै
अक्रूर जी तो आज म्हांरौ साथ देणैं में डरै
बेमौत कूण सिरीक्रिसण सूं वैर कर मत्तै मरै

जीं काळजै पर चोट लागै भोगणी वीं नै पड़ै
दूजा सिरक ज्यावै परै पण आप वो क्यां में बड़ै"
पडुतर मिल्यो–"ओ कांम तो थे अेकला ई कर सको
ईं गादड़ै रा तो पिराण छिनेक में थे हर सको

कोयी अंधेरी रात मौको देख मन में धार ल्यो
सोतां थकां ई सीस थे तरवार मार उतार ल्यो
तकिया तळै राखै मणी वी नै उठाय'र ल्याय ज्यो
सोनो उगळसी मोकळो, परदेस मोज मनाय ज्यो"

आ बात सतधन्वा हियै परवार जोस बढायगी
मनमें दब्योड़ी अगन नै चोखी तरां सिलगायगी
इरखा–दुवेस विचार जद यूं मिनख रै मांथै चढै
तो पाप कांनी आप ई वी रो झुकाव मतै बढै

बळरांम अोर सिरीकिसण हा हस्तिनापुर नै गया
तद भीत भाव–कुभाव वीं रै चित्त में उठता र'या
"मौको मिल्यो है भाग सूं ओ मूकणो नी चायजै
ओसाण मिलणै पर कदै भी चूकणो नी चायजै

बदळो न ले जद बैर रो वो सोवणै पावै नहीं
मुखड़ै लगी काळस कदै वो धोवणै पावै नहीं
तलकाल करणो चायजै क्यूं कांम करणो होय जो
होणै सकै नी सफल वो बिरथा समै नै खोय जो"

इण भांत सतधन्वा बरोबर तोल सगळी बात नै
तरवार नंगी हाथ ले चाल्यो धरा सूं रात नै
आधी अंधेरी रात ही सूनां सरब मारग पड्या
सगळां घरां रा बारणा–बारघा, कुंवाड़ा हा जड्या

वो बोल-वोल्यो जाय सतराजीत रै म्हैलां चढघो
ग्रर डागळी नै डाक कर बेधड़क ग्रागनै बढघो
बेचेत सतराजित वठै सूत्यो पड़यो हो साळ में
वेरो नही हो जा पड़ैगो काळ हुंदै जाळ में

ततकाल सतधन्वा उतारघो सीस जद तरवार सूं
तो लाल होग्या गावला सै रकत री पिचकार सूं
तकिया तळै सू मणि उठा भाज्यो कुंवाड़ा खोल कर
लोगां पिछाण'र "चोर सतधन्वा" बतायो बोल कर

पण थूक मूंठघा में दड़ा ग्री छंट वो तो भाजियो
काळा कुकरमां पर नही मन में जरा भी लाजियो
वो तुरत बोल्यो -जाय कर ग्रक्रूर क्रितवरमा कनै
"म्हैं मार ग्रायो दुष्ट नै ग्रब थे वचा लीज्यो म्हनै"

ग्रक्रूर सोच क'यो "हखाळी कूण कोयी री करै
हाथां कमायै पाप रा फळ ग्राप नै भोग्यां सरै
मतवल सध्यो जे ग्राप रो तो डंड दूजो कुण भरै
जद ऊंखळी में सिर दियो तो मूसळी सूं क्यूं डरै

फळ तो कमाया पाप रो बेगो मिलै ग्री लोक मे
जे देर भी होवै कदै निसचै मिलै पर-लोक में
साथी घणां सुख में मिलै दुख मे न कोयी साथ दे
कुण टांटिया नै छेड़ छातै में ग्रकारण हाथ दे"

ततकाल सतधन्वा कह्यो -"फळ भोगस्यूं म्हैं पाप रो
वी में कठै क्यूं भी नही सहजोग चावूं ग्राप रो
पण मणि सिमंतक ग्राप नै दं'चू ग्राप नीकां राखज्यो
ग्रर बात ग्रीं सारू नहीं क्यूं भी किणी नै भाखज्यो

जे राम राजी राखसी तो आप श्री आस्यूं कदै
भगवत दिखासी दिन भला तो साथ ले ज्यास्यूं कदै
नीतर मणी नै पूजकर फळ आप श्रीं रो भोग ज्यो
सोनो उगळसी मोकळो सैं भांत मुख आरोग ज्यो"

यूं बोल सतधन्वा तुरत श्री बोल-चाल्यो चल दियो
अक्रूर भितवरमा हियै मे सांस अब सुख रो लियो
"जे देखतो कोयी अठै श्रीं नैं हमीणै साथ में
तो आपणी रै'ती सदा श्री नाड़ बी रै हाय में"

पाछै बठी नैं रावळे बेरो पटयो जद सोर सूं
तो रोवणो अर कूकणो मांच्यो घणै श्री जोर सूं
बेचेत मुणतां पांण होग्री सत्तभांमा एक बर
पण चेत होतां श्री दड़्की सिंघणी सी चिमक कर

"निरसंस सतधन्वा करी हित्या हमीणै बाप री
पण गांव में कोयी करै चरचा न बी रै पाप री
जे आततायी नीच सूं बदळो चुकावूं म्है नहीं
तो अब कदै भी पुंन-फळ री छांट पावूं म्हैं नही

राखो लखीणी लोथ नै भरपूर तेल कड़ाव में
सगळां जणां लाग्या र'वो श्री रै रखाव-बचाव में
म्है आप जद तक हस्तिनापुर जाय कर आवूं नहीं
अर साथ मांय दुवारका रै नाथ नै ल्यावूं नही

तद तक हमीणै बाप-सा री दाग होवैगो नहीं
कोयी किणीं भी कारणां सूं चेत खोवैगो नही"
यूं बोल सतभांमा तुरत रथ आप री बुलवा लियो
अर बैठतां श्री आप बायू-बेग सूं भगवा दियो

वा तुरत पांण सिरीक्रिसण बळरांम नै ल्यायी वठै
सा बापसा री दुरदसा पळमांय दिखळायी वठै
फेरूं कनै-सी वैठ आप बिलाप कर रोवण लगी
परवार उमड़्या आंसुवां सूं आंगणौ धोवण लगी

बळरांम बोल्या –"बीनणी, धर धीर, वो जासी कठै
यूं भाज कर ग्रीं लोक में वो सरण नी पासी कठै"
गरज्या सरोस सिरीक्रिसण –"जीणै न पावै वो अठै
जासी जठीनै वौ कठै म्है लैर जावूं हूं वठै"

रथ मांय बैठ सिरीक्रिसण जद आप वेगा भाजिया
तद पांचजन्यक संख रा सुर एक साथै बाजिया
ढूंढ्या घणां खाळां, नदी-नाळां, अगम गिरि-कंदरां
सुनसान जंगल मांय नै सूना पड़्योड़ा मिदरां

यूं हेरतां अी हेरतां लाध्यौ बडोड़ै बीड़ में
वो साथ घोड़ै रै लुक्यौ वड़-पीपळां री भीड़ में
स्यांमी निरख घनस्यांम नै वो तुरत घोड़ै पर चढ्यौ
तलवार लेय'र हाथ में, भर रीस में आगै बढ्यौ

बूझ्यौ घणौ आक्रोस सूं–"क्यूं रोस है मन में भर्‌यौ
क्यूं मारणौ चावौ म्हनै थांरौ कसूर नही कर्‌यौ"
बोल्या तुरंत सिरीक्रिसण–"थांरी अनीतां भोत है
सोतै मिनख नै मारणै री डंड खाली मोत है

तूं आततायी है खरौ, थारौ कसूर वडौ घणो
सास्तर कवै थांनै उचित है देखतां अी मारणो"
'ओसाण पाय'र भाजियौ वो पवनवेगी तुरग पर
छोड्यौ तुरंत सिरीक्रिसण चक्कर सुदरसण हाथ धर

नौवौ सरग

दातार, ग्यांनी, बीर, ध्यांनो भूप जो परधांन हैं
नांचे उगां रै सीस चढ धन श्री वण'र सैतान है
धन रै कमाण मांय दुख है, खरच में वीं सूं घणी
अर होय दोन्यां सूं कसूतो कांम धन नै राखणो

लोगां-लुगायां, भायलां जिण में परेम अटूट हैं
उण दांत-टूटी खाणियांमें धन गिरावै फूट है
श्री मणि सिमंतक जद मिली तद सूं बढ्यो संताप है
परवार, कुळ में, नगर में छायो घणेरो पाप है

दो तीन तो मारया गया लाग्यो अकूंत कलंक है
बिसवास आपस रो गयो, लाग्यो जहर रो डंक है"
सुण वात सतभांमा पती री बोलतां श्री रो पड़ी
"अब नाथ, थे करियो छिमां, बेबात म्हैं थांसूं लड़ी

म्हैं मुरख हूं, अग्यांन हूं, जाणूं न थांरो मरम हूं
बिसवास नीं थांरो करयो, श्रोछी, कुमत, बेसरम हूं
होयो कसूर बडो घणो पण श्राप सील-निधांन हो
म्हैं श्रोगणां री कोथळी, थे ग्यांनवांन, सुजांन हो"

श्री किसण बोल्या मुळक कर-"क्यूं भी न थांरो दोस है
संसार में धन-संपदा सूं कुण करै संतोस है"
अक्रूर आया ईं समै, घनस्यांम आवभगत करी
मणि अंट में सूं काढ कर अक्रूर जी आगै धरी

बोल्या क-"सतधन्वा मणी आ जावतो देगो, म्हनै
श्रितणां दिनां आ मणि बरोबर श्रीं र'यी म्हारै कनै
तिरथां गयो हो, म्हैं जणा नी श्रापनै देणै सक्यो
पण म्हैं वठै मोनो लुटाय'र सुजस तो लेणै सक्यो

अब आप री भी चीज आ म्हैं आप रै अरपण करू
थोळां दिनां री देर रो अपराध भी मांथै धरू
थे न्याव कर जो डंड दयोगा वो म्हनें स्वीकार है
संका करी सै आप पर वीं रो जरूर विचार है"

घणस्यांम हंस कैंवण लग्या "अपराध के, के न्याव है
म्हां रै न चाचाजी, मणी रो चित्त में क्यूं चाव है
सोनो लुटायो तोरथां, आछयो उदार विचार है
पण म्है न मणि राखू कनै, मन में न भीं रो प्यार है

म्हांरै मतै तो आप भी मणि नै बरोबर राखल्यो
सोनो उगळणं री सुफळ थोड़ा घणां दिन चाखल्यो
जे आप रैं मन में अजीरण होयग्यो भीं रो घणो
तो बाप रो धन, दरव बेटी नै उचित है सूंपणो"

सरमाय सतभांमा तुरत कैंवण लगी करुणा-भरी
"गळती वणी जो भूल सूं वींनै न आप छिमां करी
म्है तो मणी री लेवती भी नांव पिछतावूं घणी
म्हांरै भलांभी तो कुवै में, खाड़ में जावो मणी"

बोल्या विचार सिरीकिसण –"मणि री न कीनै पीक है
तो जादवां रैं कोस में भी सूंप देणी ठीक है"
अक्रूर जी चाल्या बठै सूं मणि सिमंत उठाय कर
जादूगणां रैं कोस में भी मेल दी ले ज्याय कर

—※—※—

# दसवों सरग

## प्रद्युमन

जाती सरदी में उतराधी भाळ चालणै लागी
दिन में तो तावड़ी, रात नै घणी सुहावै आगी
बिरछां री पत्यां सगळी श्री आपै पडगी पीळी
सुंवै काळजै चोट करै है पूंन अणूंती सीळी

ढांढा ढोर जीव-जंतू सै आपै धूजै थर-थर
सुरज उग्यां बिन सुणै कठै नी चिड़कोल्यां री चर-चर
आम, नीम, बड़, पीपळियां रा पड़ै पानड़ा झड़ झड़
तावड़िया रै बिना कठै नी उडै कबूतर फड़ फड़

चुप्प-चाप हा चिड़ी-कागला भौंभरड़ी भरणावै
सीळी-सीळी भाळ चालती सरण-सरण सरणावै
लड़कौ कोनी र'यौ जरा भी भाख फाटणै लागी
भांत-भांत रा रंग लगाय'र उसा आंगणै आगी

म्हैला बैठी घणी उणमणी होरी रुकमण रांणी
तूही भूलणै पावै बीती-बातां तणी कहाणी
खोयोड़ै बी वाळकिया पर नेह अणूंतो जाग्यो
बी रै बिना अठै सोः वयू श्री सूंनो-सूंनो लाग्यो
सांस गळै में अटकै, फटकै नी कंठां सूं वांणी
घणी उणीदी सी राती आंख्यां सूं बरसै पाणी
बड़ी बिथा सूं उमड काळजो मूंडै कानी आवै
चित चिंत्या सूं होय'र चकनाचूर चैन नी पावै

बौली-"बीत्या बोळा बरस नहीं बाळौ घर आवे
हाय विधाता घणौ निरदयी बिना वात तरसावै
समरथ सरब स्यांमसुंनर है पण क्यूं ध्यांन न देवै
दसा देखतां थकां न म्हांरी तिल-मातर सुध लेवै

दीन-बंधु वाजै तो अब क्यूं दीन दसा न पिछांणै
दया नहीं दरसावै जै तो कुण दयाळ नै जाणै
बिना लाल म्हैं जीव र'यी जो है भगवत री माया
बिना पिरांण न चाल सकै है कोयी री भी काया

कुण वाळै नै पाळयौ-पोस्यौ, दूध्यौ कूण चुंघायौ
रोतां पांण भुळायौ कुण हैं, कुण सुख नींद सुवायौ
झोटै-झोटै गीत गाय कुण पाळणियै हुलरायौ
उबटण कूण लगायौ वीं रै कुण असनांन करायौ

पकड़ आंगळी होळै-होळै कुण ठुमकणौ सिखायौ
मीठी बांतां बणां बणांय'र भोजिन कूण करायौ
रूस्योड़ा नै काढ काढ कर न्हौरा कूण मनायौ
बात तोतळी बोल-बोल कर कुण रौ हिव हरसायौ

बाळा, मेरा लाल, गयौ तूं कीं नै म्हतै बताज्या
आंख्यां मींच उडीकूं थांनै एक'र वेगौ आज्या
माखन-मिसरी लियां खड़ी हूं कदैक आय'र खांज्या
के तूं सांच्यां भी आरचौ है कींरा पगल्या बाज्या

के मेरौ है इसौ भाग जो नैणां पांण निहारूं
पळकां बगर बुहारूं, थां पर होरा-मोती वारूं
कद भी सुपनौ सांचौ होसी कद वाळौ घर आसी
आय बोलबाल्यौ कद सी मायड़ रौ हियौ सिळासी"

यूं विचार करतां वीं रै मन भाव अणूतौ जाग्यौ
अितणै में श्री कोयी बायर सूं आतौ सो लाग्यौ
देख्यौ–एक लुगायी सुंदर सांमी आय खड़ी है
कोयी कंवळ–वेल जांणी कंवळां सूं अड़ी–जड़ी है

चिलक च्यांनणी रौ श्री मोटौ गोट बंध्यौ हो जांणी
मुखड़ै पर निरमळ मोत्यां री भाव सरीसौ पांणी
वडे-वडे, काळे-काळे नैणां सूं जोत झरै ही
सैचंनण च्यानणी चाल मूं च्यारूं–मेर करै ही

मधरी-मधरी पूंन गिगन में मस्त झिकोळा खावै
जो सूं पीळी उजळी धोती धुजा जिसी फररावै
कूळां सा दूधिया गुलाबी पगल्यां मांय पगरखी
ऊंचे पीन पयोधरियां पर कसी कांचळी सिरखी

नागण सी काळी चोटी नैं च्यारूं–मेर चलावै
नैणां री चिलकणी जोत सूं चंचळता दरसावै
जोबण-फूली देह-बेलड़ी नैणां रस बरसावै
मंद पूंन रै झोळै सागै सोरम घणी लुटावै

वीं रै साथै-साथै एक जुवांन प्रवेस करयौ है
सागै स्यांमसुनर श्री जांणी रूप किशोर धरयौ है
मांथै मुकट बिराजै, कांनां मकर-आकृती कुंडळ
घणौ सलूणौ, सुभग, सांवळौ दीपै मुख रौ मंडळ

ऊंची नाक नुकीली, तीखा निरमळ, नैण कटीला
लाल-लाल परवाल जिसा है कूंळा अधर रसीला
मुखड़ै मीठी मुळक, दांत है मोती-लड़ी सरीसा
टेढा-टेढा भंवर पटा मोवै काळी भंवरी-सा

नुवें नीर सूं भरचा बादळां सिरसौ रंग सुरंगौ
जीं रै सांमी लील कंवळ भी लागै घणौ बिरंगौ
मदुवा सांड सरीसा कांधा, लांबी भुजा निराळी
सिंघ केसरी सिरसी लागै चाल घणी मतवाळी

नाड़ सुढाळ संख सी सोवै, चोड़ी-चोड़ी छाती
माळा गळ में, कड़चां तागड़ी सजै तीन वळ खाती
केळै री कामड़ी सरीसी जांघा लागै प्यारी
कूंळा-कूंळा लाल-लाल पगल्यां री छिब भी न्यारी

दोनूं साथ-साथ आय'र रुकमण रै पगां पड़चा हैं
खड़चा होण रो नांव नहीं ले, चरणां मांय अड़चा है
रुकमण रै मन में सनेह रो समद उमड़णै लाग्यौ
नैणां में पांणी, आंचळ सूं दूध टपकणै लाग्यौ

घणै हरख सूं कोयी रै भी बेण न मूंडै आया
छेवट राणी उठा-उठाय'र छाती मांय लगाया
बोली-"बाळा, कुण हो थे, अब चाल कठै सूं आया
जाणी बिजळी सागै लीला बादळ भी उतरयाया

मेरै हो थां जिसो लाल, कुण लेगो बेरो कोनी
मेरो होतो माज्यातो, अब जाणूं मेरो कोनी
थां सिरसो लागतो सौवणो जे वो जीतो होतो
मेरी कूख सिळातो निसचै मन री चिंत्या खोतो

के मेरो बाळो औ आयौ, हियो उमड़तो आवै
दूध आंचळां उफणै आपै, नेह न देह समावै
आयो के सुपनो है औ, के सांच्यां भी थे आया
ओजूं तो मेरी आंख्यां सूं ओलै मत हो ज्याया"

यूं विचार करतां वीं रै मन माव अणूंती जाग्यौ
भितरां में श्री कोयी वायर सूं आतो सो लाग्यौ
देख्यो-एक लुगायी सुंदर सांमी आय खड़ी है
कोयी कंवळ-वेल जांणी कंवळां सूं अड़ी-जड़ी है

चिलक च्यांनणी री श्री मोटी गोट वध्यो हो जांणी
मुखड़ै पर निरमळ मोत्यां री माव सरीसो पांणी
वडे-वडे, काळै-काळै नैणां सूं जोत झरै ही
सैचंनण च्यानणो चाल सूं च्यारूं-मेर करै ही

मधरी-मधरी पूंन गिगन में मस्त झिकोळा खावै
जी सूं पीळी उजळी धोती धुजा जिसी फररावै
कूंळां सा दूधिया गुलाबी पगल्यां मांय पगरखी
ऊंचै पीन पयोधरियां पर कसी कांचळी सिरखी

नागण सी काळी चोटी नै च्यारूं-मेर चलावै
नैणां री चिलकणी जोत सूं चंचळता दरसावै
जोबण-फूली देह-बेलड़ी नैणां रस वरसावे
मंद पूंन रै झोळै सागै सोरम घणी लुटावै

वीं रै साथै-साथै एक जुवांन प्रवेस करयो है
सागे स्यांमसुनर श्री जांणी रूप किशोर धरयो है
मांथै मुकट बिराजै, कांनां मकर-आकृती कुंडळ
घणी सलूणी, सुभग, सांवळो दीपै मुख री मंडळ

ऊंची नाक नुकीली, तीखा निरमळ, नैण कटीला
लाल-लाल परवाल जिसा है कूंळा अधर रसीला
मुखडै मीठी मुळक, दांत है मोती-लड़ी सरीसा
टेढा-टेढा भंवर पटा सोवै काळी भंवरी-सा

नुवैं नीर सूं भरया वादळां सिरसो रंग सुरंगो
जीं रै सांमी लील कंवळ भी लागै घणो बिरंगो
मदुवा सांड सरीसा कांधा, लांबी भुजा निराळी
सिंघ केसरी सिरसी लागै चाल घणी मतवाळी

नाड़ सुडाळ संख सी सोवै, चोड़ी-चोड़ी छाती
माळा गळ में, कड़्यां तागड़ी सजै तीन वळ खाती
केळै री कामड़ी सरीसी जांघा लागै प्यारी
कूळा-फूळा लाल-लाल पगल्यां री छिब भी न्यारी

दोनूं साथ-साथ आय'र रुकमण रै पगां पड़्या हैं
खड़्या होण री नांव नहीं ने, चरणां मांय अड़्या है
रुकमण रै मन में सनेह री समद उमड़णै लाग्यो
नैणां में पांणी, आंचळ सूं दूध टपकणै लाग्यो

घणैं हरख सूं कोयी रै भी वैण न मूंडै आया
छेवट राणी उठा-उठाय'र छाती मांय लगाया
बोली-"बाळा, कुण हो थे, अब चाल कठै सूं आया
जाणी बिजळी सागै लीला बादळ श्री उतरधाया

मेरै हो थां जिसो लाल, कुण लेगो बेरी कोनी
मेरो होतो आज्यातो, अब जाणूं मेरो कोनी
थां सिरसो लागतो सोवणो जे वो जीतो होतो
मेरी कूख सिळातो निसचै मन री चिंत्या खोतो

के मेरो वाळो श्री आयो, हियो उमड़तो आव
दूध आंचळां उफणै आपै, नेह न देह समावै
आयो के सुपनो है ओ, के सांच्यां श्री थे आया
ओजूं तो मेरी आंख्यां सूं ओलै मत हो ज्याया"

मू विचार करतां वीं रै मन भा-
थ्रितणै में श्री कोयी वायर मू
देख्यौ-एक लुगायी सुंदर सांमी
कोयी कंवळ-बेल जांणी कंवळां सूं

चिलक च्यांनणी री श्री मोटी ग
मुखड़ै पर निरमळ मोत्यां री
वडे-वडे, काळे-काळे नैणां सूं
सैंचंनण च्यानणी चाल सूं च्य।

मधरी-मधरी पूंन गिगन में मस्त झि
जी सूं पीळी उजळी धोती धुजा जिस।
कूळां सा दूधिया गुलाबी पगल्यां मांय
ऊंचै पीन पयोधरियां पर कसी कांचळी

नागण सी काळी चोटी नै च्यारूं-
नैणां री चिलकणी जोत सूं चंचळत
जोवण-फूली -- देह-बेलड़ी नैणां रस
मंद पूंन रै झोळै सागै सोरम घणी

वीं रै सायै-सायै एक जुवांन प्रवेस करयौ
सागै स्यांमसुनर श्री जांणी रूप किशोर धरयौ
मांथै मुकट बिराजे, कांनां मकर-आकृती कुंडळ
घणी सलूणी, सुभग, सांवळी दीपै मुख री मंडळ

ऊंची नाक नुकीली, तीखा निरमळ नैण कट
लाल-लाल परवाल जिसा है कूंळा अधर रसी
मुखड़ै मीठी मुळक, दांत है मोती-लड़ी सरीस
टेढा-टेढा भंवर पटा सोवैं काळी भंवरी-सा

"कामदेव औतार धर्‌यो है क्रिसण-रुकमणी जायो
संबर असुर घणो मायावी भीं नैं चोर'र ल्यायो"
मारण री त्यारी जद कीनी, रूप देख मन मोयो
मन में सोच विचार आप ओ समदर मांय डबोयो

तुरत पांण मछली गिटगी ही, मछुवा पकड़ विनारी
रूप-रंग वाळै री देख'र भेंट चढायी थांरी
अब औ थांरा पती देव हैं, आं नै पोसी पाळो
इण री सार-संभाळ करण में कदै नै दीज्यो टाळो

जे संबर नैं बेरो पट्‌ग्यो तो वो पकड़ मंगावै
मरयां विना वीं रै हाथां सूं कोयी बचण न पावै"
नारदजी तो चल्या गया हा, सैं बातां समझाकर
हरी-भजन में लाग्योड़ी नैं माया में उळझाकर।

यूं तो मन चंचळ होवै है, एक कांम ना लागै
बरबर विसय ठांव नै बदळै, च्यारू-कानी भागै
पण जद एक कांम में रूचि हो वीं में घणो लगन हो
तो वो बाकी कांम भूलकर वीं में मतै मगन हो

सगळा कांम छोड़कर म्हैं भी इण पर ध्यांन लगायो
अपणै हाथां भीं करणै री पूरो ढंग जचायो
सुरभी गौ री दूध मंगाती घणै चाव सूं प्याती
तेल उबटणो लगा लगाय'र खूब सिनांन कराती

हळको सुरमो सार आंख में गाल डिठोणो देती
लाड-कोड सूं हंसा-हंसाय'र घणी बलैया लेती
सोन-पाळणै सुवा हाथ हळवै थेपड़ती जाती
होळै-होळै हिडा-हिडाय'र मीठी लोरी गाती

दसवीं सरग

जुंवती फेरू सीस निवाय'र पगां लागण लागी
धणी असीसां पा रुकमण सूं आपे कं'ण लागी
"मां,, हूं सुरग लोक री देवी मेरौ नांव रती है
अै थांरा खोयोड़ा बेटा, मेरा पुरव पती है"

सुण रांणी रुकमण दोनां नै ओजूं कंठ लगाया
लाड-चाव भी करया मोकळा ऊंचा कन्नै बठाया
होळै सी फेरू बोली-"अब पूरी बात बतावौ
कुण वाळै नै पाळचौ हो, थे कठै मिल्या समझावौ"

रती मुळक कर क'यो-"आप नै भी तो होसी बेरौ
महादेव सूं लड़'र बळचौ वौ कांम पती हो मेरौ
म्हांरी विनती सुण सिव-संकर औ संदेस सुणायौ
तेरौ पति जलमै द्वापर में क्रिसण-रुकमणी जायौ

बाट उडीकौ, सम्बर असुरपुरी में समदर तट पर
आयां समै, बठै मिल ज्यासी थांनै आपै आकर"
वौ दिन सूं म्है असुर-पुरी में बस'र उडीकण लागी
हरि-सुमरण री जोत अणूंती म्हांरै मन में जागी

एक दिनां म्हारी पिछांण रौ मछुवौ कोयी आयौ
अेक सांवळौ सुभग सलूणौ बाळौ गोदी ल्यायौ
बोल्यौ-"अेक बड़ी मछली रौ पेट फाड़ औ पायौ
घणो सोवणो जांण आपनै औ सूंपण नै ल्यायौ"

म्हैं बाळै नै कंठ लगाय'र वीं नै विदा करायौ
भितणै में औ नारद जी रौ "हरि-ओम्" सुण पायौ
पावां पड़ कर पूजा कीनी, ऊंचासा बैठाया
बाळां कांनी देख'र मुळक्या फेरू वचन सुणाया

"कामदेव ओतार धरयो है त्रिसण-रुकमणी जायो
संबर असुर घणो मायावी श्रीं नैं चोर'र ल्यायो
मारण री त्यारी जद कीनी रूप देख मन मो'यो
मन में सोच विचार आप श्री समदर मांय डुबोयो
तुरत पांण मछळी गिटगी ही, मछुवा पकड़ विनारी
रूप-रंग वाळै रो देख'र भेंट चढायी थांरी
अब अै थांरा पती देव है,आं नैं पोसो पाळो
इण री सार-संभाळ करण में कदै नै दीज्यो टाळो
जे संबर नै बेरो पट्ग्यो तो वो पकड़ मंगावै
मरयां बिना वीं रै हाथां सूं कोयी बचण न पावै"
नारदजी तो चल्या गया हा सै वातां समझाकर
हरी-भजन में लाग्योड़ी नै माया में उळझाकर
यूं तो मन चंचळ होवै है, एक कांम ना लागै
बरबर विसय ठांव नै बदळै, च्यारू-कानी भागै
पण जद एक कांम में रूचि हो वी में घणी लगन हो
तो वो बाकी कांम भूलकर वीं में मतै मगन हो
सगळा कांम छोड़कर म्हैं भी इण पर ध्यांन लगायो
अपणै हाथां श्रीं करणै रो पूरो ढंग जचायो
सुरभी गौ रो दूध मंगाती घणै चाव सूं प्याती
तेल उबटणो लगा लगाय'र खूब सिनांन कराती
हळको सुरमो सार आंख में गाल डिठोणो देती
लाड-कोड सूं हंसा-हंसाय'र घणी बलैया लेती
सोन-पाळणै सुवा हाथ हळवै थेपड़ती जाती
होळै-होळै हिंडा-हिंडाय'र मोठी लोरी गाती

यूं दिनगे सूं रात गयां तक कांमां लागी रै'ती
पण इण री वातां न कदाचित कोयी नै भी कै'ती
बडा हुया जद श्री ले ज्याय'र गुरुकुल मांय वठाया
सैं संस्कार कराय'र इण नैं सगळा वेद पढाया

संसकार, विद्या विन माणस ऊंचौ नी चढ पावै
रतन साण पर चढयां बिना ज्यूं पूरी मोल न पावै
सस्तर-विद्या चोखी तरियां इण नै बठै सिखायी
भांत-भांत रा असवर चलवाणैं री कळा दिखायी

म्हैं जितणी माया जाणैं ही वा पूरी समझायी
नुवीं पहाळचां आड आड कर सगळचां नै सुळझायी
पूठा घरां ल्याय कर इण नै सांची वात वतायी
सुणतां पांण वैण, नैणां में चिलक अणूंती आयी

सस्तर-पाती बांध संबरासुर नै जा ललकारचौ
वो भी तुरत सांमनैं आयौ देख'र रिपु अणधारचौ
दोनूं सूरवीर जोधा हा, दोनूं घणां अड़ै हा
नुंवा-नुंवा सस्तर उठाय कर दूणैं जोस लड़ै हा

मायावी राकस वो माया बरबर में फैलावै
पण इण री जुगती रै आगै आडी अेक न आवै
छेवट सस्तर छोड-छाड वो कुसती करवा लाग्यौ
पण धोबी-पछाड़ खाय'र वो घणी बार में जाग्यौ

भांत-भांत लड़तां लड़तां जद वींरौ मन नी हारचौ
तद तरवार उठाय'र छेवट वींरौ सीस उतारचौ
राकस री मरणौ सुण जणता मांय सांस सौ आयौ
नो नो ताळ कूदणै लाग्या हरख घणेरौ छायौ

अब थांरै चितरी चित्या री जद विचार मन आयो
तो वेगा सै वेगा थांरे कनै आवणो चायो
यूं विचार करतां औ दोनूं नभ-मारग सूं आया
जुमवारी पूरी होयी अब करौ आप मनचाया"

सागी वातां सुण परेम सूं बोली रुकमण रांणी
"भगवत री किरपा होयी पण है तूं पूरी स्यांणी
स्यावासी रो कांम करयो औ करतब ठीक निभायो
जो खोयोड़ो लाल पाळ कर मां री गोद पुगायो

औ बदळो म्है कयां उतारूं, क्यूं भी समझ न आवै
जो मांगै सो देकर भी औ भार न उतरण पावै"
सिरीक्रिसण आया मुळकंतां दोनूं पग चुचकारथा
दे असीस बोल्या-"थे सगळा कारज सूल्यां सारचा"

अब सारां नै वेरो पटगो भाज-भाज कर आया
बेटो-बहू साथ घर आया मंगळ-चार मनाया
बिप्रां नै बसदेव गाय, अन, धन रा दांन कराया
माणक-मोती बांट देवकी सै रा मांन वढ़ाया

गरग-मुनी नै तुरत बुलाया पांवा पड़-पड़ पूज्या
घणां मांन सनमांन दिखाया, हाथ जोड़कर बूज्या
"थारै चरणां री क्रिपा सूं बाळकियो घर आयो
अपणै हाथां मार असुर नैं साथ बीनणी ल्यायो

अब आगै के करणो होसी, थे आदेस दिरावो
सास्तर री मरजादा पाळ'र सगळा कांम करावो"
गरग रिसी राजी हो बोल्या-"औं में के करणो है
जलम-जलम सूं वरयां हुयां नै ओजूं के बरणो है

## रुकमण सूं मसखरी

चैत चालतौ ग्री आरथी हो पण सीळी लागै ही भाळ
गिगन मांय वादळ विचरै हा पण गांगा चालै असराळ
ग्रामां नीमां मींजर फूटी, कैरां श्रावण लाग्यौ फाल
नुवां पलासां रै पानां में फूल खिल्या खीरां सा लाल

लटा-लूम डाळयां होरी हैं कळियां सूं जो विगसी नांय
सिरस्यूं पाक चुकी पूरी ग्री गीवूं हैं पाकण रै मांय
नाज ग्रोर फूलां री सोरम मन में भरै ग्रणूंतो भाव
मींनत फळती देख सामनै चढै किसाणां रै चिंत चाव

च्यारूं-मेर च्यानणो फैली, चिमकै चांन चढयौ गिगनार
सीळी हळवी भाळ बखेरै मींजर री मीठी मैकार
सिरीक्रिसण रै म्हैलां में भी ग्रायी ग्रेक ग्रणूंती भार
खिली रात री राणी, ऊपर होळै-होळै पड़ै फुंवार

सोनै-पागां, तण्यौ ढोलियौ, घणौ सुरंगो, घणी सुढाळ
दूधां-धोळी विछी च्यांनणी मांय कढयौ तारां री जाळ
मोत्यां री झालर झूलै ही पायां पर फुलड़ां रा हार
तकिया बगलां जिसा ऊजळा मणी-दीवलां री भरमार

स्यांमसुंनर सुख सूं पोढया हा करता सा मन मांय विचार
राणी रुकमण ढुलै बीजणी बैठी कर सोळा-सिणगार
हाल-हाल हाथां रा कंगण बाजै कर मोठी झिणकार
सिरीक्रिसण रांणी नैं निरखै, परखै, मुळकै बारंबार

सोचै हा-"रांणी रौ मुखड़ौ कदै रीस सूं लाल न होय
कितरा भोळा-भाळा मनरा, जाणै नहीं एक री दोय
छेड़-छाड़ सूं जे जाग्यावै रोस-मांन इण रै मन मांय
तो मुख री दिव छिव रौ बरणन कोयी भी कर पावै नांय

घणां कोतकी नटनागर अब मन कोतक रौ कर्यौ विचार
म्हारांणी रुकमण सूं करणं लाग्या बात मठार-मठार
"राणीसा थे कवै हा जद म्हैं थांरी सुध लेवूं नांय
दीनवंधु झूठो श्री बाजूं दया नही है म्हांरै मांय

सो आ बात सरव सांची है ब्याव आपणो है बेमेळ
अणचायी जोड़ी रा साथी कदै नहीं कर पावै केळ
म्हारे सूं सनवंध जोड़ कर कींनी आप घणेरी भूल
भाओ-सा री सीख सांचली नी मानी होय'र प्रतिकूल

सा-पुरसां रै मांय सदा सूं चाली आवै है आ रीत
होय बरोबर री जोड़ी-हाळां में बैर, सनेह, परीत
आप बडे राजा री बेटी मानीतो थांरो परवार
म्हैं रणछोड़ डर्यौ, भाज्यौड़ौ मथरा मांय त्याग घरवार

जरासंध सूं बैर निभावण म्हैं थांनै हर ल्यायौ आप
जोड़ी जोग नही होवण सूं दियौ आपनै भी संताप
जे जोड़ो रौ वर न मिलै तो तिरिया जीवण भर दुख पाय
नही बोलणं पावै क्यूं भी मन श्री मन में घुळती जाय

म्हैं बाळा पन गाय चरायी बण्यौ चोरटौ भी सरनाव
बाकी र'यी अनीत न कोयी रण सूं भाज'र छोड़्यौ गाव
धन री भी म्हैं कदर न जाणूं निरधनियां सूं पाळूं हेत
म्हांरै भावे होय बरोवर हीरा-मोती कांकर रेत

कुण गुण देख वरचा थे म्हांनै सिसपाळ सूं मुखड़ो मोड़
ऊंचै कुळ रो राजा हो वो थांरी बरोबरी रो जोड़
सूर-बीर जगमांय मोकळा जोधा रण-वंका बलवांन
जरासंध सा, दंत वक्त्र-सा, साल्व जिसा राजा मतिमांन

जे थांरै मन गिरगिराट हो कोयी सूं ल्यो नातो जोड
म्हांरै मन कोयी न श्रांट है कोयी सूं न करूं म्हैं झोड़"
स्यांमसुनर री वातां सुणकर रुकमण री घबड़ायी जीव
दूजो कूण सहाय करै जद इसड़ी वातां बोलै पीव

टप-टप नैण वरसणै लाग्या, मुखड़ो गयो तुरत मुरझाय
मन मूंज्यो, तन तूज्यो, धूज्यो, पड़गी तळै तिंवाळी खाय
ऊक-चूक गाबा सैं होया, काया होगी घणी निढाळ
साड़ी री पल्लो भी तिसळचो, बिखर पड़चा चोटी रा बाळ

करै काळजो धक-धक, धक-धक श्रर पसेव श्राया तन मांय
सांस श्रावणै लाग्या दोरा, किणी भांत री ही सुध नांय
भाज-भाज बांनी सैं श्रायी राणी नैं देख'र बेचेत
हळवैं उठा पिलंग पोढ़ायी, सेवा करी घणेरै हेत

कोयी तो पगल्यां नैं मसळै, कोयी श्राय पपोळै हाथ
कोयी सोरम-जळ-फुवांरिया वरसावैं बीजणिया साथ
दूजो चनण लेप लगावै तीजो करै घणी मनवार
"के होयो ? के जी दो'रो है" सगळी पूछैं बारंवार

पण रुकमण सूंनी-सी पड़गी किणी भांत नी होवै चेत
सिरीकिसण भी श्रब घबड़ाया, गोदी सीस धरचो कर हेत
एक हाथ में लियो बीजणो फिरै सीस पर दूजो हाथ
वां सगळचां नैं परै खनायी, सीतळ नीर सिळायो माथ

आंसू पीतावंर सूं पूंछ्या, करी पसेवा, कांनी भाळ
हाथ काळजै ऊपर मेल्यो, वाळां री भी करी सम्हाळ
होळै-होळै-सी वतळाया जणां रुकमणी खोली आंख
बरबर में खोलै-मीचै, ही लांबी-लांबी कूंळी पांख

स्यांमसुनर बोल्या सनेह सूं मुळक-मुळक कर मीठा बोल
"एक'र तो वतळावो म्हांनै देखो थोड़ी आंख्यां खोल
थे तो आप बड़ा भोळा हो मन में नहीं विचारी वात
हंसी मसखरी री वतळावण में कुमळाया एकं स्यात

थे पिराण हो म्हांरा, थां बिन रैणै पावूं नीं कीं भाव
जरा देखणो चावै हो म्है थांरै मुख किरोध रा भाव
मीठौ खातां होय चरचरी चाखण री ज्यूं चित मे चाव
त्यूं देखै हो श्री मुखड़ै पर होय रोस री के परभाव

म्है जाणूं हूं, थांरै मन में म्हार सारू घणो सनेह
म्हांरो हिवड़ो भी परेम थांसूं पाळै है बिन सदेह
अब मन में धीरज धारो थे करो न कोयी भांत विचार
'हांसी में खांसी आ होयी' लीज्यो श्रीं नै आप सुधार"

रुकमण बोली सुबक-सुबक कर-"इसड़ी हांसी है बेकाम
सुणतां पाण करै जो दूजां गळा माय फांसी रो कांम
इसी मसखरी के चोखी जो पल में करै रंग में भंग
सुणणै मातर सूं श्री जी रै हो ज्यावै मरणै रा ढंग

जे म्हारै सतीत्व पर संका क्यूं भी हो थांरै मन मांय
तो सरीर छोड़ण में करस्यूं छिन मातर भी देरी नांय"
सिरीकिसण बोल्या बेगा सा-"नही, नही, संका नी कोय
क'वो जियां म्हैं वाचा देवूं जे थांरै विसवास न होय"

म्हैं तो थांने छेड़ण सारू क'यी मसखरी में आ बात
ओर न क्यूं भी मतवल हो अव मत छोलो कांदे रा पात"
रुकमण क'यो तुरत-"पण थांरे क्यां सूं उपज्या इसा विचार
बोल सक्या अै बात किया थे समझ्या विना कुलखणी नार

थे तो कै' दी जाय ढूढल्यो कोयी भी दूजो घर-बार
पण सतवंती कुण मन में भी दूजे नर रो करै विचार
भलां घरां में इसी बात के कोयी घाले मूंडै मांय
घर री तिरिया नै कोयी सापुरस कदै यूं बोलै नांय"

स्यांमसुनर बोल्या-"बोलण रो पिछतावो है पूरो आज
बडी भूल होयी आ म्हांसूं छिमां करो राणी जी राज"
रुकमण पगां जा पड़ी कै'ती "छिमां आप भी करो अबार
छिमां करण रो तो है स्वांमी, सदा आप रो भी इधकार

थे जो बात क'यी वां में सूं होय ओर तो सगळी ठीक
पण अपरोगी बात अेक भी थे जो बोली छोड'र लीक
जोड़ी जो बेमेल बतायी झूठ न तिल-मातर इण मांय
सोळूं कळा आप पूरण हो म्हां में कळा अेक भी नांय

कठै सुरज रो तेज अणूंतो कठै दिवै रो मदी लोय
कठै अथा जळ भरयो समदर कठै तळायी थोड़ै ताय
जोड़ण में सनवंध आपसूं निसचै म्हांरी भूल अपार
किसो माजनो चिड़कोली रो चावै जाय गिगन रै पार

कड़-टूटी कीड़ी मन भावै डूंगर री चोटी चढ ज्याय
कूवां री मीडकी कठै सूं समदरियारी था पा ज्याय
बिना पिछांणे डोळ आप रो जो यूं ऊंची भरै उडाण
अधर बीच में पड़े आप भी म्हांरी ज्यूं चूक'र ओसाण

म्हैं मातर राजा री बेटी थे तो राजां रा म्हाराज
थांरी अपरंपार विभूती कुण वखांण सकै है आज
क्यूं भाज्या रण छोड़ आपरी लीला कोयी जांणै नांय
सतरा बर के नही हरायौ जरासंध नैं थे रण मांय

नहीं माजणौ धन-संपद रौ जो थांरै मन आदर पाय
लिछमी तो वापड़ी आपरै लैरां-लैरा आवै आय
निरधनियां सूं हेत घणौ जो वां में भरो भगति रो भाव
थां नैं पाय'र कोयी रै भी चित में र'वै न धन रौ चाव

कुण सौ गुण देख्यौ म्हैं थां में कै'वण रो साहस नी होय
सगुण रुप भी थे निरगुण हो, मरम न थांरो जाणै कोय
थांरी बरोबरी रौ मिलणौ संभव नी सगळै जग मांय
जींसूं चरणां री चेरी नैं आपै के अपणायी नांय

बे-जोगती घणी अपरोगी लागी अेक क'यी जो आप
सुणता पाण बेग सूं म्हारै मन रै मांय बढ्यौ संताप
जरासंध, सिसपाल सरीसां रौ जे होतौ चित में चाव
तो क्यूं था नै न्यूत बुलाती क्यूं न रचाती वां सूं ब्याव

थां नै बरणै बाद उणां री चरचा करणी भी है पाप
फेरूं थे जाणतां थकां क्यूं छेड़यौ अिसौ बारतालाप
कूण गधेड़ै चढणौ चावै हाथी-होदै हो असवार
कांम-धेन रौ दूध पीयकर कुण मांगै भूंडण री धार

अिमरत रै प्याला सूं छिक कुण भरै फेर रा खारा घूंट
उडण-खटोलै में बिहार कर टोवै कूण उबीणौ ऊंट
कुण नाळी रौ पाणी मांगै पीय'र गंगाजी रौ नीर
कूण तळायां कादौ हेरै छोड़'र जमना जी रौ तीर

केसर, किसतूरी, चंनण तज कुरा सूंघरा चावै मुरड़ांन
कुण कोयल री कूक भूलकर सुणै गधै री तीखी तांन
राज-हंसणी रै मन में के होय कदै बगलै री मांन
नहीं कदाचित होय सिघणी रै चित में गादड़ रौ ध्यांन

कुण टपकावै लाळ रावड़ी ऊपर खीर-मळायी छोड
सिंघासण विसराय लगावै कुरा कांटां हांडरा री होड
अब ओजूं थे असी बात मत मूंडै कदै घाल ज्यौ नाथ
औं चरणां री चाकरड़ी रौ कदै नही विसराज्यौ साथ

मती भूलज्यो कदै आप भी म्हारी अतणी सी अरदास
नीतर बांनी तो हो ज्यासी तुरत मौत रौ मतै गिरास
थांरौ हिवड़ौ हरण कर सकूं असी कळा नीं म्हांरै मांय
थांरै जोगा सील, रूप, गुण, चतरायी भी म्हांमें नांय

पूरणकांम आप हो, जग रौ किणी वस्त में नहीं लगाव
फेरूं जो अपणायी म्हांनै ओ है थांरौ किरपा-भाव"
यूं बोलंती राणी रुकमण ओजूं पगां लगायौ माथ
सिरोमिण उठ गळै लगायी, बोल्या मेल सीस पर हाथ

"रुकमण, थे विसवास करौ अब, म्हांरै मन में अंतर नांय
वेरौ नीं हो दुख उठायस्यौ इतणौ हंसी-मसखरी मांय
म्हैं तो बस देख्यौ चावै हो थांरे मुखड़ै घणौ मंगेज
देखां किंसीक चोखौ लागै भोळी सी आंख्यां रौ तेज

बातां औ बातां में म्हांसूं अरणजांण्यौ बण ग्यौ ओ खोट
जांणूं हूं थांरै मन लागी औं सूं घणी करारी चोट
अरणचायो, अरणचींत्यौ औ ओ आपै बण्यौ रंग में भंग
ओजूं कदै नही जीवरा में आवैगो इसड़ौ परसंग

थे म्हांरै जिवड़ै रा जिवड़ा, थे म्हांरै हिवड़ै रा हार
घणै मांन थांनै मानूं हूं म्है म्हांरै जी सूं परवार
वोळा लोग बतावै थांनै आदिसक्ति री श्री ग्रोतार
थासूं सक्ति पाय होवै है सक्तिमांन सगळौ ससार

सांची वात कवूं म्हैं रुकमण, थांरै मेल हाथ पर हाथ
कदै जलम-जलमांतर में भी नहीं छूट सी थांरौ साथ''
मुळक पड़ी सुण राणी रुकमण मुखड़ै भरी अणूंती ओर
तण्या भुवारा बण्या सुरंगा छिणमातर में बिसरयौ कोप

बैठ जियां बैठी ही पैली चांपण लागी चरण तुरंत
छेवट ग्रियां कळह नाटक रौ आपै होयौ सुखमय अंत

# बारवौं सरग

## सतभांमा री मांन

नभ-मंडल नै लाल वणाता धणी तावड़ै रा ऊग्या
सिरीक्रिसण रै म्हैलां नारद "नारायण" कै'ता पूग्या
नारदजी नै देख्या, उठकर केसव आदर मांन करघा
खेम-कुसळ बूझी सनेह सूं नारद बोल्या बिग भरघा

"खेम-कुसळ है थां लोगां रै जो सुख सूं आरांम करैं
मतवळ बिना न तुणको तोड़ैं, नहीं किणी रो कांम करैं
नित चकरी री डोर जियां म्हैं बिना बात दिन-रात फिरूं
जणूं-जणूं मोसा भी मारै, घणै संकटां मांय घिरूं"

दामोदर मुळक्या-"सुख रो तो चाव पिराणी मातर में
पण घरणी श्रो सुख-भरणी है, वीं री हो रिध-सिध घर में
थे घर-घरणी तणौ मोह तज क्यूं मत्त मोडा होया
घण्या परायै सुखां दूबळा छुल-छुल कर छोडा होया

जे सुख पावण री मनस्या तो घर वासण रो कांम करो
एक सोवणी घरणी ल्यावो, सुख पोढघा आरांम करो"
नारदजी भी मन में सोची-"मोज मजा सुख पावै हैं
आठ आठ पटराणी ब्यायो जणां मसखरी आवै है

पण म्हैं भी पट्टी नारद हूं थोड़ा हाथ दिखावूंगो
घणां मसखरा ठोकण रो आं नै भी मजो चखावूंगो"
बोल्या-"बूढै बारै हो अब के घरबार बसावांगा
मिली मिलण रै दिनां न घरणी अब के रास रचावांगा

जावरण दयो अै वातां तो म्है सुरगलोक सूं श्रायौ हूं
इदर राजा रौ थां साऊ अेक सनेसौ ल्यायौ हूं
भोमासुर राकस जग में बोळा उतपात मंचारयौ है
चोखा-चोखा वीरा नै सैना रै पांण नंचारचौ है

अमरावती पुरी जाय'र वो सै देवां नै जीत्यायौ
अदिती माता रै कानां रा कुंडल दोनूं हर ल्यायौ
वरुण जिसा दिगपाळां नै वो पळ मातर में हरा दिया
नाग, यक्ष, राकस-जोधां नै मार दकालो डरा दिया

सोळा सहस राजकन्या वो आपै श्री भेळी करली
जगां-जगा सूं ल्याय-ल्याय कर कारागार मांय भरली
होय हजार अठारा जद श्री वो सगळयां सूं ब्याव करै
मा-बापा री धीयड खोसी पिरजा रौ के न्याव करै

गुपत-सनेसौ देवण नै श्री श्राज अठै म्हैं श्रायौ हूं
कलप-ब्रिरछ रा फूल मलूणां थांरै साऊ ल्यायौ हूं"
नारदजी दीन्या आदर सूं, स्यांमसुनर ले हाथ धरया
मीठी सोरम फैलावै हा रूप रंग सूं हरया-भरया

अितरा में श्री मुळकंता राणी रुकमण आपै आया
नारद सूं परणाम करी जद नारद हिय में हरसाया
हाथ जाड जद कयो क "फूलडां पर म्हांरौ मन ललचावै"
सिरीक्रिसण बोल्या-"ले ज्यावौ कदै नही अै मुरझावै"

घणै मान सूं राणी रुकमण फूल आंनळै मांय लिया
एक-एक सगळी राण्यां रै घणै हेत सूं भिजा दिया
पण छै फूल बच्या डलिया में बांटण गयी जणां बांनी
सतभांमा बाकी रैगी पण रुकमण सूं राखी छांनी

"नारायण" क'ता नारद जी सगळां म्हैला मांय गया
अेक-अेक नै खोद-खोद कर फूल विसै पूछ्ता र'या
छेवट रांणी सतभांमा रै म्हैलां मांय जाय पूग्या
पूजा कर रांणी जी बूझ्यो "आज कठै सूरज ऊग्या"

बोल्या नारद-"सुरपति रो संदेसो देवण आयो हो
कलप बिरछ रा पुसप मोकळा घणां सोवणां ल्यायो हो
रांणी रुकमण आवै आय'र सिरीक्रिसण सूं ले लीन्या
अेक-अेक कर सगळी पटरांण्यां रै माय बांट दोन्या

रुकमण री बानी कोयी सी थांरै भी आयी होसी
अेक बडो सो पुसप मनोहर म्हैलां में ल्यायी होसी
फूल बडो मनमोवन है अै सोरम पूरी फैलावैं
हरयो-भरयो नित-नुंवो बण्यो रै नहीं कदै भी मुरझावैं"

नारद जी री बातां सुण-सुण सतभांमा धूजण लागी
अेक-अेक रूंगटियो जाणीं आपै श्री उगळै आगी
बोलण लागी-"नारदजी, म्हैं नी परेम री पातर हूं
पटराण्या रै पूग्या होसी म्हैं तो बांनी मातर हूं

सगळी राजकंवर वै तो पति नै पिराण सूं प्यारी है
म्हांरी जिसी जगत में दूजी कुण दुखड़ां री मारी है
बिना चित्त रै चायेतां री कुण हिवड़ो हुळसावै है
बिनां मनां रा पावणियां नै कुण घी-खाड खुवावै है"

नारद जी तो "नारायण-नारायण" कै'ता चाल पड़्या
सूका तुणकां मांय पतंगी सिलगातां श्री हाल पड़्या
नारदजी सूं भेद-भाव री पढ कर यूं पूरी पाटी
कोप-भवन में जा सोयी सतभांमा ले आटी-पाटी

थोड़ी घणी देर मे जद भी सिरीकिसण म्हैलां आया
सतभांमा रो रंग-ढंग श्रो देख'र चित में चकराया
मुळक-मुळक बोल्या धीरै सी –"श्रो के सांग वणायो है
की रो के कसूर होयो है, क्यां पर कोप दिखायो है"

बात सुण'र सतभांमा रै तो मन में रीस घणी जागी
सिरीकिसण नै देख-देख दूणी-दूणी रोवण लागी
स्यांमसुनर सोची क –'गिरस्थी रो जंजाळ भ्रणूंतो है
विना बात श्री घरणी रै कूकण रो कांम कसूतो है

छोटी-छोटी बातां रो अै बडो वतगड़ कर लेवै
विना वताये रोय-रोय श्रांसूड़ा सूं घर भर देवै"
यूं क'यो–"मतां ये रुदन करो, ध्यावस ल्यो, थोड़ा गम खावो
के बात बणी, है भूल कठै, म्हांनै भी थोड़ा समझावो"

सतभांमा बोली, खोरा सा उछळै हा वी रा वैणा में
मांय-मांय सिलगै ही आवै री आगी सी नैणां में
"सै नै दिन घालण-हाळी श्रब कड़कसा न म्हैं छांनी हूं
व्यायोड़ी राणी थोड़ी हूं, हा मोल लियोड़ी बांनी हूं

झूठी बात बणावो क्यूं जद मन मे थारै प्यार नहीं
भूल कठै है समझावण रो म्हांनै श्रब इधकार नहीं
भूल किणी री नहीं कठै भी सगळी भूलां म्हांरी है
थे जो श्राय बात बूझी हो घणी दया श्रा थांरी है"

सिरीकिसण हिंमळास बंधायो-"क्यूं कसूर तो दरसावो
चित चावै सो डंड सुणावो जे न छिमा करणै पावो"
सतभांमा चिणखी "देवण री डंड सामरथ नी म्हांरी
वै दे सकै, भैंट जो पावै, धणी लाडली जो थांरी

बिना बाप री बेटी म्है तो नहीं किणो रौ भी सा'रौ
म्रां चरणां रै सिवा कठै भी नहीं आसरौ है म्हारै
म्रब थे भी न याद फरमावौ दीठ दया री नी गेरौ
मरं है क जीवै है, क्यूं भी पटै नहीं थांनै वेरौ"

दामोदर भी क'यो क-"होवै सगळी बांट बरोबर है
बस्तर-भूसण, माल-खजांना नहीं किणी में अंतर है
नहीं दुभांत कठै भी राखूं सगळी बातां समता है
सगळी पटराण्यां पर म्हांरै हियै एक सी ममता है"

सतभांमा बोली-"ममता तो घणी आज देखी-भाळी
कलप-बिरछ रा पुसप पुगावण में जद एक म्हनै टाळी"
सिरीक्रिसण मुळक्या-'ग्रो सगळौ नारद करयौ कवाड़ो है
बिना बात रौ करै बतंगड़ वो पूरो मलवाड़ो है

नारद पुसप दिया जद म्हांनै रुकमण आय'र मांग लिया
अेक आप रै कनै राख कर सगळै म्हैलां बांट दिया
स्यात भिड़ावण नै भाठा श्री नारद फूल सात ल्यायौ
जीसूं श्री थारै मन मे इरखा रौ बीज उगा पायौ"

सतभांमा चिमकी-"थारै भांवै तो बात बडी कोनी
विघ-मूळक नारद री पण के म्हांरै हियै गडी कोनी"
स्यांमसुनर हिंमलास दियौ-"अब गयी बात नै जावण द्यौ
थारै मन में बुळी गांठ नै किणी भांत सुळझावण द्यौ

थे बोलौ तो कलप-बिरछ रा फूल हजार मंगा देवूं
थे चावौ तो गाछ- उपाड़'र थांरै घरां लगा देवूं"
सतभांमा राजी हो बोली-"थांरी दया घणेरी हो
कलप-बिरछ लागै म्रांगण तो मनस्या पूरण मेरी हो"

सिरीकिसण भी क'यो मुळक कर-"अब मन मतां उदास करो
विरछ आंमणे मांय लागसी निसचो ओ विसवास करो"
द्वारपाल अितणे में आय'र हाथ जोड़ अरदास करी
"देवराज है खड़्या दुवारे आग्या चावें आवण री"

सिरीकिसण भी राजी मन सूं सुणता पाण गया उठ कर
सुरपति रो सनमांन घणो कर, ल्याय बिराज्या आसण पर
मुळक-मुळक बोल्या परेम सूं-"किण विध आज कष्ट कीन्यों
कियां आज धरती वास्यां नैं जग-दुरलभ दरसण दीन्यो"

हाथ जोड़ सुरराज क'यो यूं-"थे श्री जग रा मालिक हो
थे बणाणिया, थे मारणिया, थे श्री श्रीं रा पालक हो
थांरी मरजी विना न हालै कोयी पत्ती तरवर री
थांरी मनस्या विना न सिरकै एक बूंद भी सरवर री

सरब सगति हाळा थे श्री हो सगळां में थांरी सगती
सूधो मारग वां रो श्री है जो साधै थारो भगती
थांरी सगती बिना न अगनी तुणकै नै भी बाळ सकै
थांरी सगती बिना बरुण भी तुणकै नै नी गाळ सकै

दस दिगपाळ कांम सगळो श्री थांरै पांण सम्हाळै है
राजा गण भी थांरी किरपा सूं पिरजा नै पाळै है
थां नै पिरभू मानां जद तो म्हैं भी मजा उडावां हां
पण निज नै इस्वर जाणां जद दुख भी घणा उठावां हां

मन मे गरव गुमांन करां म्हैं म्हां सूं वडो न है कोयी
म्हैं सगळां री मनस्या पूरां म्हां रै जिसो न है कोयी
सैंग सको खोट सगळा थे पण न गुमांन स'वो कीं रो
आगै सीख सिखावण सारू पळ में गरब हरो वी रो

म्हे भी थांरो मे'मा भूल'र गैरो रंग रचावै हा
कोयी नै क्यूं नी समझै हा रापट-रोळ मंचावै हा
भोमासुर आय'र छिन भर में म्हांरो गरब गुमांन हरयो
राज-पाट खोस्या, धमकाया, माता रो अपमांन करचौ"

सिरीक्रिसण बोल्या-"भूमी रो बेटो है, वो मरै नही
म्हैं भी मारूं नी जद तांणी भूमी बिनती करै नहीं"
इद्र क'यो-"आकळ-बाकळ हो धरती आज पुकार करै
वडै भार सूं डूब र'यी हूं ईश्वर अब उद्धार करै

घड़ियो वीं रै पापां रो भी भरग्यो है गळबै तांणी
अब तो रिछ्या करो मालकां सिर ऊपर फिरग्यो पांणी"
गिरधारी बोल्या मुळकंता-"अब आगै क्यूं मती क'वो
भोमासुर अब मारचो जासी थे सगळा निरचिंत र'वो"

देवराज राजी मन होय'र चरणां में परणांम करी
क'यो-"धणी किरपा है थांरी बिथा-वेदना मतै हरी
भोमासुर नै मार'र एक'र अमरावती पधारीज्यो
माता रै कांनां में कुंडल हाथां सूं पै'रा दीज्यो"

सिरीक्रिसण बोल्या-"सुरनायक, मोको मिल्यां बठै आस्यूं
रांणी सतभांमा देवी नै भी म्हांरै सागै ल्यास्यूं"
इंदर क'यो-"पधारै राणीजी तो म्हैं धन-धन होवां
बगर बुहारां पलकां सूं म्हे थारी वाट घणी जोवां"

स्यांमसुनर इंदर राजा रो बडो मांन सनमांन करचौ
घणै सनेह बिदाकर वांनै गरुड़-राज रो ध्यांन धरचौ
कर परणांम क'यो खगराजा-"सेवक नै के आग्या है
पिरभू याद करै चाकर नै भाग मतै ओ जाग्या है"

राजो-वुसो वूझ बनवारो बोल्या-"अब बा'रै चालां"
सतभांमा सूं भी बतळाया-"आवो घूमण नै हालां"
असवारी पंछी राजा पर सतभांमा रै साथ करी
घणो मगन होय'र बिनतासुत मझ गिगनार उडांण भरी।

—❀—❀—

## भोमासुर रौ बध, कलपतरु हरण

अब ताव मिटयौ धरती माता रौ घणां सुरंगा दिन आया
है सरस सलूणा लीला-लीला बादळिया आभे छाया
'पिव पीव' पुकारण लग्या पपैया, मींडकिया मांचण लाग्या
मीठा मीठा सा बोल मोरिया मोद-भरया नांचण लाग्या

सतभांमा री फुलवाड़ी में इमरत रौ झरणौ झर रयौ हो
जो फटिक थांम ऊपर सूं पड़तौ कळकळ, छळछळ कर रयौ हो
दर-रोज राजहंसां री जोड़ी अमर तळायी ढूकै ही
कोयलड़ी कुंज-निकुंजा बैठी "कुहू कुहू" कर कूकै ही

अण-गिणत फुंवारा सोरमला च्यारूं श्री कांनी चालै हा
झड़ पारिजात रा फूल पड़ै जद वींरा पत्ता हालै हा
तोता-मैना पिंजड़ां बैठ्या मन-मोवन रा गुण गावै हा
नादांन हिरणिया भाज-भाज साथ्यां रै सींग लगावै हा

पटराण्यां हीडै हीडै ही पण रुकमण सुसतावण लागी
छाया में कलप-बिरछ री सतभांमा सूं बतळावण लागी
सतभांमा बोली-"म्हे दोनूं जद पुरी द्वारका सूं चाल्या
मालक री सैन पिछाण गरुड़ तद प्रागज्योतिसपुर कानी हाल्या

वा नगरी घणी अणूंती ही धुरकोट पांच रच्छक भारी
परवेस न कोयी कर पावै जीतण री तो चरचा न्यारी
पैलै परकोटै डूंगर हा सिर उठा खड़ाच्यारूं-कांनी
दूजै गै'री चोड़ी खायां में हो बेथाक भरयौ पांनी

तीजै परकोटै अगनी री ही ऊंची-ऊंची लपट घणी
चोथ में कांकरिया उछाळ ही भाळ चलै असराळ बणी
ही नाग-फांस पांचे परकोटै अधी बंधायी त्यार खड़ी
जो जावणियै रौ जीव काढ़ दे कठां में औ पड़ी-पड़ी

गोविंद पूगतां पाण वठै जद विकट गदा-परहार करया
तो पळ भर में औ तोड़-तोड़ डूंगरियां नै इकसार करया
फेरूं वै अगनीवाण चलाय'र खायां रौ पाणी सोस्यौ
अब चक्र सुदरसन जाय कनै अगनी वायू रो बळ खोस्यौ

बिनता-सुत नागफांस सगळी जद छिन रै मांय समाप्त करी
तो वड़ी जोर सूं संख आपरौ फूंक दियौ जदुराय हरी
यूं सख नाद सुण पांच सिरौ मुर नामी राकस जद जाग्यौ
तो घणी रीस मैं भरकर वो आपै-आपै बोलण लाग्यौ

"कुण-सौ वो मूरख माणस है जो सूत्यौ नाग जगावै है
वो कुणसौ पटवीजणियौ जो सुरजो रै टांग लगावै है
वा कुण चिडकोली चांचां सूं जो समद सुखाणौ चावै है
वो कुण हिरणियौ भोळो जो ना'रां रै सींग अड़ावै है

वो कूण जीव जो जमरी जाड़ां मांय सीस यूं देवै है
टूटयं बेड़ै सूं कुण समदर लांघण री जोखम लेवै है
लपटा सूं लिपटी लाय मांय अब कूण चालणौ चावै है
यूं हेला मार विपद बुलवाणौ अब कींरै मन भावै है"

सांमी औ देख गरुड़ वाहन नै वो तिरसूल उठा धायौ
परलै रौ मुरजी औ जांणौ हो राकस रूप बणां आयौ
वी री आख्यां आगी उगळै, हा तण्यां भुंवारा, केस खड़या
हा डूंगर री कंदरा सरीसा पांचू मूंडा खुल्या पड़या

द्वारका

वो सामों आतो रीस भरयो विकराळ काळ सो लागै हो
भीषण भभूळियो मो वणकर वो वडै वेग सूं भागै हो
कांनां रा पड़दा फाड़तो पंचम रै सुर में वो रींक्यो
विनतासुर रै कांनी देख'र तिरसूल भयानक वो फींक्यो

ततकाल हरी पैनां बाणां तिरसूल-तणा टुकडा कीन्ह
राकस रा पांचू श्री मूंडां तीखै तीरां सूं भर दीन्ह
जद घणी रीस में भर कर वो गिरधर पर गदा चलायी ।
तो अे भी कोमोदकी गदा सूं वीं नै तोड़ गिरायी ।

वो दांतो बडो भयंकर गरजंतो म्हारै कांनी आयो
अर म्हां सगळां नै सागं श्री गिटणै नै वो मूंडो बायो
जद चक्र सुदरसन जाय कनै वीं रा सिर पांचू श्री काट्या
तद भोमासुर री आंख्यां आगै रा पड़दा आपै फाट्या

कोयी भी आ नी सोचै हो ओ असुर कदै मारयो जास
अीं नै भी कोयी मारणियो तिरलोकी में सूं श्री आस
सो हाथ सोड़ में सोवै हो भोमासुर श्री रै कारण
है नांव "मुरारी" पड़यो इणां रो श्री राकस नै मारण

वीं मुर राकस रा सात पूत हा सगळा एक सरीखा हा
बळ-विकरम में लड़णै-भिड़णै में अेक अेक सूं तीखा हा
वै सुणतां पांण घणी सेना ले, गिरधारी नै घेर लिया
पण अे भी, अस्तर-सस्तर सूं सगळां न आडा गेर लिया

भोमासुर रै मन सोच बडो "सेना है कुण सूं हार स
सेनापति मुर नै तो कोयी अोतार बिना नी मार स
अब समै . विताणो ठीक नही आगै चाल'र लड़णो पड़स
देखां तो जरा चालकर वो म्हांसूं डरकर क्यां में बड़सी'

भोमासुर आगै आयौ तो देख्या क मुंड ओ मुंड पड़्या
जाण्यौ क जुद्ध जोरां मांच्यौ जिण मांय सूरमां घणां लड़्या
वो च्यारूं कांनी निजर पसार'र वीं जोरावर नैं हेरचौ
पण जद मुरारि नै देख्यौ तो जांणी अगनी में घी गेरचौ

वो आप घड़्क्यौ जोरां सूं धरती बर तीन हला दींनी
अर मुर-मरदन नै बणां निसानौ मोटी सांग चला दीनी
सागै सेना आगै आयी राकस री जै जै कार करचौ
अै तुरत बाण सूं तोड़ सांग वीं पर पूठौ परहार करचौ

सगळी सेना रै साथ, एकला गिरधारी लड़णै लाग्या
सारंग धनुस सूं बाण मतै ओ छूट छूट पड़णै लाग्या
तीखै तीरां री बिरखा सूं डर राकसिया पूठा भागै
पण भोमासुर री दीठ पड़्यां ओजूं-ओजूं आवै आगै

विनता-नंदन भी साथ-साथ रण मांय झपट्टा मारै हा
चिलकणी चूंच, पैना पंज्यां सूं असुरां नै संधारै हा
अब भोमासुर गजराज चढ्यौ जी चायौ जोर लगावै हो
अस्तर-सस्तर भी भांत-भांतरा सीध सधाय चलावै हो

वो गरुड़, गरुड़-वाहन दोन्यां पर तांण-तांण परहार करै
पण अिण रै क्यूं भांवै ओ कोनी फूलां सिरसी मार करै
यूं जुद्ध जोर सूं मांच्यौ हो दोनूं ओ दांव बचावै हा
दोनूं बेजोड़ सूरमा मिल सांचो रण-रंग रचावै हा

छेवट म्हैं बोली पिरभू नै-"अब तो ओ'रो संघार करो
ओ रै उतपातां सूं ओ मरती धरती रो उद्धार करो"
म्हांरी वातां सुण गिरधारी मन में क्यूं निमचै धार लियौ
अर चकर-सुदरसण सूं वी री भी सीस तुरंत उतार लियौ

रिसि-मुनि, नर-किनर सगळा श्री नारायण री अस्तुति कीनी
सै देवां भी दुंदभी बजा पुसपां सूं धरती भर दीनी
धरती देवी री रूप बणा पोतै भगदत्त साथ आयी
परणांम बिनय रै साथ करी मनमोवन री कीरत गायी

भगदत्त हाथ जोड़यां बोल्यौ-"पिरभू, बाळा ने छिमां करो
किरपा कर अेक बार पगल्या चाकर रै आंगण मांय धरो"
भगवांन मुळक कर सैन करी तो म्हे दोनूं नीचै उतरचा
हरि अग्या सूं भगदत्त बाप रा सगळा किरिया-करम करचा

अपणै हाथां सूं बनवारी हरि वीं रै मांथै तिलक करचौ
वीं नगरी री सासण सूंप्यौ सिर पर अणमोलक मुकट धरचौ
भगदत्त सांवळौ, रुपाळौ, लांबौ-डीगौ, मुख तेज घणौ
ही सूवा सिरसी नाक बडी, हो नैणां मांय मंगैज घणौ

ही गोडां लांबी भुजा बडी ज्यूं हो बल बिकरम री मूरत
छाती चोड़ी, ऊंचा कांधा, पण ही भोळी-भाळी सूरत
वो घणौ मांन सनमांन करचौ म्हांरी बोळी मनवार करी
दामोदर वीं री मुळक-मुळक सगळी बातां स्वीकार करी

वीं री सुंदर नगरी आगै अलका नगरी पांणी भरती
बा चिलकच्यांनणी रातां मेंचिम-चिम, चिमचिम चिमक्या करती
हा गळी-गळी, मारग-मारग में, घणां अणूंता म्हैल खड़चा
जिण मै हा समदर झाग-ऊजळा, दूधां-धोळा फटिक जड़चा

वीं सिघ-पोळरी सोभ्या तो कोयी भी कैण नहीं पावै
टांकी सूं आंकी, चितरांमा सै देखणियां रै मन भावै
हो आवदार सांचै मोत्यां री माळा जगां जगां लटकै
दिन मांय कोरणी री बेलां में भरम-भरचा भंवरा भटकै

भगदत्त भूप री भगती देख'र बोल्या तद भगवान हरी
"वां सैं किन्यावां नैं छोडो जो पैली कारागार धरी"
भगदत्त कयो कर जोड़ तुरत "सोळा हजार, सौ ऊपर है
वै सगळी बोलैं एक साथ "वनवारी श्री म्हांरो वर है"

यूं कैतां पाण बठै श्री सारी राजकंवारी बुलवायी
अर घणैं मांन सूं आसण दीन्यो, वडै लाड सूं बतळायो
"अवछिमां दिरावो आप डांवड्यां, जो अितणां दिन दुख पायो
इण पिरभू नैं धनकारो दयो जो थांरी मुकती करवायी

थे सरब सुतंतर हो, थांनैं अब कवो जठै भिजवा देवूं
फरमावो जितणा श्री रिच्छक म्हैं थांरै साथ खिना देवूं"
वै राजकंवारी हाथ जोड़ मनमोवन नैं परणाम करी
बोली-"म्हैं सगळी तो परतिग्या पैली श्री मन मांय धरी

वो श्री म्हां री ती वर होसी जो म्हां नैं मुकत करा पासी
दूजो कोयी भी जण म्हांरै हाथां नी हाथ लगा पासी
जे थे नी अब स्वीकार करो तो तुरत पिराण गंवा देस्यां
सैं एकै साथ चिता में बैठ'र लोपी मतैं लगा लेस्यां

अब चायें चिता रचावो थे चायें मांथै री मांग भरो
पण म्हांरो नेम अटळ है अो थे चायें जितणा सांग भरो"
भगवांन मुळक बोल्या-"होसी जो थे नितकी चित में चावो
भगदत्त, उपाव नहीं दूजो इण नैं दुवारका पूगावो"

फेरूं असवार गरूड़ पर हो म्हैं चाल्या जद सुरजी ऊग्या
आंख्यां फुरकै इतणैं में ही तो अमरावती जाय पूग्या
सुरराज सुवागत घणो करयो सगळा सुरगण सांमी आया
माता अदिती रै कांनां में कुंडळ हाथां सूं पैराया

द्वारका

म्हैं पगां लाग परणांम करी जद घणो असीसां वैं दीनी
चोकी चढ़ाय म्हां री दोन्यां री वारी –फेरी भी कीनी
अै चल्या गया सुरराज साथ श्री राज-सभा अधिवेसन में
म्हैं इंद्राणी सागै-सागै घूमण लागी नंदन-वनमें

वा एक परी रै हाथां सूं जद कलप-बिरछ री फूल लियो
तद दूजी म्हैं लेवण लागी तो परी परै हो टोक दियो
"उपभोग सुरग री इंद्राणी इण फूलां री करणै पावै
सिणगार माणसी री करणै में पुसप आप अै सरमावै"

सुणतां श्री मरणी सो होग्यो जो इसो मांजनो हो मारयो
तन थर –थर–थर धूजण लाग्यो मन रोस भरयो जद अणधारयो
इंद्राणी घणी मनावै हो पण क्यूं भी बात नहीं मांनी
जलदी सूं जलदी गिरधर सूं मिलणै री म्है मन में ठांनी

गिरधारी जद भी आया तो म्हैं एकांतरै बात कीनी
क्यूं लूण-मिरच सा लगा लगाय'र सगळी बात बता दीनी
वै बोल्या –"सुरपति नै बताय परियां नै डंड दिवा देस्यां
इण फूलां री माळा प'राय थांरो भी मांन बढ़ा देस्यां'

पण म्हैं भी अंटकर क'यो–"नहीं तद तांणी चित न चैन पावै
जद तांणी ओ श्री कलप बिरछ म्हांरै आंगण नी लग ज्यावै
अै घणी मनायी, घणी भुळायी, बात घणेरी समझायी
"ओ इंद्राणी री कलप बिरछ है, श्रीं पर क्यूं सुरता आयी

थे दूजो बिरछ भलां ले चालो श्रीं नै छोड़ जिको चावो
इण में श्रो कुणसो लाल जड़ो जीसूं इतणो मन ललचावो"
पण म्हैं टस सूं मस नी होयी जद आपे गाछ उपाड़ धरयो
छिन में दुवारका ल्यावण री तद सगळो श्री जोगाड़ करयो

इद्राणी भाज' र वेगी सी सुरपति रै कनै जाय कूकी
म्हांरो श्री मान मारणै नै श्रा बात वणी है श्रणचूकी
इन्द्राणी रै उकसाणै सूं इंदर भी थोड़ा गरवाया
सुर-मरदन सूं लड़णै सारू सेना भी सागै श्री ल्याया

बोल्या-"श्रो पारिजात इंद्राणी री कूणउपाड़चौ है
कुण नदन-वन रो हरियाळी सोभ्या रौ भ्यांन विगाड़यो है"
विनता सुत गरज्या-"पारिजात श्री पुरी द्वारका ले ज्यास्या
श्रर वठै बगीचै में लगाय धरती री सोभ्या बढवास्या"

इंदर भी श्रोजू बोल पड़्या-"कररयो चाये जो चित चावै
पण सुरग-लोक रौ रूंख कदै नी धरती पर जांणै पावै
जे जोरां-मरदी करम्यौ तो तीनूं श्री लोक हला देस्यां
जे करस्यौ घणी हेकड़ी तो म्हे छिन में बजर चला देस्यां"

गोबिंद गरूड नै मनां करचौ श्रितणै में बिरमा जी श्राया
इदर नैं बजर उठायौ देख' र बडै जोर सूं गरमाया
"थां रो क्यूं रांम नीसरचौ है के भाठा पड़्या श्रकल पर है
क्यूं घणी हेकड़ी मारो हो के बडो भरोसौ बळ पर है

श्रपणां रै ऊपर श्री थांरो श्रो बजर कियां उठ ज्यावै है
जद राकसियां श्रो राज खोस ले बजर कठै तद जावै है
थे कुण सूं लडणै श्राया हो क्यूं भी नी बात विचारी है
तिरिया रै झूठ हठ कारण थांरी मत मारी जारी है

थे बिना बात श्रो राड़ मचावण सारू मरणो मांड्यो है
थे एक रूंखड़े रै खातर श्री भलो मांजणो काड्यो है
के बिन्द्रावन नै थे डुबोय मारण रो करतब भूल गया
के सुरग लोक रै राजा पद रै मद मे मत्त फूल गया

द्वारका

थे भोमासुर जद नाक काटली कीं नै जाय पुकारया हा
संकट काटण रा बाचा दे तद कुण थांनै पुचकारया हा
थे घणो मांन ग्रादर दरसाणै कुण नै अठै बुलाया हा
श्रीं ग्रमर-पूरी रा वडा दरूजा कुण रै ग्ररथ खुलाया हा

वयूं एक फूल रो परी आपरी ग्रितणो गरव गुमांन करयो
यूं न्यूंतोड़ मिजमांना रो थे वयूं ग्रापं ग्रपमांन करयो
ऐ पिरभू दया-निधान दीन रा बंधु छिमां रा सागर है
ग्रब दीन्यो दंड न जो कसूर रो दया करैं नट-नागर है

जो हरि सकळप सैन मातर सूं जग नै सिरजैं, भरैं, हरैं
ग्रब इण पर कुण री सकती सूं सुरराज वजर-परहार करैं
तूं ग्रांख फरूकै ग्रितणै में श्री कठै जाय वेरी कोनी
इण रै विरोध सूं तिरलोकी में तो कोयी तेरो कोनी"

यूं सुण इंदर री ग्रांख खुली जद बेगो चरणां मांय पड़यो
"हे नाथ, छिमां कर दयो थारै सांमी जो लड़णै हुयो खड़यो
हूं किरतघणी ग्रर वडो खोड़लो उपगारां नै भूल्यो म्हैं
संकट कटतां श्री मुख पाय'र यूं गरव गुमांनां फूल्यो म्हैं

श्रो पारिजात रो पादप तो म्हे ग्रब दुवारका पूगावूं
म्हारै इण मोटा खोंटा पर म्हैं पूरो तरियां पिछतावूं"
यूं मुळक मुरारी सुरनायक री सगळी बातां छिमां करी
ग्रर ग्रसवारी कर गरुड़-राज पर ग्राया म्हां रै साथ हरी

—*—*—

## चौदवौं सरग

### साल्व री वध

फ़ाटो भाख,अगूणो चिमकै तारो कर दूधिया उजास
च्यारूं-कांनी फैल र'यो है मीठो-मीठो सो परकास
मुनियां रै मन सो निरमळ है सांत सरळ पावन परभात
करै उरै उजळी उजियळी मोतो री आभा नै मात

घोर अंधेरो गोट बांधकर रात्यूं करै घणां उतपात
पण विलीन हो छिन मातर में खाय'र सुरजदेव री लात
राजा उगरसैन री लाग्यो संकट-काल गुपत-दरबार
भेळा होया जादूगण रा ठावा-ठावा सै सिरदार

ऊधौजी बोल्या ऊभा हो-"घणां दिनां री होयी बात
रांम-किसन रै कनै एक दिन नारदजी आयां परभात
बोल्या-"मगध देस में बंदी भूप आप सूं करै पुकार
जरासंध री बडी जेळ सूं तुरत करो म्हांरो उद्धार"

उणी बखत में इंद्रप्रस्थ सूं न्यूतो लेकर आयो दूत
"राजसूय जिग मांय बुलावै घणं मांन पांडू रा पूत"
तरक-मरक बोळा ओ होया दीठ फिरायी दूर-नजीक
पैली इंद्रप्रस्थ जाणो ओ छेवट सै नैं लाग्यो ठीक

दोन्यूं भाई गया तुरत ओ राजसूय रो जांच्यो ढंग
चाल्या मगध देस रै कांनी किसण भीम, अरजन रै सग
विप्र भेस में पूग बठै-वां जरासंध सूं मांग्यो जुद्ध
मातर भीमसेन सूं लड़णो हूंकारयो वो होय'र क्रुद्ध

सताईसं दिन तांणी दोन्यूं जोधा करयो घोर संग्राम
दाव लगाय एक दूजा रो करणो चावें कांम तमांम,
तीखू-तीख एक-दूजा पर करें मरम-घाती परहार
होडू-होड एक दूजां नें मारें घणी अणूंती मार

कोयी सो भी फिरयो न पूठो, कोयी सो भी सक्यो न मार
कोयी सो भी जीत सक्यो नी, कोयी सो नी मांनी हार
छेवट जाय रात नै डेरे सिरी क्रिसणनें बोल्यो भीम
"भाभी, म्हांसूं पार पड़े नी जरासंध में जोर असीम"

सिरीक्रिसण बोल्या मुळकतां-"आप लगावौ आंधो जोर
जे क्यूं कांम अकल सूं लेवौ तो हो वात पलक मैं और
जरासंध जलम्यो तद तन रा बीचूं-बीच टूक हा दोय
जरा राकसी जोड़ लगायी, जीसूं मार सकै नी कोय

बीचूं-बीच जोड़ सूं वां नें फाड़ण रो श्री एक उपाव
श्री रै सिवा विरथ है चाये कोयी खेलो कितणा दाव"
जुगत जांण दूजे दिन जोरां गरज्यो भींमसेन बलबीर
दोन्यूं टांगां पकड़ बीच सूं दांतण रीं ज्यूं चीन्यो चीर

बंदी छुड़वा जरासंध रै सुत नैं बणा मगध रो नाथ
इंद्रप्रस्थ पूग्या मन-मोवन अरजन, भीम, नरेसां साथ
विधि-विधान सूं राजसूय जिग रो सलटायो सगळो कांम
भीसम देव अग्रपूजा में लियो स्यामसुंदर रो नांम

सै राजा तो राजी होया, पांडव करयो घणेरो मांन
पण सिसपालो उछळ-कूदकर बीचूं-बीच बिगाड़ी तांन
बोल्यो-"भीसम जी री तो साठी बुध नाठी होयी' आज
राजा लोगां री पूजा में है गुवाळिया रो के काज'

यूं कं'तो कं'तो किरोध में गिण-गिण कर काढी मौ गाळ
सुण-सुण कर भी हंसतां-हंसतां मन-मोवन कर दींनी टाळ
सिसपालो पण मान्यो कोनी करतो र'यो वियां उतपात
भीसम जी बोळी समझायो कर कर भांत-भांत सूं बात

पण कुचमादी चुप न हुयो वो बकतो र'यो घणेंरी वार
चक्र सुदरसन जाय'र वीरो झट-पट लीन्यो सीस उतार
किसण भुवाजी कानी देख'र छिमां करी सुण इतणी गाळ
पण जद वो पींडो नीं छोड्यो तद यूं करणें सक्या न टाळ

सगळा राजी होया देख'र इस्ट देवरी पूजा भ्रस्ट
तुरत अग्रपूजा उछाव सूं एक भाव हो करी सपस्ट
सलट गयो यूं धीरें-धीरें राजसुय री सगळो कांम
रांम-किसन पण ओजूं तांणी पूग न सक्या द्वारका धांम

अेक गुपतचर अब आयो है जो ल्यायो अपठा समचार
सभी सभासद सुण'र ध्यांन सूं इण पर करियो जरा बिचार
नाम"मार्तिकावत"-नगरी रो राजा साल्व वड़ो बलवांन
महादेव जी री पूजा कर पायो एक अटूट बिमांन

जरासंध सिसपालै री वो एक पुराणो साथी खास
दोन्यां री भी बध सुणकर वो एक'र होयो घणो उदास
रांम-किसन नै जाण वठीनें बदळो लेवण हाथूं-हाथ
बड़ै बेग सूं आरयो है वो बोळी सेना लेकर साथ

"पुरी द्वारका नैं उजाड़ दयूं जादू गण रो कर संहार
दोन्यूं साथ्यां रो बदळो ल्यूं"परण करयो मन मांय-बिचार
आंधी रै मूंटै री ज्यूं वो आरयो है करतो उतपात
धर-कूंचा,धर-मंजळा चाल्यो आवै गिणै न दिन नीं रात

ंले रा सं गांव उजाड़या कर दीन्या है मटियामेट
करतो आरचो है मिनखां रो पसुवां री तरियां आखेट
जलदी ही आवण वाळो है वो दुवारका पुरी नजीक
रांम-किसन रै विना जुद्ध वीं सूं करणो के होगो ठीक"

सात्यकि कैवण लाग्यो–"जुद्ध रै सिवा न क्यूं भी आज उपाव
पण सेनापति विना न सेना रो होवै रण मांय लगाव"
तुरत पांण प्रद्युमन खड़्या हो बोल्या आख्यां करकर लाल
"सिरीकिसन जे नहीं अठै तो हाजर सिरीकिसन रो लाल

नहीं साल्व सूं घबरावो थे नहीं तनक होवो भै-भीत
सांमीं पड़या काळ सूं भी है लड़णो जादूकुळ री रीत
सात्यकि सेना त्यार करावो, करो दुवारां री रखवाळ
कांटा च्यारूं-मेर विछावो, जतर लगा तणावो जाळ

खायां में पांणी छुडवावो, कोठयारां में भरदयो नाज
ख्याल-तमासा बंद करावो, रण रा सकळ सजावो साज
करो सुवागत साल्व-राज रो पळ में इसो पढावां पाठ
भूल ज्याय सै छक्का-पजा मांनै सोळा दूणी आठ"

वीर प्रद्युमन कांनी देखण लाग्यो सगळो सूर-समाज
सिरीक्रिसण श्री जांणो ऊबा वोलै है जुवांन वण आज
वो श्री रूप,रंग भी वो श्री, वै श्री है विसाल भुजदंड
वै श्री नैण, बैण भी वै श्री, हाथां उसो धनुस परचंड

रंग उजळो, सांवळो, सलूणो तेजस्वी मुख सुरज-समान
काळा केस घणां घुंघराळा, आंख्यां अेक अणूंती आन
कानां में हीरां रा कुंडळ कंठां में मोती अणमोल
चोड़ो सो विसाल-करड़ो उर, लांबो लांबी भुजा सुडोल

जुध री जोसीली बातां सुण हुयो सूरमां पर परभाव
दूर गयो डर साल्व-राज रो सगळां रै मन वढयो उछाव
सात्यकि, साम्ब ग्रौर सुक, सारण, गद ग्रादिक सै जादू बीर
मूंछां दे दे ताव त्यार वै होग्या ले ले तीखा तीर

महाराज री ग्रग्या पा वै करयो लड़ाई रो परबंध
त्यार करी सगळी सेना नैं अेक-अेक सूं कर संबंध
सस्तर-पाती सभी संभाळया तोमर, परिघ, तेग, किरपाण
सेल, ढाल-तलवार, सतघ्नी, भाला, फरसा, तीर-कबांण

भांत-भांत रथयांन सुंवारया हाथी-घोड़ा कीन्या त्यार
जोस घणो उमड़यो जोधा में, कूदे वूर्त सूं परवार
बीर प्रद्युमन री सैना में सेना बणी घणी हुंसियार
साल्व-राज री ग्रगवांणी में करया मोरचा नगरी बा'र

हाथ्यां रै घमकारै सूं ग्री डोल उठया डूंगर परचंड
घोड़ां रै खुर खुंदण सूं भी धूज उठी धरती नौ खंड
काळै मतवाळै हाथ्यां पर झूलै ही सोनेरी झूल
जांणी कजराळै बादळ में खींवै ही बीजळ ग्रनुकूल

सेना री पगधूळ ग्रकासां जाय करै सूरज सूं बात
तरतर वढते अंधियारै सूं ग्राथणतो लागै परभात
साल्वराज भी जद भभूळियो सो पूग्यो करतो भूचाळ
दोन्यूं सेना भिडी जोस सूं हाथां में हथियार संभाळ

जोधां सूं जोधा भिड़रया है जोर-जोर सूं कर हुंकार
एक-एक दूजां रै साम्है तीखा-तीखा करै प्रहार
चिम-चिम चिमकंते बिमान पर साल्वराज नै बैठयो देख
बीर प्रद्युमन रै मांथै पर खिचगी एक रोस री रेख

दोन्यूं हायां धनस उठायौ खींच्यो कानां तांणो तांण
जोर लगाय'र बडै वेग सूं छोडया पांच दीपता बांण
बीजळ ज्यूं पळका पाड़ंता सन-सन करता छुटतां पांण
पांखां-धारी सरपां री ज्यूं सरणाटै सूं चाल्या बांण

वडो जोर सूं खुड़को होयौ, वण्यौ विमान तळी में छेद
बांण निसर कर गया गिगन में डांवीं भुजा साल्व री भेद
साल्वराज तो मुरछित होग्यौ सेनां मांच्यौ हाहाकार
जादू जोधा करी जोर सूं क्रिसन-सुवन री जै-जै कार

वीर प्रद्युमन ऊपर देख्यौ पण विमांन तो दीख्यौ नांय
बैरी कोनी छिन मात्तर में कठै गिगन में गयौ विलाय
इतणै मांय साल्व री साथी, मंत्री मोटो, बली द्युमांन
आप प्रद्युमन रै रथ सांमो आय'र गरज्यौ घणै गुमांन

जोधां जोधो सांमो जोय'र चित में चढ़ै घणो रण-रंग
होड़ूं-होड करै हूंकारो जोरां-जोर जमावै जंग
पळ में भिड़्या सूरमां दोन्यूं हायूं-हाथ उठा हथियार
देख-देख कर दाव दूसरा ऊपर करै बेग सूं वार

घणी बार तांणी दोन्यां में होतो र'यौ भयानक जुद्ध
नुवां मन्तरां रा प्रयोग भी करै एक रै एक विरुद्ध
फेर प्रद्युमन भरयौ रीस में मन में मांन घणौं अपमांन
एक बांण मारयौ छाती में तुरत हुयौ बेचैत द्युमांन

दोन्यूं सेना जुटी पड़ी ही मारकाट मचरी विकराळ
हाथी-घोड़ा घायल होयर वर-वर चिंघाड़ै असराळ
वीर प्रद्युमन जुद्ध देखता कररया हा रणनीति-विचार
पाछै सूं आय'र द्युमांन जद करयौ गदा री विकट प्रहार

मुरछित पड़्या प्रद्युमन भी तद झट-पट सारथि लियो संभाळ
दोन्यूं सेनां बीच जुद्ध सूं रथ नै लेग्यो दूर निकाळ
देख प्रद्युमन नै यूं मुरछित रण में गरज्यो घणो द्युमांन
पण जादू गण रा जोधा तो दियो न वीं पर वयूं-भी ध्यान

कोयी पूठो पग नी मेल्यो कोयी भी होयो
जांणी परण करयो वै मन में करणी है वैरयां रो न

वठै प्रद्युमन नै जद आयो थोड़ी घणी देर में चेत
सारथि नै धमकाय'र बोल्या-" इसड़ो थांरो क्यांरो हेत

जुद्ध-भोम सूं यूं भाज र आणो हैं कायरता रो कांम
सेना सूं बायर ल्याय र थे डबो दियो है कुळ रो नाम"
हाथ जोड़ सारथि बतलायो-"म्हांनै छिमां करो म्हाराज
मुरछित भट रो ज्यांन बचाणो है सारथि रो पैलो काज

अब म्हे तुरन्त पांण पुगावूं रथ नै दोन्यूं सेनां बीच"
यूं कै'तां रथ नै वो लेग्यो वठै जठै ऊंचो वो नीच,
देख प्रद्युमन नै सामों अब खड़-खड़, खड़-खड़ हंस्यो द्युमांन
बोल्यो-"मरणै खातर ओजूं आया हैं के अब श्रीमांन"

नहीं प्रद्युमन दियो पडूतर मार-मार कर तीखा तीर
गरबीलै भी द्युमांन रो छेद चालणी करयो शरीर
वो भी मरमां पर प्रहार कर वदळो लेवै हाथूं-हाथ
आकळ-वाकळ सो होय र भी लड़रयो बड़ो वीरता साथ

छेवट वीर प्रद्युमन छोड्या एकै साथ मोकला बांण
खाय तड़ाछ द्युमांन जा पड्यो छन-मातर मैं तज्या पिरांण
यूं धुमान नै पड़तो देख'र हरख्या सै जादू-परधांन
तुरत पांण पण आयो रण में साल्वराज चढ़ सुघड़ विमांन

द्वारका

ऊपर सूं बरसाया भाठा, सिला-खंड भी बारंबार
पण प्रद्युमन तीर तीखा सूं काट-काट कर दीन्या छार
इणी बखत में इंद्र-प्रस्थ सूं आया सिरीक्रिसन बळरांम
क्रिसन क'यौ चकराय'र-"पुर में कूण मचायो है संग्रांम

कोयी राजा करचौ आक्रमण ई में क्यूं भी संसय नांय
म्हैं तो जाय अठीनै देखूं दाऊ, थे चालौ पुर मांय"
दारुक जुद्ध-भोम जद पूग्यौ,वांरै रथ री धुजा पिछांण
जादू-जोधा नांच उठ्या सै सिरीक्रिसन नै आया जांण

साल्वराज भी ढीलौ पड़ग्यौ मन ओ मन भय-संसय मांन
पण ऊपर सूं निरभै होय'र घणी बखेरण लाग्यौ स्यांन
"अरे किसन तूं भो आ पूग्यौ आपै ओ आवै भरमाय
चालै मतै गांव कांनी ओ मोत गादड़ा री जद आय

घणी बार सूं बाट उडीकूं कोयी तरियां तूं आ ज्याय
छाती ठंडी करूं मार कर सगळां री बदळौ चुक ज्याय
मामै री हत्या तूं कीनी, सिसपालै री चोरी मांग
जद भी म्हैं परतिग्या कींनी तोड़ बगावूं तेरो टांग

निरलज्या,तूं जरासंध रै आगै भाग्यौ हो रणछोड
वीनै धोखै सूं मरवायो थांनै कठै मिलेगी ठोड
बिना बात सिसपालौ मारचौ, अब थांरो आयो है काळ
आज तनै मारूंगो निसचै किणी भाव नी होवै टाळ"

सिरीक्रिसन बोल्या-"राजाजी, वीर न रण में बोलै आप
मर कर बैरी मतै बखांणै सदा सूरमां री परताप
क्यूं न जुद्ध में करण सकै जो वै कायर ओ करैं प्रलाप
जिण री जस दूजा न बखांणै वै बरड़ावे आपूं-आप"

मुणतां पांण रीस में भरियौ साल्व करया करड़ा परहार
सिरीकिसन भी जचा-जचा कर मारया बचा-बचाकर वार
राजा साल्व विमांन चढ्यो श्री ऊपर सूं कररयौ संग्राम
गरुड़-धुजी रथ पर बिराजता नीचैं सूं लड़रया घनस्यांम

दोन्यूं सेना देखण लागी इण लूंठा बीरां री जुद्ध
तुरत जीत पर संखनाद करती उछाव सूं सत्रु-विरुद्ध
गिरधारी रैं आघातां सूं साल्व होयग्यौ लहू-लुहान
पण विमांन सूधां ही होग्यौ पळ भर में वो अन्तरध्यांन

इतणे मे कोयी नर आय'र सिरीकिसन नैं दियौ सनेस
साल्व उठा वसदेव धणी नैं लेग्यौ बणा कपट रौ भेस
स्यांमसुनर सोच्यौ छिन-मातर "दाऊ है दुवारका मांय
दारै आगै सूं उठाणा में कोयी भी हो समरथ नांय

पण जद साल्वं सांमनैं दीख्यौ अपणैं उण बिमांन रैं साथ
साच्यां श्री बसदेव तणी चोटी पकड़यां हो बीरो हाथ
बोल्यौ साल्व-"किसन ओ कुण है आंख खोलकर जरा पिछाण
रोक सकै तो रोक भलांई छिण में इण रा हरूं पिराण"

यूं कै'तो बसदेव-सीस पर मारी वो पैनी तलवार
जादूगण सेना में मांच्यौ बडी जोर सूं हाहाकार
पण घणस्याम न बिचलित होया छोड्यौ एक अणूंतौ बांण
ख्याल खतम होयौ सगळौ, जो रच्यौ साल्व माया रैं पाण

झूठौ औ बसदेव बणायौ झूठी श्री मारी तरवार
झूठौ श्री औ सांग दिखायौ झूठौ श्री सगळौ व्यौपार
सिरीक्रिसण देख्यौ वीं कांनी बांवीं भ्रकुटी में बळ डाळ
कौमोदकी गदा फटकारी दोन्यूं हाथां मांय संभाळ

लाग्यो यूं आघात गदा री वा  बिमांन रै जद  भरपूर
साल्व पड़्यौ  धरती पर पण होग्यौ  बिमांन तो चकनाचूर
तुरत  पांण  वो उठ्यौ धूळ सूं आपै घणै  रोस रै साथ
सिरीक्रिसन  रै कांनी भाज्यौ  भारी गदा  उठायां हाथ

काट्यौ हाथ बांण सूं वीरौ  फेरूं भी धायौ  कर रीस
चक्र  सुदरसन  छोड बेग सूं मायावी  री काट्यौ सीस
जादू-जोधा  संख  फूंकिया  हुयी हरख-धुनि च्यारूं-मेर
बाजण  लाग्या बडी  जोर सूं ढोल, नगारा, तासा, भेर

—※—※—

## पनरवों सरग

## पती री दांन

घनस्यांम आप दुवारका में मगन जद बसता र'या
नारद निकट तद तार वीणा रा वठै कसता र'या
जद मोगरा रै सुमन में सोरम घणी भर ज्याय है
तद मोकळा भंवरा वठै श्री मस्त हो मंडराय है

परभात सतभांमा सुण्या जद सबद 'नारायण हरी'
तो देवरिसि नैं देख, उठ, परणांम चरणा में करी
पगल्या पखाळ परेम सूं ततकाल चरणाम्रित लियो
पूजा घणां सनमांन सूं कर, ऊंचलो आसण दियो

कर जोड़ बोली-"देव, याद अबार म्है थांनै करी
छिन मांय बोली सुण पड़ी रिसिराज री ममता भरी
जीमूं समझ में आय है म्हां पर दया थांरी घणी
उपगार मानूं आपरो म्हैं भोत किरतग्या बणी"

नारद क'यो हंसकर तुरत-"भगवान नैं धनवाद है
म्हांरै जिसो अळबाड नैं कोयी करै जो याद है
कोतक बडो मनमांय अब बोलो बणी के बात है
जो आँ लड़ायी-खोर रो सुमरण करयो परभात है

बोली मुळकती सतभांमा-"हरि भगत थे लोग हो
संसार में सब भांत श्री परभात सुमरण जोग हो
म्है सोच री आँ जलम में म्हांरो बडो श्री भाग है
पूरब जलम निसचै बण्यो कोयी अणूतो त्याग है

गोविंद सा जो पति मिल्या पाया सकल सुख-भोग है
बाकी न मनस्या कोय अब सगळा सरावै लोग है
जे आगलै भी जलम में अे श्री पती म्हांनैं मिलै
तो श्री हमीणै हिव-कंवळ री पांखड़ी पूरी खिलै

थे देवरिसि सरबग्य हो संसार में घूमो घणां
थांरै सरळ उपदेस सूं तिर ज्याय है बोळा जणा
थे श्री जलम-जलमांतरां री बात जाणो मोकळी
थे जगत रै उपगार में हांडो सदीव गळी-गळी

अब आप म्हांनैं भी अठै अिणरी उपाव बताय द्यो
कै नेम-धरणै सूं बणै श्रो कांम ठायी राय द्यो"
नारद क'यो गंभीर वण-"आ तो सरळ सी बात है
इण रै अचूक उपव री परभाव तो विख्यात है

देवी सती कीन्यों जणां म्है श्री करायो हो प्रथम
म्हादेव जी पति पा िया बण पारबती दूजै जलम
सुरलोक इंद्राणी सची थोड़ा दिनां पैली करयो
अटक्यो उणांरो कांम भी म्हैं आप स.रयो उद सरयो

जे आपरो मन हो अठै तो आंपनै करवाय द्यूं
किण बिध करांणी के पड़ै सगळो विधान बताय द्यूं"
भुंझळाय बोली सत्तभामा-"वयूं कुतरकां मूं घिरो
वयूं झाड़-बोझां बार कर थे आप श्री फिरतां फिरो

सूंधी बतावो बात के जोगाड़ करणो चायजे
कै चीज ल्याणी होयसी कै नेम धरणो चायजे"
हंसकर क'यो नारद-"सैंग जोगाड थांरै पास है
थे नेम भी पूरा निभावोगा इंमो बिसवास है

जिण भांत इंद्राणी करयो थोड़ा दिनां पैली वठै
वा बात सगळी आपनै आपै सुणायूं हूं अठै
परभात में असनान कीन्यो इंद्र इंद्राणी जणां
तो कल्प-तरुरी सात परकंमा करी दोनूं जणां

सफळप इंद्राणी लियो जद सास्तरां रै नेम सूं
अपणै पती री आप कीन्यो दान म्हांनै प्रेम सूं
फेरूं मतै थीं मोकळो धन-दरब म्हांनै दे दियो
अर आपणै भरतार नैं यूं मोल म्हांसूं ले लियो

पतिदान री संसार में मैमा बरणन अपार है
श्री सूं जलम जलमांतरां श्रो पी मिलै भरतार है
बोळी जगां जाण्यो-गुण्यो श्री री सुफळ परिणाम है
श्री रै बिना कोयी तरां सधणं सकै नी काम है"

हरखाय सतभांमा क'यी-"श्रो तो सरळ बेपार है
है पारिजात कनै खड़्यो, बैठ्या घरां भरतार है
अर दांन-पातर थां जिसां म्हां नैं कठै पावै नहीं
अब कांम श्रो सारयां बिना चित चैन छिन आवै नहीं"

यूं बोल सतभांमा तुरंत सिरीकिसन कांनी गयी
बोली क-"मांनो बात अेक अबार श्री म्हांरी क'यी'
सुण स्यांमसुंदर भी क'यो -"बोलो सरी के बात है
बिपदा कठै सूं आपड़ी परभात श्री परभात है"

बोली पकड़ कर हाथ वा-"अब आप ऊठो तो सरी
म्हांनै जरूरी काम है बिनती करूं ममता-भरी"
पड़तर मिल्यो-"पण कांम रो अब के बतावण में घटै
यूं बिन बतायी बात रो बेरो न कोयी नै पटै"

द्वारका

कं'ता मुळकता स्यांमसुंदर साथ श्री वां रै गया
परभांम नारद नैं करी हंसकर बचन वांनैं क'या
"नारद, थरां थे श्रावतां श्री के करौ खिलवाड़ हो
जावौ जठै थे क्यूं न क्यूं करता र'वौ श्रळवाड़ हो"

नारद दियौ पुड़तर-"श्रठै म्हांरौ मिसौ श्रो कार है
मोडा गिरस्थां रौ मतै करता फिरै उपगार है
रांणी म्हनैं क्यूं बात बूझी वा तुरंत बतायदी
दूजै जलम श्रो पति मिलण रौ भी उपाव सुझायदी

श्रब श्राप इण रौ साथ देय सहायता म्हांरी करौ
श्रो कांम सूल सधाय इण रै चित्त री चिंत्या हरौ"
घनस्यांम मन में मुळकता सा बोल -'नारायण हरी'
ले साथ रांणी, कलपतरु री सात परकंमा करी

निज हाथ मांय सिरीकिसण रौ हाथ सतभांमा लियौ
पतिदांन रौ संकळप कर रिसिराज नैं पकड़ा दियौ
नारद क'यौ "म्हाराज, चालौ श्राप म्हांरै साथ श्रब
थांरी म्हनैं चोखी-तरां पकड़ा दियौ है हाथ श्रब

थांनैं घणां दिन होयगा है दूर म्हां सूं भागतां
बोळी बितायी रात म्हैं थांरै बिरह में जागतां
श्रब श्रापनैं छोडूं नहीं ठावौ हियै में राखस्यूं
भोग्यो वियोग घणां दिनां श्रब संग री सुख चाखस्यूं"

उठ'र तुरंत सिरीकिसण भी साथ वांरै होयगा
तो सतभामा रै हियै रा भाव सगळा खोयगा
घबड़ाय बोली-"देवता, श्रब श्राप ले ज्यावौ कठै
धन-दरब लेल्यौ मोकळौ पण श्रापनैं ल्यावौ श्रठै"

पनरवौं सरग

नारद क'यो-"म्हांनै नहीं धन-दरब रा दरकार है
म्है संपदा रो के करां म्हारै नहीं घरवार है
थांरो दियोड़ै दान पर क्यूं भी नहीं अधिकार है
अब जीव भटकाणो इणां पर धरम सूं पर-बार है"

सुरग्यांन सतभामा घणी पण वात सुण भरमायगी
ओ देवरिसि रो ढंग देख'र रीस सूं गरमायगी
बोली-'करो म्हाराज, सुमरण वात जो हो थे क'यी
अब क्यूं पल्टरया हो, घणी धन-दरब जद म्है दे र'यी

थे तो म्हनै वातां भुळाय'र भोत ओ धोखो दियो
पतिदांन रो षड़यन्त्र रच सरवस्व म्हांरो हर लियो
दीन्यो उजाड़ चिनेक मे म्हांरो बगान हरयो-भरयो
भाठा भिड़ाय अठी-उठीनै नांव निज मांचो करयो"

नारद मज़ा लेतां क'यो-"किण वात रो अब रोज है
जद चीज अपणी बेचणै में होय मन री मोज है
ही वात पैली बेचणै री अब विचळग्यो चित्त है
जो मोल हो घनस्यांम रो जग में इसो के वित्त है

संसार में सुवरण रतन धन दरब री जो संपदा
म्हांरै मतै इण रै बिना वा होय आवै आपदा
तो छोड अमिरत घूंट नै कुण भैर कंठ लगायसी
कुण खीर-खांड परे बगाय'र रावड़ी नै चायसी

अब आंम रो फळ छोड़ कुण रै नींमड़ो मन भायसी
कुण छोड़ निरमळ गंगज़ळ आपै गढोयी न्हायसी
कुण कलप-तरु छोड़'र धतूरै फूल रै बांथ्यां पड़ै
कुण सुरग रो सुख तज नरक में जावणै सारू लड़ै

सगळा सुवारथ न जगत मे आगली पंगत धरै
जा कांम मे क्यूं ओत हो, वीं नै मिनख परथम करै
स. स्यांमसुंदर पर घणो थे मोह अब मतनां करो
हाथा दियोड़ दान पर अब लोभ मत मन में धरो"

अब नरम होय'र सत्तभांमा ल्हेलड़ी खाणै लगी
वातां भुळाय'र देवरिसि नै मरम समझाणै लगी
"म्हांरी गिरस्थी ऊजड़ै, थांरो सुवारथ नी सधै
थांरै न क्यूं भी लाभ हो म्हांरै विथा मन में वधै

सापुरस कोयी भी इसो नी कांम दुनियां में करैं
मतबल सधै नी आपरो दूजा मतै जीं सूं मरैं
थांनै न अपणो इसो ब्योपार करणो चायजै
थांरै कमाये कांम सूं दूजो न मरणो चायजै

धन-दरब लेल्यो मोकळो चायै जिसो मन भांवतो
दुरलभ पदारथ दे सकूं म्है आप रै चित चावतो
किरपा करो म्हां पर अठै थांरै जचै सो मांगल्यो
चोटी ज़ चोटी देह री चावो जठै सूं छांगल्यो"

नारद पिघळग्यो मोम सो, पडुतर दियो यूं बोलकर
"हरि रै बरोबर दरब लेस्यूं ताखड़ी में तोलकर"
तनकाल बोली सत्तभांमा-"मांग थांरी ठीक है
दयूं दरब इण रै तोल रो आ बात लो'री लीक है"

अब सत्तभांमा जो तुरत ओ ताखड़ी मंगवायली
अणगिणत धन री मोकळी कूडी वठै लगवायली
अणबोल दामोदर मुळकता जाय बैठया ताखड़ी
तुलवाण लागी सत्तभांमा मुदित होय खड़ी-खड़ी

पण धन दरब रो पालड़ो तो त्यात में ऊंचा चढ़चौ
धनश्याम हाळो वाळ भर हाल्यौ न ऊपर नैं वढचौ
तो खीज मन में सतभांमा संपदा सा मेल दी
जो चीज आयी निजर में वा ताखड़ी में ठेल दी

पण ताखड़ी रै पालड़ै में फरक क्यूं आयौ नहीं
जो भर न छोडी भोम नै, तिलभर सरक पायौ नहीं
आ बात सुण सैं राणियां आयी 'बठै भाजी हुयी
तो रुकमणी नै देख सतभांमा घणी राजी हुयी

बोली-"रिसी री बात मान'र म्हे कबाड़ो कर लियौ
"आ बैल म्हांनै मार लै, ओ बोल सांचो कर दियौ
क्यूं भी समझ आवै नहीं है कांम कुणसो अब करूं
कोयी कुवै में जा पड़ूं कै झैर-बिस खाय'र मरूं

ओतार लिछमी रा खरा थांनै बतावै लोग है
जिण रै अधीन अपार धनसंपद, सकळ सुखभोग है
थांरी विभूती, धन-दरब भी पालड़ै में जे धरौ
तो त्यात दूजै पालड़ै नैं भार सूं ऊंचौ करौ"

रुकमण मुळकती सी क'यो-"म्हैं आप सूं न्यारी नहीं
म्हांनै विभूती संपदा है आप सूं प्यारी नही
पण संपदा सगळी भलां ओ म्हांरलो पल्लै भरो
इण रै बरोबर हो नहीं चायै म्हनै निज में धरौ

कोयी न जाणै मरम ओ किण भांत ओ संकट टळै
किण भांत थांरी भावना री बेलड़ी फूलै-फळै
पण एक आई ध्यान में म्हारै, अचूक उपाव है
होणै सकै अब आपणो जी सूं तुरंत बचाव है

ततकाल विंद्राबन खिनावौ गरुड़ जी नै मांन सूं
बण ज्याय अपणो कांम स्यात गुवाणळणी रै ध्यांन सूं
उण रो परेम घणो अपूरब जगत में बेजोड़ है
इण रै अणूतै भार रो उण रै कनै औ तोड़ है
इण सूं न वै न्यारी कदे इण में र'वै लो-लीन है
इणरी अणत विभूति भी उण रै सदीव अधीन है
वांरै कनै भेजो सनेसो बात झट बण ज्यायसी
इसड़ी घुळघोड़ी गांठ नै भी वै मतै सूं सुळझायसी"
सुण बात सतभांमा, गरुड़ जी नै तुरंत खिना दियो
कै बात करणी है वठै चोखी तरां समझा दियो
वांग्रो पगां जद गरुड़जी ततकाल पूठा आयगा
तो देखतां श्री सै जण्यां रा मलिन मुख हरखायगा
बोल्या गरुड़-"श्री-पालड़ो धन-दरब सूं खाली करो
सरधा तथा सनमांन सूं अै पान दो श्री में धरो"
यूं सत्तभांमा नै वठै वै दोय तुळसी-दळ दिया
वा संपदा सगळी उतार'र पालड़ै में धर दिया
अब पालड़ो तो स्यांमसुनर रो मतै ऊंचो चढ्यो
तुळसी-दळां रो पालड़ो पल मांय नीचै नै बढ्यो
रिसिराज भाज'र दोय तुळसी दळ मतै कबजै करया
अर सत्तभांमा रै हियै रा दुख-दरद सगळा हरया
नारद दया सूं आपड्यो संकट इयां आप टळ्यो
धन-दरब-गरब गुमांन राणी सत्तभांमा रो गळ्यो
भगवान रै भावै नहीं धन-दरब रो क्यूं मोल है
पण प्रेम-अरपित पांन तुळसी रा घणा अणमोल है

## सोलवीं सरग

### ऊसा–अनिरुध

बाळकियै सूरज री पैली किरणां छूटी
आभै ऊसा री सौनैरी आभा फूटी
घणी सुरंगी बणी द्वारका वी रै सागै
अक–अक गळियारौ रंग–बिरंगौ लागै

नुंवा–नुंवा गै'णा कपड़ा पैरयां पुरवासी
आपसरी में करता फिरै मसखरी हांसी
कामणियां सूं भरी पड़ी ही म्हैल–अटारी
सगळी भांत–भांत सूं भोत वधावा गा'री

टाबर नांचै, खेलै खेल चूंतरां–गोखां
होलरिया किलकारी मारै बीच झिरोखां
नही किणी रै भी मन में आणंद समावै
आंख्यां पांण अणूंतौ औ अुतसाह दिखावै

काल प्रद्युमन सुत अनिरुध पूठौ घर आयौ
बाणासुर री बेटी ऊसा व्याय'र ल्यायौ
जादूगण री आज निकळ री है असवारी
सज-धज धूम-धाम सूं राजसभा मैं जा री

घणी मंगेजण घोड़ी अठै नांचती चालै
गरवीला गजराज आज हळवै सी हालै
बीर सूरमां अंबावाड़ी मांय विराजै
मांन गिगन रै मांन आपनै मेघरा गाजै

झिरण-झिरण करतां सुंनर-सुंनर रथ आवै
जिण में वैठथा महारथी मूंछथां तरणावैं
जनता देख-देख कर सगळां रा गुण तोले
उगरसेन म्हाराजा री सैं जै-जै वोलै

राज-सभा मे आज गलीचा नुंवा विछाय
चंनण-केसर अर कपूर रा जळ छिड़काया
लाल-लाल थांभां पर कचन कळस सजाया
भांत-भांत रा गाजा-बाजा भोत वजाया

सुवरण - सिवां रै कांधां सिघासण सोवै
माणक-मोती-मूंगां जड़्यां घणो मन मोवै
विद्या-वैभव-भरिया पिंडत आया आगै
जोत ग्यान री जिण रै नैणां जगमग जागै

तरवारयां रा धणी सूरमां-सांवत आया
तेज़ ओर परताप अणूंतो सागै ल्याया
आया साहूकार विनय री मूरत वण कर
रीत-नीत, व्यौहार, दया-गुण छाया जिण पर

सिरीकिसण बळराम साथ श्री दोनूं आया
कूंळी ही, पण वजर-कठोर जिणां री काया
गोर-सांवळां री जोड़ी बेजोड़ वणी ही
मुखड़ां पर अदभुत गौरव री छटा घणी ही

आंख्यां मांय अणूंतो ओज आप श्री ओपै
दया-दीठ सूं दीन-जणां रा दुखड़ा लोपै
तावड़ियै पीतांवर तार सुनैरी झिलकै
डुपटै तणी किनारी चांनी सिरमी चिलकै

वांरै लारै-लारै उधौ, सात्यकि आया
जादू जोध-जुवांन घणां ओ सागै ल्याया
छेवट उगरसेन सिघासण आय बिराज्या
भेरी, संख साथ मोकळा बाजा वा-या

च्यार मिनख मांडणै मड्या सा चवर डुळावै
रतनां जड़ची छतर सुवरण रौ अेक उठावै
बदी, चारण, भाट, कवीसर बिड़द बखाणै
अेक-अेक सूं आगै-आगै सुर नै ताणै

बोल्यौ अेक-"जगत में जदु रौ वंस निराळौ
जादू जोधा जुध सूं देवै कदै न टाळौ
थोड़ा दिन पैली अनिरुध नै कोयौ लेग्यौ
पै'रादारां री आंख्यां में लाकू देग्यौ

जद जादू जोधां नै वींरौ बेरो पाटचौ
तद जाय'र रिपुदळ गाजर-मूळी ज्यूं काटचौ
राजकंवर अनिरुद्ध ठाठ सूं पूठा आया
बाणासुर री बेटी ब्याय'र सागै ल्याया"

दूजौ बोल्यौ-"असुर-बंस रौ नांव उजागर
परम भगत प्रहलाद हुया जी में गुण-सागर
उण रा पोता राजा बलि हैं दांनी नांमी
भुज-बळ पांण वण्या तिरलोकी रा जो स्वांमी

परमेसर भी जिण रौ मांन बढाणै खातर
होया बावन रूप वणाय, दांन रा पातर
बलि राजा रौ सुत परसिद्ध नांव बाणासुर
नगर हिमाळै मांय वसायौ है सोणितपुर

सिव संकर री जद वो घणी तपस्या कींनी
तद हरसित वै वर मांगण री अग्या दींनी
असुर क'यो करजोड़–"सदा पुर मांय विराजो
कानो री ज्यूं अठै बजावो डमरू–वाजो"

"अस्तु वचन" कै' बस्या बठै भोळा–भंडारी
बाणासुर री मनस्या पूरण करदी सारी
नित सिव री पूजा करतो वो घणै मांन सूं
अस्तुति–पाठ, आरती गातो बडै ध्यांन सूं

भुजबळ– गरब, गुमांन पांण वीरो मन डोल्यो
सम–भोळा नैं राजी देख अेक दिन बोल्यो
"सिव–संकर म्हाराज, अेक विनती है म्हांरी
चरणां रै चाकर पर दया बडी है थांरी

थे सुर–असुरां नैं तो दो–दो हाथ दिवाया
हाथ हजार अेकलां म्हांनैं श्री बगसाया
बळ–विकरम री म्हां में थे भंडार भरयो है
म्हांरी जोड़ी री दूजो कोयी न करयो है

खाज हजारूं हाथां री किण भांत खुराबूं
महा–जुद्ध लड़णै री मनस्या कियां पुराबूं
के तो कोयी म्हांरै जिसो जुवांन बणावो
नीतर म्हांरै साथै दो–दो हाथ दिखावो"

बाणासुर री मोटो गरब–गुमांन निरख कर
भोळा सिंभू वोल्या मन री भाव परख कर
"घबड़ा मत इसड़ो जुवांन तूं बेगो पासी
जो थांरै हजार हाथां री खाज मिटासी"

राकस फेरूं क'यो-"कठै म्हे ढूंढण जांवू
तिरलोकी रै मांय कठै सी वां नै पावूं"
सिंभू बोल्या-"थांरै कनै आप आज्यासी
खाज खुरावण रो जुगाड़ भी आप करासी"

राजी होय'र वाणासुर म्हैलां में आग्यो
आवणियै जोधा री बाट उडीकण लाग्यो"
बोल पड़्यो इतणै में तीजो चतर कवीसर
"वाणांसुर रै बेटी अेक बडी लाडेसर

ऊसा नांव सोवणी ऊसा जिसी सलूंणी
छिबी निखरती जावै जीरी छिन-छिन दूंणी
गोळ-गोळसो मुखड़ो, बडळा नैण-कटारा
नाक उठावू, कांम-कबाणी बंक भुंवारा

मूंगा जिसा लाल पतळासा होठ निराळा
मोती-उजळा दांत, केस काजळ सा काळा
कूंळा-कूंळा कांन, सुरंगी ठोडी न्यारी
ऊंचो दिपै लिलाड़, नाड़ सुतवां, उर भारी

गोरी-गोरो गात, लोयणां लोच अणूंतो
खीच-खीच निजरां नै दे निरखण रो न्यूंतो
न्यारो वीं'रो म्हैल, मोकळा चाकर बानी
बडै लाड सूं मोज करया करती मनमांनी

थोड़ा दिन पै'ली क बात यूं बणी अकूती
तारा-भरी रात मैं वा छिक-नीदां सूती
मतै चाणचक रोयी-'पीतम, कठै पधारो"
सुण वान्या रो अमलो भेळो होग्यो सारो

द्वारका

पण ऊसा क्यूं बोलै नी रोवै श्री रोवै
टळक-टळक ढळतै अंमुंवा सूं मुखड़ो धोवै
छेवट नांव चितरलेखा चातर सी बांनी
जो मूं मन री बात न कोयी रै'वै छांनी

बोली बान्यां नै-"थे सगळी बारै जावौ
घणो न बाग्री-सा रै जीरी बिथा बढावौ
गुणनां-पांण गयी वै उठ-उठ बारै सारी
चतर चितरलेखा उठ ऊसा नै पुचकारी

"म्हनै बतावौ के सुपनो देख्यौ क्यूं रोयी
बिथा-बेदना के है किण बिध सुध-बुध खोयी"
श्यावस पाय'र ऊसा री क्यूं सुरता जागी
हुचकी लेती-लेती बात बतावण लागी

"सुपनै पीतम री मन-मोवन मूरत देखी
सरम सरळ सरवांग-सोवणी सूरत देखी
वो म्हांरै मन नै मरोड़ कर सागै लेग्यौ
बिथा-बेदना अणधारी सा म्हांनै देग्यौ

ओजूं वां सूं मिळणो तो अब लागै ओखौ
मिल्यां बिना जीणै सूं है मरणो श्री चोखौ"
दसा देख कर करी चित्तरलेखा चतरायी
होळे-होळे वींनै बातां मांय भुळायी

सुर, नर, असुर घणांरा चितर बणाय दिखाया
सगळां रा गुण-दोस, कांम, कुळ, नांव बताया
पण ऊसा जो पैल-पोत सूं "ना" अपणायी
वीं नै छोडी नहीं, न दूजी बात बणायी

छेवट जादू वीरां रा चितरांम दिखाया
देख्यां थोड़ा-थोड़ा – सा वीं रै मन भाया
सिरीकिसण रौ चितर देख कर वा चकरायी
फेर प्रद्युमन रौ देख्यौ जद वयूं सरमायी

अनिरुध रौ चितरांम देख मुळकंती बोली
राजी होय'र मन री सगळी गांठां खोली
"ओ श्री मन रौ मीत भली तरियां म्हैं जांणूं
आ श्री चित रौ चोर देखतां-पांण पिछांणू"

बानी क'यो–"जादवां री कुळभूमण ओ तौ
पूत प्रद्युमन रौ है सिरीकिसण रौ पोतौ
है अनिरूध नांव ग्रीरौ ल्याणौ नी सो'रौ
है दुवारका पुरी मांय बड़णौ ओ दो'रौ"

ऊसा बोली–"सखी, फेर क्यूं देर लगावै
म्हनै भेर रौ प्यालौ क्यूं नी ल्या पकड़ावै"
क'यौ चितरलेखा–"न इया थे बणौ बावळा
धीरै-धीरै फळ पाकै, होवौ न तावळा

पुर में बड़णै मारू म्हैं क्यूं सांग रचूंगी
चक्र सुदरसण सूं जादू रै जोर बचूंगी
तुरत-पाण जावूं म्हैं थे अब धीरज धारौ
निसचै लेय'र आवूं हूं मत बुरौ बिचारौ"

यूं कै'ती गिगनार उडी वा जादूगारी
पळ में पूगी अठै सुमर संकर त्रिपुरारी
कोयी पै'रैदार न वीनै टोकण पायौ
भाग-जोग सूं नही सुदरसण रोकण पायौ

वा म्हैलां में बड़ माना री चक्कर चलायो
सुख-सूत्या रनिरुध नैं सेजां साथ उठायो
उडी गगन मारग सूं झट सोणितपुर आयो
ऊसा वांनैं देख घणी मन में हरसायो

कयौ चितरलेखा-"बाओसा, आप सम्हाळो
चीज आपरी ल्या सूंपी अब देखो-भाळो"
यूं कै'ती वा गयी उपा अब निरखण लागी
ज्यूं-ज्यूं निरखै त्यूं-त्यूं घणी ल्हालसा जागी

मुखड़ै री मुळकांन चराचर रो मन मो'वै
प्रतिभा री परकास मतैं मांथै पर सा'वै
इसड़ा जोध-जुवांन दुनी में थोड़ा होवैं
देख्यां भाजै भूख, देह सा सुध-बुध खोवैं

घणी देर में अनिरुध नैं जद चेतो आयो
सुपनो सांचो होयो देख'र चित चकरायो
बोल्या-"कुण हो आप, अठै किण बिध म्हैं आयो
सेज समेत उठाय अठै कुण म्हांनैं ल्यायो"

मुळक-मुळक कर ऊसा पूरी बात बतायी
किण विध जा कुण ल्यायी चोखी तरां सुणायी
पेछ वां अनिरुध री सेवा करणैं लागी
घणो मांन-सनमांन दिखा, मन हरणैं लागी

रळ-मिल दोनूं दिन-भर चौपड़-पासा खेलै
मतै अेक दूजां री मूरत मन में मेलै
कोयी चावै कितणी छिप'र करै मनमांनी
पण थोड़ा दिन में न र'वै कोयी सूं छांना

पैली चाकर वांन्यां में क्यूं धुगरो चाल्यो
फेरूं चोकीदारां रौ चित भी क्यूं हाल्यौ
कोयी जाय'र बाणासुर नै खबर पुगायी
वीं रै मन मे सुणतां-पांण घणी रिस आयी

सेनापति नै क'यौ—"चोर नै जाय'र झेरौ
सेना लेय'र साथ म्हैल ऊसा रौ घेरौ
किण विध कूण कठै सूं आयी पतो लगावौ
तुरत जीवतां नै ग्री अठै पकड़ कर ल्यावौ'

सेनापति ततकाल म्हैल रै दीन्यौ घरौ
सुळभळाट सुण अनिरुध नें जद पाट्यौ वेरौ
तीर-कबांण हाथ में लेय'र वारै आयौ
बळ-विकरम जांणी जुंवान रौ रूप वणायौ

ऊंचौ भाल विसाल, नाक तीखी-गरवीली
सरस सोवणी सूरत,ठोडी घणी हठीली
बडी-बडी सी रतनारी आंख्यां मदमाती
बाहु-दंड परचंड, कठोर बजर सी छाती

जगतै खीरां जिसौ तेज मुखड़े सूं बरसै
सहज सरूप रूप देख'र देखणियौ हरसै
वठै देखतां - पांण सैनिकां रौ मन मोयौ
छिन-मातर तो सेनापति भी चेतौ खोयौ

फेरूं सावधान हो वीं पर वाण चलायौ
अनायास श्री अनिरुध वीं नै काट गिरायौ
थोड़ी देर वठै चोखौ रण-राम रचायौ
बीर अेकलौ सगळां सागै जुद्ध मंचायौ

राकस सेना घणै ताव सूं लड़णै लागी
लोथां ऊपर लोथ मतै श्री पड़णै लागी
सेना रौ विणास सुण कर बाणासुर आयौ
अनीरुद्ध रौ रूप देख मन में हरसायौ

"वाश्री सा ओ वर तो घणौ सोवणौ हेरचौ
पण म्हारै ऊजळै नांव पर पांणी फेरचौ
जी सूं औं रै साथ ब्याव नी होणै पावै
डंड नहीं देवूं तो म्हांरो नांव लजावै"

यूं विचार बोल्यौ-"तूं कूण कठै सूं आयौ"
पडुतर मिल्यौक "जादू-बीर. प्रद्युमन-जायौ"
भोळौ बाळक इणविध वातां मांय लगायौ
चतरायी सूं नागफांस रै फंद फंसायौ

चोखी तरियां बाध'र बोल्यौ-"अब ले ज्यावौ
घणै मांन सू इण नै कारागार पुगावौ"
बंध्यौ देख कर अनिरुध नै यूं ऊसा रोयी
पड़ी तड़ाचौ खाय देह री सुध-बुध खोयी"

तुरत कवीसर चोथो वोल्यौ-"दिन ऊग्यौ जद
पुरी द्वारका में कुरळाटौ सो मांच्यौ तद
नही कुंवर अनिरुद्ध म्हैल में सूत्या पाया
सेज समेत पतो नी क्यां रै मांय समाया

वांनी-चाकर च्यारूं-कांनी भाग्या-भाग्या
कूंणै-कूंणै मांय कुंवर नै ढूंढण लाग्या
बडा-बडा जादू-जोधा भी भेळा होया
घणी लगन सूं दूर-दूर वै जाय'र टो'या

ग्रुर-खोज न क्यूं मिलणै पाया, गया जठै भी
कोयी नै भी क्यूं नी वेरो पटघो कठै भी
उगरसेन वसदेव प्रद्युमन सैं घवराया
ग्रितणैं में "नारायण" रटता नारद ग्राया

कर परणांम चरण-रज मांथै मांय लगायी
घणै ग्रचंभै भरी ग्राज री वात वतायी
जद रांणी रुकमण रै नैणां ग्रांसू ढुळक्या
तद नारद मुनि ग्रिण विध कै'ता-कै'ता मुळक्या

"ग्राज ग्रचंभै री थे कुणसी वात वतायी
ग्रा तो थांरै कुळ रै मांय होवती ग्रायी
वाप जलमतां पांण गयौ, जद पूठो ग्रायौ
तद ग्री घणी सोवणी वनड़ी सागै ल्यायौ

ग्रो भी थोड़ै दिनां वाद ग्री पूठौ ग्रासी
साथ वीनणी मिरगांनैणी व्याय'र ल्यासी
वो तो ग्रापै ग्रायौ ग्रींनै ल्याणौ पड़सी
सेना साथ वापदादा सैं जाय'र लड़सी

सोणितपुर में निजरवंद नै जाय छुड़ावौ
वाणासुर रै वळ-विकरम रौ गरव तुड़ावौ"
नारद जी तो वात वतातां पांण पधारघा
जादू-जोधा जुध रै सारू सस्तर धारचा

सिरीक्रिसण वळरांम साथ सेना सा चाली
वारा ग्रक्षोहिणी-भार सूं धरती हाली
घणी दूर तांणी सेना सूं सेना ग्रड़गी
भू-रज सूं सूरज री किरणां मंदी पड़गी

जाय हिमाळै री गोदी, में दीन्यौ डेरौ
सोणितपुर रै च्यारू-मेर लगायौ घेरौ
भोळा-संकर वाणासुर नै बोळौ वरज्यौ
पण वो सेना साथ सांमनै आय'र गरज्यौ

सिरीक्रिसण री पांचजन्य जद पैलौ बाज्यौ
जादूगण री अेक-अेक भट जोरां गाज्यौ
वाजण लाग्या नोबत, ढोल, जुझाव् बाजा
च्यारू-कांनी सुणिया- गरजण-तरजण ताजा

संखां री धुन सुण-सुण कायर भाजण लाग्या
सूरवीर जोधा वादळ सा गाजण लाग्या
दोनू सेना मांय जुद्ध जोरां सू छिड़ग्यौ
जोड़ी रै जोधै सू जोधौ जाय'र भिड़ग्यौ

खूणै-खूणै खांडा सू खांडा खड़कै हा
सूरवीर बैरी पर बीजळ सा कड़कै हा
बाणां री बौछाड़ अेक दूजै पर कररचा
आपै आगै-आगै आय पटापट मररचा

हाथी-घोड़ा घायल होय चिंघाड़ां मारै
"हाय हाय" मरतां मरतां रा मूंड पुकारै
लाल रकत रा फकत फुंवारा उड़रया आगै
सागै लड़ै सूरमां, सुरग सिधारै सागै

सिरीक्रिसण भी बांण बरोबर तीखा छोडै
खाय-खाय राकस जोधा रण-सेजां पोडै
ज्यूं सारंग धनुस सू पैना सायक छूटै
त्यूं कोयी री नाड़ कटै, हाथ'र पग टूटै

क-कांन कट ज्याय सीस कोयी रा फूटैं
रूंडां-मुंडां सूं नाळा लोही रा छूटै"
तुरत पांचवौ सुभट कवीसर बोलण लाग्यौ
"मैना रौ संधार देख बाणासुर जाग्यौ

हो वो पूरो ऊंचो अर काजळ-सो काळो
सगळी सेना में दीखै हो नुंवो निराळो
निपुण जुद्ध-विद्या मे वो रै जिसो न कोयी
दृढ विसाल काया रो भीषण विसो न कोयी

जादू-सैनिक वी रै आगै छोटा लागै
वीं नै देख'र सगळा दूर-दूर सा भागै
वीरी खाल वड़ी मोटी हो करड़ी काळी
छोटै-छोटै काळै-काळै वाळां हाळी

राती-राती आख्यां खीरां सी चिलकै ही
लाबै हाथ-पगां मे मजबूती झिलकै ही
पड्यो तड़छ कर वो जादू-सेना रै ऊपर
दाब्या, चीथ्या घणां जणां नै गेरचा भू पर

वो हजार हाथां सूं पैनां बाण चलावै
एकै साथ जादवा में भूचाळ मचावै
छेवट सामो आय'र सिरीक्रिमण सू भिड़ग्यौ
दोनूं जोधां में अब जुद्ध भयानक छिड़ग्यौ

सगळी सेना खड़ी होय रण देखण लागी
वड़ै सस्तरा री टक्कर सूं उछळै आगी
एक-एक कस-कस दूजै रै चोट लगावै
पण मांछर भी नहीं उडै दूजै रै भांवै

वाणासुर रा वांण फूल सा हरि नै लागै
गिरधारी री सांग छड़ी सी वीं रै आगै
सांग तोड़ कर अट्टहास वो करयौ भयंकर
सुण कर जादू-जोधा धूजण लाग्या थर-थर

सिरीक्रिसण तद करी वठै वाणां री बिरखा
वींरा हाथ कटया हाथी-सूंडा रै सिरखा
कट-कट च्यारूं-मेर मतै ओ पड़णै लाग्या
आंधी सूं टूटो डाळां सा झड़णै लाग्या

वाणासुर अब धूज, उठयो, जी में घबरायौ
जांणी काळ क्रिसण रो रूप बणाय'र आयौ
हाथ जोड़ कर सिव संकर री सुमरण कीन्यौ
संकट जाण'र इस्ट देव री सरणो लीन्यौ

भोळा सिभू तुरत वठै ओ परगट होया
बोल्या-"मना करयां भी क्यूं औ झगड़ा झोया
फेरूं सिरीक्रिसण सूं बिनती करणै लाग्या
"किरपा कीनी आप, भाग राकस रा जाग्या

आप सरब समरथ हो. सो क्यूं करण सको हो
कीनै भी क्यूं देण सको हो, हरण सको हो
थे छिन मांय जगत नै सिरजो, पाळो, मारो
थांरै सांमीं वाणासुर के चीज बिचारो

ओ वरदांन भुजां री खाज मिटण रो मांग्यो
पण थे तो ईं रो सरीर जांटी ज्यूं छांग्यो
अब तो किरपा करो आप मत मार गिरावो
ईंरा सगळा खोट भूलकर सिरणा दिरावो"

कर परणांम स्यांम-सुंदर जद क'यौ मुळक कर
बाणासुर तद कांनी आयौ दुळक-दुळक कर
''देव-देव म्हादेव, आपरी किरपा जी पर
वौ नै मारण सकै आज है कूण जमी पर
म्हैं भी बाणासुर नैं नहीं मारणौ चावूं
पड़-पोतौ प्रहलाद तणौ किण विध बिसरावूं
खोट करयौ ओ वडो आपसूं लड़णौ चायौ
जी सूं ओ म्हैं औरौ थोड़ो गरब गिरायौ
बाकी च्यार हाथ जो औ रा वै थिर रैसी
अब थारै सेवग नै कोयी क्यूं नी कै'सी''
सुण बाणासुर तुरत पांण चरणां में पड़ग्यौ
''भली सीख दी इस्ट-देव सूं म्हैं जो अड़ग्यौ
ओजूं कदे नहीं करस्यूं अब छिमां करावौ
चाकर री आ चूक भूलकर दया दिखावौ''
गिरीक्रिसण भी मुळक हाथ मेल्यौ वी रै सिर
बार-बार परणांम करी वो चरणां गिर-गिर
घणै मांन अनिरुद्ध कंवर नैं मुकत करायौ
लाडेसर ऊसा बेटी सूं ब्याव रचायौ
जादू-जोधा सगळा ओ हा बण्या जनेती
भोत करी मनवार उणां री आदर सेती
घणै दायजै साथ बिदा बेटी नैं कीनी
सिव-पारबती असीस जुगल जोड़ी नैं दीनी
आ दुवारका में अब बांटी घणी वधायी
मंगळचारां साथ मोकळी खुसी मनायी''

बैठ्या पांन कवीसर जद यूं वात सुणाय'र
आदर मांन करयो वां रो धन-दरब लुटाय'र
इयां ब्याव री बात सुण'र सगळा सुख पायो
जनता जादूगण रो जजेकार मचायो

—*—*—

## सतरवीं तरंग

### सुदामा

हुया दरजा तो मगळ हा पण होयी ही घणी न देर
निरमळ नभ मूं बरसण लागी चितक च्यांनणी च्यांरू-मेर
सागर रै अणहद पांणी में पूंन गेल री झोला खाय
विना हिंडोळै आप हिंडावै होलर चांदघा नं हुलराय

नील-गिगन अणगिणती तारा झिलमिल करता वण्या उदास
ममदरियौ गांदी में लेय'र होळै-होळै दे हिमळास
परवेस न पुर में पावण सूं सागरतट पर होरघा ठाट
जगां-जगां रा आय बटावू दिन ऊगण री जोवै वाट

सोरम भरणी सीळी-सीळी मधरी-मधरी चालै भाळ
नीदड़ली आवै आपै ग्री सोवतड़ां समदर री पाळ
पाको एक विरामण पूग्यो, थाक्यो, तन होरचो वेहाल
किणी तरां नांको पायो हीमत सूं होळै-होळै हाल

मांथै फाटचोड़ी फींटी हो, टूटचोड़ी लाठी ही हाथ
तन पर मैलो सो चादरड़ी जाळीदार झरोखां साथ
मोचड़ल्यां रा चोखा-मोखा, गळचा पगां रा वण्या वणाव
गोडां लांबी धोती में हैं करै कोचका घणो तणाव

नैणां खाडा पड़चा डैण रै सूक-सूक कर पिचक्या गाल
पेट कड़चां सूं एकमेक हो, सळ सूं भरी खुड़दड़ी खाल
हाड-पांसळी चिलकै सगळी काया में न कठै भी मांस
वेरौ नी इसड़ै ढांचै में कठै अटक रचौ हो अव सांस

सगळां नै सूतयासा देख'र पड़यौ अेक कांनी सी डैण
पण भूखां मरतै रा पळ भर पळक न मीचण पावें नैण
आडो सो होय'र आपै श्री मन में करणै लग्यौ विचार
घणौ दुख्यारौ होय पेट नै देवण लाग्यौ यूं धिरकार

"पेट, पेट श्रो पेट कोतकी, थांरै भोत घणी अळसेट
ऊठ संवारी चाये थांनै अण-गिणती रोट्यां री जेट
कोयी समझ न पावै थांनै थोथो क्यूं कींन्यौ करतार
कोयी क्यांसूं भरण सक्यौ नी, कोयी पावण सक्यौ न पार

ठूंस-ठूंस कर भरै रात नै दिन ऊग्यां खाली हो ज्याय
आखै दिन गिटतां रै'तां भी थांनै कोयी नी भरपाय
थांरै मांय मानगी आवै, थारै में निपजै सै रोग
थांरै गैल चालकर माणस भोगै अणचाया दुख-भोग

थांरै भरणै पर सै राजी करै मलरका माणै मोज
जद खाली हो क्यूं नी सूझै, आपै-आपै आवै रोज
थांनै मांनै यूं सगळा श्री धरती में श्रोगण री खांन
पण जो जांणै बात अंट री वांरै मन थांरो सनमान

निस दिन खेचळ करै अेकलौ ज्यूं घर रौ मुखिया मोट्यार
पाळै-पोसै घणी मया सूं आपै श्री सगळौ परवार
त्यूं श्री नाज पचावण सारू तूं भी खटै अेकलौ आप
पोसण करै सकल अंगां री तन में भरै तेज—परताप

जो तूं खावै, पीवै वौं सूं सै अंगां में होय उजास
कांम न करै अेक दिन जे तूं सगळौ तन हो ज्याय उदास
दूजां सारू खटै रात-दिन स'वै घणी निंदरां बेकांम
पण तूं संत मूक सेवक बण करतौ र'वै करम निसकांम

तू है परम पुरस री ज्यूं श्री पावन पेट,पेट श्री पेट
दूजां री सेवा सारू तूं करै आप नै मटियामेट
क्यूं भी खोट नहीं है थांरी भूख विगाड़ै सगळा कांम
अेक भूख रै तांण आप श्री थांरी नांव होय वदनांम

भूख वडी वळज्यांणी डाकण आखै जग श्रीरौ परभाव
सगळै रोगां रौ उपाव है श्रींरौ क्यूं भी नहीं उपाव
"भू" सूं फैल मतै "ख" ताणी भूख दुनी नै देय तराम
अेक जबाड़ौ जमा जमीं पर दूजौ पूगावै आकास

आस्या, मनस्या, मन-अभिलाखा, इरखा, त्रिसणा, कांम अनूप
लोभ-लालसा, भोग-वासणा, श्री रा श्री अनेक है रूप
दया-मया, ममता, परेम सैं तजै पिरांणी श्री' रै पांण
फंसै लोभ, लालच में आपै सीखै घणी खोड़ली बांण

जे आ लागै नही जीव नै सगळा श्री संकट कट ज्याय
चित में चिंत्या कदे न उपजै माणस परमहंस बण ज्याय
राड़ नही होवै कोयी सूं, आपसरी में वढै सनेह
दुख-दाळद मिट ज्याय जगत सूं, सतजुग आवै बिन संदेह

ज्यूं सरीर पर होवै त्यूं श्री मन पर भी ई रौ परभाव
श्रीरी किरपा सूं श्री उपजै चित में भांत-भांत रा चाव
ग्री रै पांण अनीतां करतां पावै जीव घणां संताप
आ श्रोगण री खांन करावै मोटा मिनखां खोटा पाप

ई रै पांण मतै श्री पिरजा सगळी सिरजै सिरजणहार
डोर-आसरै कठ-पुतळी ज्यूं नांच नचावै भली प्रकार
आ तावड़ियै मे न तप सकै, बळ न सकै अगनी रै मांय
आ आंधी सूं उड न सकै है, गळ न सकै पाणी रै मांय

श्रां नै कोयी काट सकै नी, श्री नै कोयी सकै न बाढ
श्री नै कोयी मार सकै नी, श्री नै कोयी सकै न काढ
श्री नै कोयी जाण सक्यो नी, श्रीं रो कोय न पायो पार
श्रीं रै चक्कर में श्री फंस कर भरम्यो डोलै है संसार

श्रींरो आदि न कठै मिलै है, कोयी भी पावै नी अंत
के आ श्री अनादि सकती है, के आ श्री है बिरम अनंत
समधी-सगा, बाप-मां, बाबा, बेटा, बेटी, भाश्री, भाण
कोयी सांख न मानै मा भी बेटो बेचै श्रीरै पांण

म्हैं भी राम-राम कर मेटण चावै हो क्यूं मन रो मैल
घणी भूख रै कारण श्री तो पड़ो बूढळी म्हांरै गैल
बोली-"थे जो भिछया ल्यावो वींसूं भूख नहीं मिट पाय
कांम नहीं चालै सरीर रो, हाड मांस सै सूक्या जाय

थाळी-कासण बच्यो अेक नी, टूट पड़ी छपरै री छांन
फाटयो पूर, उघाड़ी काया, कियां बचावूं कुळ री कांन
सिरीक्रिसण सिरसा श्रोतारी थांरै है जद जिगरी मीत
तद थे जाय'र क्यूं मांगो नीं पाळ सकै के नहीं परीत

म्हैं बोली वर समझायो पण थैं नी ल्यो जावण रो नाव
ऊलण सकै मिनख छोटा भी पाय'र सापुरसां री छांव
म्हैं भी सुणकर क'यो-"बावळी, होय बिरामण रो धन ग्यांन
श्रो धन तो छीजै देवण सूं, वो नित वढै, करै ज्यूं दांन

धन नै बंधन मातर मान'र चातर करै नहीं सनमांन
हीरा-मोती, धूळ-कांकरा बांरै भावै अेक समान
अनासकत जळमांय कंवळ ज्यूं रैं'यर करम करै निसकाम
थोड़ै दिनां जीवणै खातर कुण मतबळ वै जोड़ै दांम

पाट-पटंबर पैरण में वयूं थे सुख मानो हो भरपूर
तन री लिज्या ढकणै में के समरथ नहीं पुराणों पूर
म्हैल-मालियां में रै'णै सूं थांनै के मिलसी आरांम
छांन-झूंपड़ा में रै'तां अब सरै न थांरा कुण सो कांम

भिछ्या री रोटी खावण सूं भरै न वयूं अब थांरो पेट
माल-मलीदां री मनस्या तो करै मिनख नै मटियामेट
सिरीक्रिसण म्हांरा मितर है श्री में नहीं जरा सदेह
गुरुकुळ में सागै पढतां हो' आपसरी में घणो सनेह

पण स्यांणी, अब वांरै सांमी म्हांरी के गिणती है आज
म्है दाळदी गरीब बिरामण, वै है राजां रा म्हाराज
एक बात म्है भूल सकूं नी म्हे पढ़ता जद गुरुकुळ मांय
माता जी बोल्या दोन्यां नै समिधा री छोडी भी नांय

म्है दोन्यूं ई चाल पड़या हा समिधा सारू सुणतां पांण
वेगा आवण री सोच्यो हो सूरज नै आथणतां जांण
पण बातां ई बातां में म्है जा पूग्या जंगळ रै मांय
बड़ी जोर सूं सूंटो आयो, हाथ-हाथ नै दीखै नांय

म्है जद थर-थर धूजण लाग्यो छाती रै चेप्यो घणस्यांम
थोड़ी घणी देर में सूंटो निसरयो जद आयो आराम
लागी भूख भूगड़ा खाया बैठ'र परै ओपरा भांत
पूछ्यां पडुतर दियो किसन नै सी रा मारया बाजैं दांत

जण-जण में भगवांन मांनकर भी जो बिना लगायां भोग
म्है खाया भूगड़ा एकलो जी सूं है दाळद री जोग
जो साथ्यां नै चोज न बांटै न्यारो बैठ अेकलो खाय
वेद-पुरांण बखांणै सगळां वीं रो दाळद कदै न जाय

भोग लगायां बिन भगवत रै जो कोयी भी क्यूं भी खाय
चाये जितणा जतन करावै वीं रो दाळद कदै न जाय
जीसूं मांगूं नहीं तुच्छ धन म्है जाय'र वांरै दरबार
चाये सै भूखा मर ज्यावां, चाये मिट ज्यावो घरबार"

म्हांरी करड़ी बातां सुण कर बोली सतवंती घरनार
"ल्हालसा न म्हांरै धनरी पण टाबर भूखा मरै अवार
अिण अणजाण बाळकां री अब दूजो कूण करै प्रितपाळ
अै दांणै-दांणै नै तरसैं जीं सूं ह्यांनै आवै झाळ

सिरीक्रिसण राजां रा राजा पण अनाथड़ां रा भी नाथ
थे जद कद दुवारका जास्यो मिलसी वणै मांन रै साथ
थांनै नहीं मांगणो पड़सी वै आपै जांणै सो हाल
विना बतायां थां री सगळो सकट काटै दोनदयाल

अेक'र थे दुवारका जाओ बिनती करूं जोड़ जुग हाथ
टाबरियां री रिछ्या सारू म्हांरी बात मान ल्यो नाथ"
बारंबार कुवरणी यूं करणै सूं म्है भी होयो त्यार
पण सागै ल्यावण नै म्हांनै मिल्यो नही क्यूं भी उपहार

छेवट पाडोसण सूं ल्यायी बिरामणी चिवड़ा लप दोय
अेक चोरड़ो करचो चोलड़ो बांध'र दीन्या राजी होय
दुख-सुख पाय'र कोयी तरियां म्हैं दुवारका पूग्यो आय
सिरीक्रिसण देखां पिछाण ले, के म्हांनै देवै ठुकराय"

यूं विचार करतां व्रामण रै बीत गयी सगळी श्री रात
तारा फीका पड़णै लाग्या होवण लाग्यो हो परभात
फाटी भाख, उगूण दिसारो मुखड़ो आपै होयो लाल
आभै सूं उतरंती ऊसा चालै मधरी-मधरी चाल

आलणिया पछीड़ा जाग्या, बोलण लाग्या मीठा बोल
"जागो, उठो, काम में लागो" दे सनेस सँ नें अणमोल
सुण सोवणिया साथी सगळा उठ-उठ होवण लाग्या त्यार
अेक अणूंती चैंल-पैंल मूं तट पर वणी निगळी भार

बूढो बामण बेगो-बेगो साग नित्त-करम सलटाय
पैं'र नुंवां गाभा दुवारका-नाथ दुवारै पूग्यो जाय
बोल्यो-"बाळापण रा साथी म्हारा सिरीकिसण जदुनाथ
पढया-लिख्या घोळा दिन ताणी खेल्या-कूदया वांरै साथ

नाव सुदामा ब्रामण म्हांरो वां सूं मिलणो चावूं आज
म्हैलां जाय खबर पुगावो इतणी दया करो म्हाराज"
द्वारपाल कर जोड़ कयो तद-"नहीं पूछणैं री दरकार
आजूं पैं'र ब्रामणा सारू खुल्यो र'वै प्रभु रो दरबार

बिना मिलै पूठो नीं जावै कोयो आ रैं आय दुवार
सका छोड़'र मांय पधारो, सामी है श्रीकिसण-मुरार"
नहीं सुदामा रा पग ऊठया फेरूं भी मन में भे मान
के बेरो कुण आय टोक दे के बेरो कुण मारै मान

सुण'र दरूजे री बतळावण सिरीकिसण जद दीन्यो ध्यांन
पगां उवाणां भाज पड़या तद देख सुदामां नैं भगवांन
पड़ग्यो पितांवर नळै तिसळ कर किणी बात रो र'यो न चेत
"बंधु सुदामा" "बंधु सुदामा" निकळै बोल घणैरै हेत

देखणियां सगळा चकराया गोविन्द रैं के होयो आज
ताबड़तोड भाजरघा क्यूं है सुध-बुध भूल र'या [illegible]
दोनूं हाथां सूं बांथां भर [illegible]
अपणायो, बिसरायो दोनूं भूल्य[illegible]

बडे अनंभे सूं देखें हा राणी, वांनी-चाकर-लोग
तपसी, ग्यांनी, संत-सरीसा कुण थै अितणा अदर जोग
बनवारी अब हाथ पकड़ कर ल्याया वांनै म्हैलां मांय
ऊंचे सै आसण बैठाया पण क्यूं बोलण पाया नांय

सिरीक्रिसण अपणे ओ हाथां गंगाजळ री झारी ल्याय
पग पखाळणे लग्या प्रेम सूं आंसू-बूंदां मांय मिलाय
रांणी झ'री लेवण भजी पण कोयी नैं दींनी नांय
माळा काम आाग्गे हांसा आरे-आवै करता जाय

अेक हाथ सूं पगल्या धोवे दूजे सूं ढळकावै नीर
वही बिवायां नैं पपोळ्लां मन पीड़ा सूं बण्यौ अधीर
मुळक-मुळक कर बोल्या-"भाअी, आणं में क्यूं करी उ'वार
करता र'या आप अितणां दिन नाणौ क्यांरौ मोन-विचार"

पण आगै बै बोल न पाया मुखड़े सूं निसरचा नी बैण
देख सुदामां कांनो वांरा टप-टप टपकण लाग्या नैण
मतै बोल-चाल्या साथी रा करता र'या समूचा कांम
नहीं किणी नैं हाथ लगावण दीन्यौ सेवा में घणस्यांम

थोड़ो सो विसरांम कराकर बांनै करवायौ असनांन
होळै-होळै मळ-मळ करकै सगळो तन पूंछ्यौ भगवांन
नुंवा जनेवूं, पाट-पटम्बर पं'राया आदर रै साथ
केसर तिलक लगाय देह में चंनण लीप्यो अपणै हाथ

विधिविधान सूं पूजा कीनी देख'र चकराया सै लोग
घणे मांन सूं फेर जिमाया खटरस विजन, छप्पन-भोग
टक-टक निरखत र'यौ सुदांमा मुख सूं बोल्यौ एक न बोल
राजी हुयौ घणौ गोव्रिन रा सेवा आदर मन में तोल

आलणिया पछोड़ा जारया, बोलण लाग्या मीठा बोल
"जागो, उठो, काम में लागो" दे मनेस सूं नै अणमोल
सुण सोवणिया साथी सगळा उठ-उठ हांवण लाग्या त्यार
अेक अणूंती चैंल-पैंल मूं तट पर वणी निराळी भार

बूढो बामण वेगो-वेगो साग नित्त-करम सलटाय
पै'र नुंवां गाभा दुवारका-नाथ दुवारै पूग्यो जाय
बोल्यो-"बाळापण रा साथी म्हारा सिरीक्रिसण जदुनाथ
पढ्या-लिख्या बोळा दिन तांणी खेल्या-कूद्या वांरै साथ

नाव सुदामा ब्रामण म्हांरो वां सूं मिलणो चावूं आज
म्हैलां जाय खबर पूगावो इतणी दया करो म्हाराज"
द्वारपाल कर जोड़ कयो तद-"नहीं पूछणै री दरकार
आठूं पै'र ब्रामणा सारू खुल्यो र'वै प्रभु री दरबार

बिना मिलै पूठो नीं जावै कोयी आ रै आय दुवार
मका छोड़'र मांय पधारो, सामी है श्रीक्रिसण-मुरार"
नहीं सुदामा रा पग ऊठया फेरूं भी मन में भै मांन
कै वेरो कुण आय टोक दे. कै वेरो कुण मारै मान

मुण'र दरूजै री बतळावण सिरीक्रिसण जद दीन्यो ध्यांन
पगां उवाणां भाज पड़्या तद देख सुदामां नै भगवांन
पड़्यो पितांवर तळै तिसळ कर किणी बात रो र'यो न चेत
"बंधु सुदामा" "बंधु सुदामा" निकळै बोल घणैरै हेत

देखणियां सगळा चकराया गोविन रै के होयो आज
ताबड़तोड भाजरया क्यूं है सुध-बुध भूल र'या किण काज
दोनूं हाथा सूं बांथा भर साथी नै चेप्यो घणस्याम
अपणायो, विसरायो दोनूं, भूल्या जग रा सगळा कांम

बड़े अचंभै सूं देखै हा रांणी, वांनी-चाकर-लोग
तपसी, ग्यांनी, सत-भरोसा कुण अै अितणा अदर जोग
बनवारी अब हाथ पकड़ कर ल्याया वांनै म्हैलां मांय
ऊंचै सै आसण बैठाया पण क्यूं बोलण पाया नांय

सिरीक्रिमण अपणै ओ हाथां गंगाजळ री झारी ल्याय
पग पखाळणै लग्या प्रेम सूं आंसू-बूंदां मांय मिलाय
रांणी झारी लेवण भजी पण कोयी नै दींनी नांय
साझा काम आरगे हांया आपै-आपै करता जाय

अेक हाथ सूं पगल्या धोवै दूजै सूं ढळकावै नीर
बड़ी बिवाया नै पपोळतां मन पीड़ा सूं बण्यौ अधीर
मुबक-मुबक कर बोल्या-"भाअी, आणै में क्यूं करी उंवार
करता र'या आप अितणां दिन नाणी क्यांरौ सोच-विचार"

पण आगै वै बोल न पाया मुखड़ै सूं निसरया नीं बैण
देख सुदामां कांनी वांरा टप-टप टपकण लाग्या नैण
मनै बोल-वाल्या साथी रा करता र'या समूचा कांम
नहीं किणी नै हाथ लगावण दीन्यौ सेवा में घणस्यांम

थोड़ौ सो बिसरांम कराकर वांनै करवायौ असनांन
होळै-होळै मळ-मळ करकै सगळौ तन पूंछ्यौ भगवांन
नुंवा जनेवूं, पाट-पटम्बर पै'राया आदर रै साथ
केसर तिलक लगाय देह में चंनण लीप्यौ अपणै हाथ

विधिविधान सूं पूजा कींनी देख'र चकराया सै लोग
घणै मांन सूं फेर जिमाया खटरस विजन, छप्पन-भोग
टक-टक निरखत र'यौ सुदांमा मुख सूं बोल्यौ एक न बोल
राजी हुयौ घणौ गोविंन रा सेवा आदर मन में तोल

नुं'वो ढोलियो ढाळ, दूध सी धोळी चादर वठै बिछाय
चांपण लग्या चरण जदुनायक मतं सुदामा नं पोढाय
अब दोनूं बतळावण लाग्या, खोलण लाग्या, मन रा भेद
बाल-सखा दो मिल ज्यावें तो खुलतो जाय पांचवों वेद

सिरीकिसण बोल्या-"भाभी, थे टावर पण सूं र'या अगंस
अब तांणी वैठयो क नहीं हैं ब्या-सादी री कोयी ढंग"
क'यो सुदामा "करघो ब्याव तो म्हैं भी थीं धुनियारी ढाळ
पण म्है सांचो मारग भूल्यो आपै आी फंस कर जंजाळ"

स्यांमसुनर मुळक्या-"के थांनै कोयी मिली कड़कसा नार
घर रै सगळै सुख-दुख री तो घरणी भी होवं आधार"
हंस्यो सुदामा भी-"घरणी तो है सूधी सतवंती नार
म्हैं तो करमां रै आंटै सूं आपै भरम्यो फिरूं अवार

म्है तो सदा ग्यांन री साधक र'यो न चित में क्यूं भी चाव
पोथी-पांना सिवा न दूजी चीजां सूं क्यूं र'यो लगाव
मनस्या ही गुरुकुल जचाय कर करूं बाळकां नै उपदेस
वेद, सास्त्र, दरसण चरचा में करस्यूं सगळो जीवन सेस

भास्य बेद पर रचूं अणूंतो, लिख स्यूं उपनिसदां रो सार
परम-तत्व री जिग्यासा में मूळ-बिन्दु पर करूं बिचार
पण गिरस्थ में पड़ें भेलणा अब जग रा झूठा जंजाळ
मातर एक कांम बांकी रै टावरियां री सार संभाळ

मन ई मन करणो चावै हो बिरम ओर माया रो ग्यांन
छोड बिरम री मीमांसा पण अपणायो माया रो ध्यांन
बेद-भास्य लिखणे बैठूं जद आंक एक भी लिख्यो न जाय
दूजी बात सोचणे लागूं भोज-पत्र आपै उड़ ज्याय"

द्वारका

मुंदरस्यांम वात नै बदळी–"छोडो थांरा वेद-पुरांण
विना कांम भासण देवण री छूटी नही आज भी वांण
घर-विद री वातां करणं नै वैठया आपां गोडी मोड़
थांरी सास्तर री चरचा री आवै नही कदै भी ओड़

भाभी देवर रै खातर जो भेज्यो है सनेह-उपहार
वो क्यूं कोनी सूंपो म्हांनै वधांटै घणी लगावो वार
भेळो-भेळो होय सुदांमा दावी पोट काख में मोस
स्यांमसुनर पण दबी पोटळी जोरांमरदी लीनी खोस

खोल पोटळी चिवड़ा चाव्या मूंठी भर कर घणं सुवाद
बोल्या–'इतणी वार दियो थे क्यूं नी भाभी रो परसाद
म्हांनै तो दुनिया री कोयी चीज इसो रस दीन्यो नांय"
कै'तां ओजूं भी मूंठी भर होळै सी मेली मुख मांय

तीजी मूंठी फेर भरी जद रांणी रुकमण आयी भाज
वोली,-सं नै बांट-बांट कर ई खांणो चाये म्हाराज
अब वाकी सो म्हांनै सूंपो इतणी सी मांनो फरियाद
म्है भी सगळी दो–दो दाणां ल्यां भाभी जी रो परसाद"

मुळकंतां घणस्यांम पोटळी सूंप दई रांणी रै हाथ
राजी मन सूं लेय रुकमणी चाल पड़ी सतभांमा साथ
सतभांमा बूझयो इकांत मे–"इसड़ो के है ओ परसाद
जो सूको-पाको गोविन रै मुखड़ै भरय्यो घणो सुवाद'

रुकमण बोली– भाण वावळी, नहीं सुवाद चीज में होय
औरो पातर तो परेम् है सगळो रस परेम में होय
बनवारी परेम रा भूखा अै परेम सूं औ वस होय
पांन फूल भी इण नै भावै जै परेम सूं अरपै कोय

एक-एक मूंठी चिवड़ा में एक-एक दीन्यो अै लोक
तीजी लप भरतां देख्यां तो म्है तुरंत ई दीन्या रोक"
यूं बतळाती पटराण्यां वै चिवड़ा दिया सभी नैं बांट
सगळी मांथै मूं चुचकारचा नहीं कठै क्यूं आई आंट

वींनैं कयौ सुदांमा-"भाई, थांरौ घणौ अणूतौ ठाट
सुणी जगत में रांण्यां थांरै सौळा-सहस एक सौ आठ
अेक लुगाई रै कारण जद पचै जीव जीरै परवार
अणगिणती राण्यां रै साथै थांरौ किया पड़ै है पार"

सिरीक्रिसन मुळकता बोल्या धर साथी रै कांधै हाथ
"क्यूं भी आंट न आवै म्हांरै रै'ता इतणी राण्यां साथ
यूं तो राणी रुकमण श्री है म्हांरौ चितचायौ घरनार
बाकी री पटराण्यां व्याही गई राजनीती अनुसार

सोळा सहस एक सौ कन्या भोमासुर रै कारागार
मुकत करी जद बोली सगळी-"म्हांरौ कठै न क्यूं आधार
म्हांसूं कोयी ब्याव न करसी नहीं किणी रै आवां दाय
नित-नित दुनी मारसी मोसा आपूं-आप कळक लगाय

जे अपणावौ आप दयाकर तो समाज में पावां मांन
स्त्री में ही वां रौ हित सोच'र म्है भी दियौ अभय रौ दांन
अब वै सगळी श्री राजी हैं किणी भांत रौ नहीं अभाव
म्है भी नित संभाळ राखूं हूं सगळ्यां नै देख'र समभाव"

दोन्यूं साथी घणै हेत यूं भांत-भांत री करता बात
बाग-बगीचां, म्हेल-माळियां साथ-साथ रै'ता दिनरात
सिरीक्रिसण दो दिन तांणी यूं करी भायलै री मनवार
तीजै दिन पूठो जावण री मतै सुदांमा करयौ विचार

मन-मोवन रोकया बाळा श्री पण वै मानी एक न बात
ऊंच-नीच समझाय मोकळी चाल पड़या पै'लं परभा।
सिरीकिसण भी बिदा करचा जद गळै लगाया भरभर बाथ
फेरूं घणै मांन आदर सूं चरणां मांय निवायो माथ

दोन्यां रो चित विचळित होयो, दोन्यां रो मन घणो उदास
पण सयम सूं कांम चलायो कर ओजूं मिलणै री आस
बिदा मीत नै कर हरि दीन्यो बिसकर्मा नै यूं आदेस
"पुरी द्वारका जिसी सुदांमा पुरी बणावो उण रै देस

गुरुकुल बठै बणावो नामी सकल साधनां सूं भरपूर
गाय दुधारू घणी पुगावो जीं सूं दुख-दाळद हो दूर"
बिसकरमा भी हाथ जोड़कर सिर पर धार लियो आदेस
तुरत पांण पूरण करणै नै चाल पड़यो कर जतन बिसेस

—*—*—

## अठारवौं सरग

जद रात बीती, चांद धौळो होय कर कुमलायगो
नभ में अणूतो तद मंजोठी रंग सुरगो छायगो
मुनि लाल चंनण री अरघ दे सुरज री अरदास में
वो गोट बणकर छा र'यो जाणी मतै आकास में

सूरज किरण जद द्वारका रै कनक-कळसां पर पड़ी
तद चिलकणै लागी घणी नच्छतरां री सी लड़ी
कीन्यौ सुवागत पेड-पोधा फूल कर आनद में
गाया पंखेरू गीत रळ-मिल कर सुरीलै छंद मे

पलका उघाड़ी श्रीकिसन जद जोग-मुद्रा-ध्यांन सूं
तद सामनै अर्जुन खड़्यो हो हाथ जोड़्यां मांन सूं
श्रीकिसण बोल्या हरख सूं "अर्जुन, कणा तूं आइयो
क्यूं बोल-बाल्यो है खड़्यो पै'ली न क्यूं बतळाइयो

अर्जुन क'यो "आयो तुरत मैं सात्यकी रै स्थांन सूं
अब आपरो आ जोग-मुद्रा देख रयो हो ध्यांन सू"
बोल्यो सुयोधन पीठ-पाछै पीठ पर बैठ्यो हुयो
ओछै मिनख री भांत गरब-गुमान में ऐठ्यो हुयो

"श्रीकिसन, अर्जुन सूं प्रथम म्है आप आयो हूं अठै
वेरो नहीं इण बखत तांणी ध्यांन थांरो हो कठै
थांनै पतो है, पांडवां अर कोरवां में वैर है
जुध सूं न दोखै दोनुवां में भी किणी री खैर है

पण रण सिवा कोयां कठै बाकी न ओर उपाव है
टळणै सकै न विनास-कारी जुद्ध कोयी भाव है
ओ सूं प्रथंम म्है आपनैं ओ न्यूंतणै आयी अठै
सिरदार वणकर थे सम्हाळो भार सेना रो वठै''

गोबिंद भी कंवण लग्या आ वात सुणकर चाव सूं
''नी जुद्ध भाई-बंधुवां में ठीक कोयी भाव सूं
थे आप हो स्यांणा घणां. पाडंव न दीखै बावळा
फेरूं करण नैं जुद्ध थे क्यूं होर'या हो तावळा

आपसा रो रै जुद्ध में कुळ-नास तो होवै वठै
पण देस-भर में बोर यूं कोयी न बच पावै कठै
आछयो र'वै पंचायती री फैसलो थे मांन ल्यो
सगळा जणां मिल रण न करणै री हियै में ठांनल्यो''

बोल्यो सुयोधन तमककर-''उपदेश देणो व्यर्थ है
इण पांडवां री बुद्धि में छायो अतोल अनर्थ है
जो राज हारघा अं जुवे में मांगरघा क्यूं फेर है
अब खोसणो यूं राज दूजां रो न के अंधेर है''

केसव क'यो-''जो राज हो सगळो जुव में हारियो
वो आप राजी होय कर ध्रितरास्ट्र जी पूठो दियो''
कुरुराज बोल्यो चिणख कर ''झूठो न अब झगड़ो करो
देख्यां बिना कीं वात री यूं साख नी आपें भरो

जीत्यो जुवै में राज देवण री न कोयी कायदो
कांदा तणां यूं छूंतका के छोलणै सूं फायदो
स्यांणां, सुलखणां आप बीती बात पर मत तांण दयो
अब आज-री सोचो अठै झीभट पुराणो जांण दयो

म्हैं आप नै आयौ बुलावण नै, म्हैनै थे साथ दयौ
म्हारी बिगड़ती वात में अब आप आडो हाथ दयौ
माधव मुळकता सा क'यौ–'थे हा सगा म्हांरा वड़ा
अे लोग भाई-बंध है वडकी भुवा रा डावड़ा

यूं एक नै अब साथ देणो भोत करड़ो काम है
दोनूं धड़ां विच सिधसिरी में म्हारलो श्री नांम है
ओ सूं अवार सहायता रा कर दिया दो भाग है
ले'ल्यो मतै जिण मांय जी री वयूं घणो अनुराग है

नारायणी सेना समूची एक कांनी जा लड़ै
म्हैं एक लो हथियार बिन हूं आर दूजै पालड़ै
अर्जुन मिल्यौ आगै म्हैनै, है आप सूं छोटो घणौं
जो'सूं उचित है आज पैली-पोल ओं री मांगणौ"

अर्जुन सुयोधन साथ श्री बोल्या वठै दोनूं जणां
"माधव म्हनै, नारायणी सेना म्हनै देवो तणां"
हंस कर क'यौ केशव-"मतै जंजाळ सैं जीरा हटचा
यूं दोनुवां रीं मांग न्यारी होण सूं संकट कटचा

अब ठीक है, नारायणी सेना सुयोधन पायसी
अर्जुन निहत्थै एक लै श्री त्रिसण नै ले ज्यायसी"
राजी सुयोधन होय धनकारो जनार्दन नै दियो
बलराम जी रै म्हैल कांनी बोल-बाल्यौ चल दियो

जाकर क'यौ-"गुरुदेव अब तो राड़ निसचै होयसी
पण आपरो महयोग म्हांरा कष्ट-संकट खोयसी
नारायणी सेना सकळ श्रीकिसन म्हांनै दी अठै
अब चालकर मेनापती रो पद सम्हाळो थे वठै

थांरी अनुग्रह तो सदा इण चरण-सेवक पर र'यो
थांरी दया सूं श्री बरोबर पद बडो पातो गयो
बेडो हमीणो पार करणो आप रै श्री हाथ है
श्रीकिसणचंदर तो सदा सूं पांडवां रै साथ है"

बलराम बोल्या-"थांरलो संकट न म्है खोणै सकूं
श्रीकिसन सूं न विरूद्ध सुपनै भी कदै होणै सकूं
परभात श्री परभात में पूरण हुयो थांरी क'यो
नारायणी सेना मिली अब और के बाकी र'यो

यूं भाइयां मे जुद्ध हो मेरे न मन भावै कदै
लड-लड़ मरै सं सूरमां मेरो न चित चावै कदै
म्हांरे मनां दोनूं धड़ां रो एक सो श्री लाड हैं
श्री नै पड़ां वूवो हृदयो श्री नै पड़ां तो खाड है

आपसपरी री राड में पसुता तणो परभाव है
बे-बात मरणो-मारणो होवै जिनावर-भाव है
सोचण-समझणे री मती मिनखां दयी भगवांन हैं
पण कांम वो सूं ले नहीं ओ मिनख रो अभिमांन है

की लोभ-लालच सूं जिनावर जे लडै चाये लड़ी
पण थे मिनख मतिमांन हो आपै कुवै में क्यूं पड़ो
हो मिनख थे जे देवता नी वण सको, तो मत वणो
पण दानवां री भात गरब-गुमान सूं तो मत तणो

भगवांन दी जो बुद्धि है वी सूं समझणो चायजे
नाचीज पद रै लोभ में यूं नी उळझणो चायजे'
चिरणख्यो सुयोधन-"स्वार्थ रै वस होय सो व्योहार है
जग मांय जीयाजूण री यो एक ई आधार है"

बलराम बोल्या-"पण मिनख तो ज्यानवर सूं क्रूर है
देर्घ-गुणे क्यूं भी न जद स्वारथ नसां में चूर है
भूखो वघेरो दूसरे की जीव न खा ज्याय है
पण भूख रो मार'यो वघेरे नें फदे नी खाय हैं

पण मिनख तो सूं लोभ रो मारयो मिनख नें मार दे
दो एक नी लाखूं करोड़ूं मोत-घाट उतार दे
थे राज-पद रै लोभ में छळ कुटिलता सूं कांम ल्यो
निज भाइयां सूं प्रेम मेळ-मिलाप रो नी नांम ल्यो

पण जुद्ध इसड़ी लाय है जिण मे पड़्यां सो क्यूं बळै
स्रो टाळणो स्रो चायजे कोयी तरां सूं जे टळै"
टोक्यो सुयोधन-"छत्रिया रो रण सुभाविक कर्म है
रण मांय लड़ कर जूझणो पै'लो इणां रो धर्म है"

बलराम बोल्या-"बात रो समझ्यो नहीं थे मरम है
कारण विना लड़णो परस्पर कुण बतावै धरम है
छत्री मरद री स्यांन है संग्राम में जूझे लड़ै
पण देस पर, के धर्म पर स्रापत्ति जद क्यूं स्रापड़ै

स्रापन्न री रिछ्या करण रो छत्रियां रो कांम है
पण विरथ लड़कर मरण में निकळै न की रो नांम है
पीडित प्रजा रै हित लड़ो तो भी कदाचित ठीक है
घर-कळह सूं कुळनास करणो धरम रै न नजीक है

जद एक दूजां मार धक्को बढ सकै स्रापै नही
तो एक दूजां नै मतै क्यूं खाय कर धापै नही
थे एक दूजां रै सुखां सूं दूबळा क्यूं होर'या
क्यूं एक दूजां रै घरां मे स्राप कांटा बोर'या

करतव्य छत्री री हुवै नृपनीत नै धारण करै
अन्याय, अत्याचार, पाप-विचार रो वारण करै
करतव्य पर श्री मर-मिटण री छत्रियां री आंन है
निज धर्म पर बलिदांन होणं में उणां रो स्यान है"

अखनाथ दुर्योधन क'यो" उपदेश म्है मानूं नही
के धरम है, के पाप है म्हां सूं तनिक छानूं नही
पाणो नही, है रगत जो म्हारो रगां में ऊफणै
विधना विगाड़ी बात आ न किणी तरां सूं अब बणै"

बलराम बोल्या-"फेर तो औ बात सगळी व्यर्थ है
कुळनास होसी आप श्री रूकणं सकैं न अनर्थ है
पण म्हैं न कीं री साथ दयूं रण-भोम में जावूं नही
कुळ-नास हाती सामनै म्है देखणं पावूं नही

पण बोल-बाल्यो बैठणं भी नीं सकूं म्है अब अठै
सै तीरथां में हांडस्यूं यूं सांति जै पावूं कठै"
अब चल दियो चुपचाप दुर्योधन मतै अणखावतो
केशव अठीनै बचन अर्जुन नै क'यो मनभावतो

"अर्जुन, जगत व्योहार मे थें हो सफाग्री बावळा
क्यूं हा निहत्था, एकला री मांग में थे तावळा
नारायणी सेना अठै थांनै मतै मिल ज्यावती
जो बैरिया री फौज में भाजड़ तुरंत मंचावती

म्हैं एकलो रणभोम में के काम थांरै आयस्यूं
जद परण मेंरो है क सस्तर रै न हाथ लगायस्यूं"
बोल्यो धनंजय जोड़ कर-"घनस्यांम, भरमावूं नहीं
थांरै सिवा जग मांयं कोयी चीज म्हैं चावूं नही

दरकार थांरों एकलां री है म्हने समार में
थांरै विना वेड़ो हमीणो डूबज्या मझधार में.
थे आप म्हांरै विपद में आया मतै आडा सदा
थांरै विना के दूर होवै आपडी जो आपदा.

नारायणी सेना तणो म्हांरै न चित में चाव है
कर आप रै सस्तर दिखावण रो न मन में भाव है
थांरी दया रै पांण लड़णै मे न म्हैं असमर्थ हूं
थांरै बिना पण एक पग भी धरण में न समर्थ हू

थे हो असरणां रा सरण थे ही अनाथां नाथ हो
अन्याय रा थे हो विरोधी न्याय रै थे साथ हो
थे सज्जनां रा हो रुखाळा दुर्जनां रा काळ हो
असहाय पिरजां री करो थे प्रेम सूं प्रितपाळ हो

यूं सोच आयो आपरो म्है सरण हूं अनुरक्ति सूं
अरदास चरणां मे करूं म्है सतत सरधा-भक्ति सू
इण दास पर राखो सदा मन मे घणो अनुराग थे
रण में सम्हाळो तात, रथ रै घोड़ला री बाग थे"

यूं बोलतो अर्जुन जनार्दन रै पगां में जा पड्यो
गोविंद आप गळै लगायो प्रेम सूं कर कर खड्यो
बोल्या-"धनंजय, भायलां मै दीनता री बात के
इण भाव सूं मेरे हियै लागै नही आघात के

म्है प्रिय जणां री चाकरी मे कांम क्यूं भी कर सकूं
है ध्येय मेरो एक ही विपदा उणां री हर सकूं
म्हैं भगत जण री बात कोयी भी कदै टाळूं नही
उण रै वचन रै सांमनै अपणो परण पाळूं नही

रणभोम रथ नै हांकणो के होय खोटो कांम है
होणं सके इण सूं कदै मेरो न छोटो नांम है
म्हैं वाग-डोर सम्हाळ स्यूं रथ री मतै संग्राम मे
वाळा-पणं सूं म्री घणेरो चाव है इण कांम में"

अर्जुन कयो-"अब आप रै सिर भार सगळै कांम रो
मेदान धर्मक्षेत्र में निसचै हुयो संग्रांम रो
सेना घणो ले ले वठे, भेळा हुया सै वीर है
नेड़ै मुरसती सरित रुप दृपद्वती रो तीर है

दोनूं धड़ा रा दोय कांनी अणगिणत तंबू तण्या
सै सूर वीरां रा अणूंतो स्यांन रा डेरा बण्या"
गोविद वोल्या-"तो न म्रोर विलंम करणो चायजे
अब चालकर म्रीं जुद्ध रो परबंध करणो चायजे

राजा युधिष्ठिर आप वाट उडोकता होग। वठे
आपां विना म्री बात रै बिरथा समै खोवां अठै"
श्रीक्रिसण रै आदेस सूं रथ ल्याइयो दारुक तणां
चढ भोर होया तुरत धरम-क्षेत्र नै दोनूं जणां

—*—*—